12. दकारान्तः त्रिषुलिङ्गेषु सरूपः अस्मद् शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| अहम् | आवाम् | वयम् | प्रथमाविभक्तिः |
| माम्/मा | आवाम्/नौ | अस्मान्/नः | द्वितीयाविभक्तिः |
| मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः | तृतीयाविभक्तिः |
| मह्यम्/मे | आवाभ्याम्/नौ | अस्मभ्यम्/नः | चतुर्थी विभक्तिः |
| मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् | पञ्चमीविभक्तिः |
| मम/मे | आवयोः/नौ | अस्माकम्/नः | षष्ठीविभक्तिः |
| मयि | आवयोः | अस्मासु | सप्तमीविभक्तिः |

13. दकारान्तः त्रिषुलिङ्गेषु सरूपः युष्मद् शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| त्वम् | युवाम् | यूयम् | प्रथमाविभक्तिः |
| त्वाम्/त्वा | युवाम्/वाम् | युष्मान्/वः | द्वितीयाविभक्तिः |
| त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः | तृतीयाविभक्तिः |
| तुभ्यम्/ते | युवाभ्याम्/वाम् | युष्मभ्यं/वः | चतुर्थीविभक्तिः |
| त्वत् | युवाभ्याम् | युष्मत् | पञ्चमीविभक्तिः |
| तव/ते | युवयोः/वाम् | युष्माकम्/वः | षष्ठीविभक्तिः |
| त्वयि | युवयोः | युष्मासु | सप्तमीविभक्तिः |

✪✪✪

[illegible]

2. सकारान्तः पुंलिङ्गः विद्वस् शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
| --- | --- | --- | --- |
| विद्वान् | विद्वांसौ | विद्वांसः | प्रथमाविभक्तिः |
| विद्वांसम् | विद्वांसौ | विदुषः | द्वितीयाविभक्तिः |
| विदुषा | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| विदुषे | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| विदुषः | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| विदुषः | विदुषोः | विदुषाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| विदुषि | विदुषोः | विद्वत्सु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे विद्वन् | हे विद्वांसौ | हे विद्वांसः | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |

3. सकारान्तः नपुंसकलिङ्गः मनस् शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
| --- | --- | --- | --- |
| मनः | मनसी | मनांसि | प्रथमाविभक्तिः |
| मनः | मनसी | मनांसि | द्वितीयाविभक्तिः |
| मनसा | मनोभ्याम् | मनोभिः | तृतीयाविभक्तिः |
| मनसे | मनोभ्याम् | मनोभ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| मनसः | मनोभ्याम् | मनोभ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| मनसः | मनसोः | मनसाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| मनसि | मनसोः | मनस्सु मनःसु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे मनः | हे मनसी | हे मनांसि | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |

एवं यशः, तपः, पयः, वयः इत्यादयः।

6. तकारान्तः पुंलिङ्गः 'पचत्' शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| पचन् | पचन्तौ | पचन्तः | प्रथमाविभक्तिः |
| पचन्तम् | पचन्तौ | पचतः | द्वितीयाविभक्तिः |
| पचता | पचद्भ्याम् | पचद्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| पचते | पचद्भ्याम् | पचद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| पचतः | पचद्भ्याम् | पचद्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| पचतः | पचतोः | पचताम् | षष्ठीविभक्तिः |
| पचति | पचतोः | पचत्सु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे पचन् | हे पचन्तौ | हे पचन्तः | संबोधन प्रथमाविभक्तिः |

7. नकारान्तः पुंलिङ्गः 'राजन्' शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| राजा | राजानौ | राजानः | प्रथमाविभक्तिः |
| राजानम् | राजानौ | राज्ञः | द्वितीयाविभक्तिः |
| राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः | तृतीयाविभक्तिः |
| राज्ञे | राजभ्याम् | राजभ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| राज्ञः | राजभ्याम् | राजभ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| राज्ञः | राज्ञोः | राज्ञाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| राज्ञि/राजनि | राज्ञोः | राजसु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे राजन् | हे राजानौ | हे राजानः | संबोधनप्रथमाविभक्तिः |

एवं सुत्रामा महिमा इत्यादयः।

8. नकारान्तः पुंलिङ्गः गुणिन् शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| गुणी | गुणिनौ | गुणिनः | प्रथमाविभक्तिः |
| गुणिनम् | गुणिनौ | गुणिनः | द्वितीयाविभक्तिः |
| गुणिना | गुणिभ्याम् | गुणिभिः | तृतीयाविभक्तिः |
| गुणिने | गुणिभ्याम् | गुणिभ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| गुणिनः | गुणिभ्याम् | गुणिभ्यः | पंचमीविभक्तिः |
| गुणिनः | गुणिनोः | गुणिनाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| गुणिनि | गुणिनोः | गुणिषु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे गुणिन् | हे गुणिनौ | हे गुणिनः | संबोधन प्रथमाविभक्तिः |

एवं यशस्वी, करी, स्वामी, धनी इत्यादय।

3. **तकारान्तः पुंलिङ्गः मरुत् शब्दः**

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| मरुत् | मरुतौ | मरुतः | प्रथमाविभक्तिः |
| मरुतम् | मरुतौ | मरुतः | द्वितीयाविभक्तिः |
| मरुता | मरुद्भ्याम् | मरुद्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| मरुते | मरुद्भ्याम् | मरुद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| मरुतः | मरुद्भ्याम् | मरुद्भ्यः | पंञ्चमीविभक्तिः |
| मरुतः | मरुतोः | मरुताम् | षष्ठीविभक्तिः |
| मरुति | मरुतोः | मरुत्सु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे मरुत् | हे मरुतौ | हे मरुतः | संबोधन प्रथमाविभक्तिः |

एवं बिभ्यत् बोभुवन् इत्यादयः।

4. **तकारान्तः पुंलिङ्गः 'भगवत्' शब्दः**

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| भगवान् | भगवन्तौ | भगवन्तः | प्रथमाविभक्तिः |
| भगवन्तम् | भगवन्तौ | भगवतः | द्वितीयाविभक्तिः |
| भगवता | भगवद्भ्याम् | भगवद्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| भगवते | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| भगवतः | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| भगवतः | भगवतोः | भगवताम् | षष्ठीविभक्तिः |
| भगवति | भगवतोः | भगवत्सु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे भगवन् | हे भगवन्तौ | हे भगवन्तः | संबोधनप्रथमाविभक्तिः |

5. **तकारान्तः पुंलिङ्गः 'भवत्' शब्दः**

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| भवान् | भवन्तौ | भवन्तः | प्रथमाविभक्तिः |
| भवन्तम् | भवन्तौ | भवतः | द्वितीयाविभक्तिः |
| भवता | भवद्भ्याम् | भवद्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| भवते | भवद्भ्याम् | भवद्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| भवतः | भवद्भ्याम् | भवद्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| भवतः | भवतोः | भवताम् | षष्ठीविभक्तिः |
| भवति | भवतोः | भवत्सु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे भवन् | हे भवन्तौ | हे भवन्तः | सम्बोधनप्रथमाविभक्तिः |

# हलन्तशब्दाः

## 7. व्याकरणविभागः

1. चकारान्तः पुंलिङ्गः 'जलमुच्' शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| जलमुक् | जलमुचौ | जलमुचः | प्रथमाविभक्तिः |
| जलमुचम् | जलमुचौ | जलमुचः | द्वितीयाविभक्तिः |
| जलमुचा | जलमुग्भ्याम् | जलमुग्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| जलमुचे | जलमुग्भ्याम् | जलमुग्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| जलमुचः | जलमुग्भ्याम् | जलमुग्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| जलमुचः | जलमुचोः | जलमुचाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| जलमुचि | जलमुचोः | जलमुक्षु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे जलमुक् | हे जलमुचौ | हे जलमुचः | संबोधन प्रथमाविभक्तिः |

2. चकारान्तः स्त्रीलिङ्गः 'वाच्' शब्दः

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|---|---|---|---|
| वाक् | वाचौ | वाचः | प्रथमाविभक्तिः |
| वाचम् | वाचौ | वाचः | द्वितीयाविभक्तिः |
| वाचा | वाग्भ्याम् | वाग्भिः | तृतीयाविभक्तिः |
| वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | चतुर्थीविभक्तिः |
| वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | पञ्चमीविभक्तिः |
| वाचः | वाचोः | वाचाम् | षष्ठीविभक्तिः |
| वाचि | वाचोः | वाक्षु | सप्तमीविभक्तिः |
| हे वाक् | हे वाचौ | हे वाचः | संबोधनप्रथमाविभक्तिः |

एवं त्वक् इत्यादयः।

ఈ కావ్యంలోని రాజకుమారులందరి కథ మనోహరంగా ఉన్నది. ముఖ్యంగా అపహారవర్మ కథ. మిత్రగుప్తుని కథ ఆనందింపజేసే విధంగా ఉన్నాయి. మిత్రగుప్తుని కథలో కోళ్ళ పోరు, సముద్ర యానం, నౌకాయుద్ధం మొ॥ వర్ణనలు మనోహరమైనవి.

(దండి తన కథను తనకున్న పంటిబాధతో ప వర్గ అక్షరాలు లేకుండా రచించాడు. భాషా నైపుణ్యాన్ని చాటడానికి ఇది చక్కటి నిదర్శనం). దశకుమార చరితములోని మంగళాచరణ శ్లోకంలో 8 దండ శబ్దాలను ప్రయోగించి నందువలన ఆయనకు దండి అనే పేరు వచ్చిందని కొందరంటారు.

**ब्रह्माण्डछत्र दण्डः, शतधृतिभवनाम्भोरुहो नालदण्डः**
**क्षोणी नौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टि काकेतुदण्डः।**
**ज्योतिश्चक्राक्षदण्डः त्रिभुवनविजयस्स्तम्भदण्डोघ्रिदण्डः।**
**श्रेयस्त्रैविक्रमस्ते वितरतु विबुधद्वेषिणां कालदण्डः**

दण्डिनः पदलालित्यम् అనే మాట దశకుమారచరితంలో స్పష్టంగా కనిపిస్తుంది. అవంతిసుందరి కథలో కూడా ఉన్నది. దండి మూడవ గ్రంథం కావ్యాదర్శ. ఇది అలంకార శాస్త్ర గ్రంథం. పూర్వ రాజుల కీర్తిని ఆదర్శంగా చేసుకొని మహాకవులు రాసిన కావ్యాలు రాజులు, కవులు పోయినా (చచ్చినా) నశించిపోకుండా శాశ్వతంగా ఉన్నాయి. అని చెప్పి

**आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयम्।**
**तेषामसन्निधानेऽपि न स्वयं पश्य नश्यति॥**

పూర్వకవుల చరిత్ర ఆదర్శంగా తీసుకొని వాఙ్మయాన్ని పెంచాలని దండి సందేశం ఇస్తాడు.

పూర్వ శాస్త్రాలను అనుసరించి భరతుడు,శిలాలి మొ॥న వారి అభిప్రాయాలను దండి వివరించారు. భారతం, రామాయణం, బృహత్ కథా, సేతుబంధం మొదలైన కావ్యాల్లోని ప్రయోగాలను అనుసరించి కావ్యాదర్శను రచించాడు. శ్రవ్యకావ్యాల యొక్క అన్ని లక్షణాలు కావ్యాదర్శలో ఉన్నాయి. చక్కటి అర్థంతో కూడిన పదాల సముదాయం కావ్యమని దండి వర్ణించాడు. కావ్యాదర్శలో మూడు పరిచ్ఛేదాలు 662 శ్లోకాలు ఉన్నాయి. ఇందులో ఇచ్చిన ఉదాహరణలు అన్నీ స్వయంగా రచించినవే. ''दण्डिनः पदलालित्यम्'' అనే మాట ఇక్కడ స్పష్టంగా కనిపిస్తుంది. గుణ సంప్రదాయాన్ని దండి ప్రారంభించారు. కావ్యంలో గుణాలే ముఖ్యమని దండి అభిప్రాయం. గౌడీ, వైదర్భీ అనే రెండు మార్గాలను దండి చూపించాడు. తరువాత ఉన్న వామనుడు మొదలైనవారు ఈ మార్గాలనే రీతి అనే మాటతో గుర్తించారు. ఈ మార్గమే కావ్యాత్మా అని వామనుడు అంగీకరించాడు. 'रीतिरात्मा काव्यस्य'' అని సూత్రీకరించాడు. భరతుడు ఉపమాలంకారంలో 5 భేదాలు చేస్తే దండి 34 భేదాలు చెప్పాడు. కావ్యంలో చిన్న దోషం కూడా ఉండకూడదని దండి సూచించాడు.

✪✪✪

etry) is Dandi's third poetic work. It was a treatise on rhetoric. "Even after the kings and the poets passed away, the epics written the great poets based on the fame of the ancient kings are not damaged and they are eternal." says Dandi.

**आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयम्।**
**तेषामसन्निधानेऽपि न स्वयं पश्य नश्यति।।**

He gives message that one must improve the literature taking the poets' history as an example.

Following the ancient scriptures, Dandi explained the opinions of Bharata, Silali and the like. He wrote Kavyadarsa following the experiments in the epics the Mahabharata, the Ramayana, Brihat Katha and Sethubandham, etc.

Kavyadarsa has all the properties of Sravyakavyas (Sravyakavya : a literary work the recitation of which is fit to be listened). Dandi says that an epic is a composition of word group which has nice meaning.

There are three sections and 662 verses in Kavyadarsa. All the examples given in this were written on his own. The usage "'दण्डिनः पदलालित्यम्'' is evidently seen here. Dandi started the tradition of Guna. Dandi is of the opinion that the characteristics alone are essential in an epic. Dandi showed two ways namely Gowdee and Vaidarbhee. The poets like Vamana who succeeded him identified these ways with the word of reeti. Vamana agreed that this very way was kavyadarsa. He formulated that 'रीतिरात्मा काव्यस्य''. Bharata explained about 5 differences in Simile a figure of speech) whereas Dandi described 34 differences. Dandi suggested that there should not even be a minor error in an epic.

**దండి :** దండి ప్రసిద్ధుడైన సంస్కృత కవి. కాంచీపురం ఈయన నివాస స్థానం. తండ్రి వీరదత్తుడు. తల్లి గౌరీ దేవి. భారవి ఈయన ముత్తాత (తండ్రికి తాత). పల్లవ నరసింహవర్మ ఆస్థానంలో దండి ఉండేవాడు. కావ్యాదర్శ, దశ కుమార చరితం, అవంతి సుందరీ కథ అనే మూడు గ్రంథాలు దండి రచించాడు. కొంతమంది అవంతిసుందరి కథ, కావ్యాదర్శ, ఛందోవిచితి అనే మూడు రచించారంటారు. ఛందోవిచితికే ద్విసంధాన కావ్యమని పేరు. క్రీ.శ. 7వ శతాబ్దం మధ్యభాగంలో గానీ చివరిలోగానీ దండి ఉండవచ్చును.

దశకుమార చరిత్రలో 10 మంది స్నేహితుల కథ వర్ణించబడినది. మగధ దేశ రాజైన రాజహంసుడు రాజ్య భ్రష్టుడైనాడు. ఆ సమయంలో వింధ్యా పర్వతపు అడవుల్లో రాజవాహనుడు జన్మించాడు. రాజవాహనుడు తన 9 మంది స్నేహితులతో కలసి జైత్రయాత్రకు బయలుదేరాడు. ఒక బ్రాహ్మణుని కోరికను అనుసరించి ఒంటరిగా రహస్యంగా పాతాళానికి వెళ్ళాడు. 1. పుష్పోద్భవుడు, 2. సోమదత్తుడు, 3. అపహార వర్మ, 4. ఉపహార వర్మ, 5. అర్థపాలుడు 6. ప్రమతి, 7. మిత్ర గుప్తుడు, 8. మంత్రగుప్తుడు 9. విశ్రుతుడు అనే 9 మంది స్నేహితులు అతడిని వెతుకుతూ ఉజ్జయినీలో తిరిగి కలుసుకున్నారు. అప్పుడు వారి వారి కథలు వారు చెప్పినట్లే అక్కడ వివరించబడినవి.

ఈ కావ్యంలో పూర్వపీఠిక, దశకుమార చరితం, ఉత్తర పీఠిక అనే మూడు భాగాలు ఉన్నాయి. పూర్వపీఠికలో ఉపోద్ఘాతము పుష్పోద్భవ, సోమదత్తుల కథ. అవంతిసుందరి కథలో కొంత భాగం వర్ణించబడ్డాయి. మిగిలిన రాజకుమారుల కథ కూడా ఈ సందర్భంలోనే వివరించబడింది. దశకుమార చరిత్ర ఇప్పటి కథా రచయితలకు మార్గదర్శకమౌతుంది.

# 8. दण्डि:

Dandi is a famous poet. His native place was Kanchipuram. His father was Veeradatta and mother Gowridevi. Bharavi was his great grandfather (grandfather of his father). Dandi belonged to the court of Pallava Narasimha Varma. Dandi authored three books namely Kavyadarsa (Mirror of Poetry), Dasakumara Charitam and Avanti Sundari Katha. Some people say that he wrote three books namely Avanti Sundari Katha, Kavyadarsa and Chhandovichiti. Chhandovichiti is otherwise called Dwisandhana Kavya. It is said that he lived in the middle of the 7th century A.D or end of that century.

The story of ten friends is described in Dasakumara Charitam. Defeated in a war by the rival king Manasara of Malwa, the king of Magadha kingdom Rajahamsa was dethroned. At that time, Rajavahana was born in the forests of the Vindhya mountains. Rajavahana set out on the tour of world conquest (Jaitrayatra) accompanied by his nine friends. He came across a brahmin and went alone to Patala (the nether world) as per his wish. His 9 friends namely Pushpodbhava, Somadatta, Apahara Varma, Upahara Varma, Ardhapala, Pramati, Mitragupta, Mantragupta and visruta went in search of him and met again Ujjain. Each of their stories is described just the same as they narrated.

There are 3 parts - Prologue, Dasakumara Charitam and Epilogue in this epic. In the prologue, introduction, the story of Pushpodbhava and Somadatta and some part of Avanti Sundari Story are described. The story of other princes is also described in this context alone. Dasakumara Charitam will be a pioneer to the present story writers.

The story of all the princes in this epic is interesting and enchanting. Mainly the story of Apahara Varma and the story of Mitragupta are amusing. The descriptions of the fight of cocks, sea voyage, battle of fleet etc are enthralling in the story of Mitragupta.

(Dandi suffered from toothache so he wrote the story without using the letters of 'प' family. It is quite a wise proof for his linguistic expertise.) As he used 8 'danda' words in mangalacharana slokas (verses sung, especially of joy uttering good wishes) of Dasakumara Charitam, he was named after 'Dandi', say some scholars.

**ब्रह्माण्डछत्र दण्डः, शतधृतिभवनाम्भोरुहो नालदण्डः**
**क्षोणी नौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टि काकेतुदण्डः।**
**ज्योतिश्चक्राक्षदण्डः त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डोऽङ्घ्रिदण्डः।**
**श्रेयस्त्रैविक्रमस्ते वितरतु विबुधद्वेषिणां कालदण्डः**

The usage of दण्डिनः पदलालित्यम् (beautiful wording of Dandi) is apparently seen in Dasakumara Charitam. It is also seen in Avanti Sundari Story, Kavyadarsa (Mirror of Po-

4. Sivabhujanga Prayata Stotram - Bhujanga Prayata is a prosody. Each line has 4 ya ganas. It is an epic in which the Lord Siva is eulogised in that prosody.

5. Soundarya Lahari - A stotra which has the characteristics of a paramount epic. The goddess Tripura Sundari is eulogised in this.

There are numerous stotras available by the name of Sankaracharya. Those are great and excellent epics. Of them, Soundarya Lahari written by Adisankaracharya is most significant. Sankaracharya authored many treatises on the subject of philosophy (darshana sastra). The commentary for the Brahmasutras written by the sage Vyasa became popular as Sankaradarshana. Likewise, following the doctrine of Advaita Vedanta propounded by himself, Sankaracharya wrote commentaries to the Bhagavadgita and Upanishads.

**[illegible]** [illegible]

[illegible]

1. ఆనందలహరి - పార్వతీదేవి స్తోత్రం చేసే 20 శ్లోకాల కావ్యం.
2. దక్షిణామూర్తి స్తోత్రము - వేదాంత శాస్త్రాన్ని వివరించే 11 శ్లోకాల స్తోత్రము.
3. చర్పటపంజరి - వైరాగ్యం యొక్క ఆవశ్యకతను తెలియజేసే ప్రసిద్ధ స్తోత్రము.
4. శివభుజంగ ప్రయాత స్తోత్రము - భుజంగ ప్రయాతమనేది ఒక ఛందస్సు ప్రతి పాదంలోనూ నాలుగు యగణాలుంటాయి. ఆ ఛందస్సులో వ్రాయబడిన శివస్తుతి.
5. సౌందర్య లహరి - త్రిపుర సుందరీ దేవిని స్తుతించే సర్వోత్తమ కావ్య లక్షణాలు కలిగిన స్తోత్రము.

[illegible]

...ప్రథమాంకంలోని 'చిత్రపటప్రదర్శనం' ద్వారా పూర్వస్మృతులు, రసవద్ఘటనలు చక్కగా ప్రదర్శించబడినాయి. అక్కడి చిత్రాన్ని ...సీతారామలక్ష్మణులే గాక రసైక హృదయులైన సహృదయులు కూడా వీక్షించగల్గుతారు. మహాకవి కాళిదాసు "అభిజ్ఞాన ...శాకుంతలం" గా భవభూతి "ఉత్తర రామచరితం" రమణీయతలో మిగిలిన వాటిని అధిగమిస్తుంది. కాబట్టి ఉత్తర రామచరితం ...భవభూతి విశిష్టతను పొందాడు అనే ఈ అభియుక్తి తగినదై ఉంది -

'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' భవభూతి కవితాశిల్పం అనితరసాధ్యమై నిలిచింది. కవితకు ప్రాణమైన తత్త్వం ...పోషణ ద్వారానే సిద్ధిస్తుందని గుర్తించిన భవభూతి ప్రతిభ అనన్యసామాన్యమైంది. లోకోత్తర పాత్రచిత్రణలో, కథానిర్వాహణలో ...సమర్థుడు భవభూతి. కరుణరసాన్ని ఇతడు బాగా ఆదరించాడు.

''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्''

...రాయి అయినా రోదిస్తుంది. వజ్రహృదయమైనా కరుగుతుంద'ని కరుణరస గొప్పదనాన్ని వర్ణించిన కవిపుంగవుడు ...భవభూతి. కరుణ ఒక్కటే రసమని ''एकोरसः करुण एव'' అని కరుణరస ప్రాధాన్యాన్ని చాటి చెప్పాడు.

''नाटकेषूत्तरं रामचरितं रम्यतास्पदम्।
तत्रापि च तृतीयाङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्''

...నాటకాల్లో ఉత్తరరామచరితం రమ్యమైంది. ఆ నాటకంలోని మూడవ అంకం, అందులో కూడ నాలుగు శ్లోకాలు ...మణీయాలు - అని విమర్శకులు భవభూతి నాటక నిర్మాణ కౌశలాన్ని మిక్కిలి ప్రశంసించారు.

## 7.शङ्कराचार्यः

Sankara Bhagavatpadacharya was born in Nambudri brahmana clan. He was born at a ...ge named Kaladi in Kerala. The scholars opine that Sankaracharya's period was the ...part of 7th century A.D. Through the knowledge of his pre-birth, he was attracted to ...ticism in his very childhood and adapted the life a monk. He dedicated his life to revive ...Vedic religion, roamed about the Aryavastam and propagated the Vedic religion and the ...rine of Advaita Vedanta. (It is mentioned in myths that the place extending north to the ...hya mountain ranges and South to the Himalayas - at present from Bangladesh to Paki... is said to be Aryavarta, i.e. the land of Aryans)

The Siva stotras, the Vishnu Stotras, the Ganapati Stotras, the Sakthi Stotras and the ...neya Stotras which came out from Sankaracharya's mesmerising poetic flow are nu...ous. Even though there are innumerable popular stotras by the name of Sankaracharya, ...not true to say that those were all written by Sankaracharya. But there is no need to ...bt to say that the stotras written by Sankaracharya are the embellishments like the ...len pots to the mansion of literature. The following stotras (poetic works) can be said to ...written by Adisankaracharya.

1. **Ananda Lahari** - An epic consisting of verses in which the God-dess Parvati Devi is eulogised
2. **Dakshina Murthy Stotra** - A stotra that describes the Vedanta in 11 verses
3. **Charpata Manjari** - A famous stotra that enlightens the need of asceticism

"नाटकेषूत्तरं रामचरितं रम्यतास्पदम्।
तत्रापि च तृतीयाङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्"

Critics extolled Bhavabhuti's proficiency in composing plays as follows : Uttara Rama Charitam is the best among the plays. The third act of that play, that too four verses in that act are quite amazing.

**భవభూతి :** "కావ్యేషు నాటకం రమ్యమ్" - కావ్యాల్లో నాటకం రమ్యమైందని లాక్షణిక శిరోమణులు పేర్కొనటంతో దృశ్య శ్రవ్య నాటకమంటే రూపకానికి పర్యాయపదంగా స్వీకరించబడింది. సంస్కృత వాఙ్మయమందలి ఉత్తమ రూపకకర్తల్లో మహాకవి కాళిదాసు తర్వాత భవభూతియే లెక్కింపదగినవాడు. సంస్కృతరూపక వాఙ్మయంలో ముగ్గురు రూపకకర్తలు స్వీయనాటకాలతో సంస్కృత సరస్వతిని సమర్చించారు. వారిలో మొదటివాడు కవికులగురువైన కాళిదాసు, రెండవవాడు భవభూతి, మూడవ వాడు శ్రీహర్షదేవుడు లేక శ్రీహర్షవర్ధనుడు.

సంస్కృతరూపక విమర్శకుల మతానుసారం భవభూతి క్రీ.శ. 8వ శతాబ్దికి చెందినవాడు. విదర్భ దేశమందలి పద్మపురంలో చాలాకాలం నివసించాడు. ఇతని తల్లిదండ్రులు జాతుకర్ణి - నీలకంఠులు, గురువు జ్ఞాననిధి. ఇతడు తనను శ్రీకంఠపదలాంఛనునిగా పరిచయం చేసుకున్నాడు.

कविवाक्पति राजश्री भवभूत्यादि सेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।

అనే 'రాజతరంగిణి' యందలి కల్హణుని నిర్దేశానుసారం భవభూతి కాన్యకుబ్జేశ్వరుడైన యశోవర్మ ఆస్థానంలో ఉండేవాడని తెలుస్తుంది. పదవాక్యప్రమాణజ్ఞుడైన భవభూతి సరస్వతి బ్రహ్మదేవునికెలా వశ్యురాలో అలా తనకు కూడా వశ్యురాలేనని తనను పరిణత ప్రజ్ఞునిగా, శబ్దబ్రహ్మవిదునిగా పేర్కొన్నాడు.

భవభూతి శ్రీమద్రామాయణకథనాశ్రయించి 'మహావీరచరితం', 'ఉత్తరరామచరితం' అనే రెండు నాటకాల్ని, కల్పిత కథతో 'మాలతీమాధవం' అనే ప్రకరణాన్ని రచించాడు.

**(महावीरचरितम्) మహావీరచరితం :** ఈ నాటకంలో ఏడు అంకాలున్నాయి. శ్రీమద్రామాయణ కథయందు మిక్కిలి ప్రీతి, ఆదికవి వాల్మీకి మహర్షి యందు గొప్ప ఆదరభావం భవభూతికి ఉన్నాయని ఈ నాటక పరిశీలన వలన తెలుస్తుంది. ఈ నాటకంలో శ్రీరాముడు ఒక ఆదర్శమానవ మహావీరునిగా చిత్రించబడ్డాడు. కాబట్టే ఈ నాటకం "మహావీరచరితం" గా సార్థకమైంది. ఈ విధంగా రామాయణంలోని మొదటి భాగాన్ని స్వీకరించి ఈ నాటకాన్ని నిర్మించాడు. ఇందులో వీర రసం ప్రధాన రసంగా పరిపోషింపబడింది.

**మాలతీమాధవం :** కల్పిత ఇతివృత్తాంతాన్ని ఆధారంగా చేసుకొని రచించబడిన ప్రకరణమనే రూపకభేదం మాలతీమాధవం. ఇందులో పది అంకాలు ఉన్నాయి. పేరుకు తగ్గట్టుగానే నాయికానాయకులైన మాలతీ - మాధవుల సుమధుర ప్రణయవృత్తాంతం ఇందు వర్ణింపబడింది. పద్మావతీ పురానికి మంత్రియైన భూరివసువు కుమార్తె మాలతి మదనోత్సవంలో నాయకుడైన మాధవుని చూసి, ప్రేమలో పడుతుంది. ఈ ప్రకరణంలో శృంగారం ప్రధాన (అంగి) రసం.

**ఉత్తర రామచరితం :** శ్రీమద్రామాయణమందలి ఉత్తరార్ధ కథాభాగాన్ని స్వీకరించి ఏడు అంకాల్లో 'ఉత్తర రామచరితం' అనే మనోజ్ఞనాటకాన్ని భవభూతి రచించాడు. శ్రీరాముని పట్టాభిషేకానంతరం సీతాసమాగమనం వరకు గల కథాభాగం ఇందు వర్ణింపబడింది.

According to Kalhana, the author of 'Rajatarangin', Bhavabhuti was a court poet of the king Yashovarman of Kannauj. Bhavabhuti, considered to be an expert in using words and sentences, stated himself that the Goddess Saraswati is submissive not only to the Lord Brahma but also to him. He also stated himself that he was a perfect genius and master of literary style.

Bhavabhuti wrote two dramas namely 'Mahavira Charita', 'Uttara Ramacharitam' and a drama called 'Malati Madhavam' with a fictional story.

Mahavira Charitam (Exploits of the Great Hero) : There are 7 acts in this play. It is evident from the observation of this play that Bhavabhuti had great love for the story of Srimadramayana and deep reverence for the first poet Valmiki. In this play, Sri Rama is portrayed as an ideal super hero. It is therefore this play became famous by the name 'Mahavira Charitam'. In this way he composed this play taking the first part of the Ramayana. The emotion of heroism (veera rasa) is adapted as the essential emotion in this.

**Malati Madhavam (Malati and Madhava) :** The play 'Malati Madhavam' is written based on a fictional theme. It consists of 10 acts. As the name suggests, it is an awesome love story of Malati, the heroine and Madhava, the hero. Malati is the daughter of Bhurivasuvu who is a minister to the king of Padmavatipura. She falls in with Madhava during Madanotsav. Romance is the main emotion in this play.

**Uttara Rama Charitam (The Later story of Rama) :** Bhavabhuti wrote a beautiful play Uttara Rama Charitam in seven acts adapting the latter half story part of the Srimadramayana. It depicts the later life of Sri Rama from his coronation and the abandonment of Sita to the reunion with his wife Sita.

In the first act, the past reminiscences and impressive incidents are well narrated through the account of Chitrapata. Not only Sita and Rama but also the passionate people can behold the striking visuals of that place. Like the great poet Kalidasa's 'Abhignana Sakuntalam', Bhavabhuti's Uttara Rama Charitam' excels all others with its fascinating features. It is therefore the claim that Bhavabhuti gained prominence through Uttara Rama Charitam is quite apt.

**'उत्तरे रामचरिते भवभूतिविशिष्यत'** Bhavabhuti's poetic beauty is impossible to others. His genius which identified that philosophy, i.e. the life of poetry is attained only through the masterly presentation of rasa (emotion) is matchless. Bhavabhuti is very adept in creating world renowned characters and story presentation. He adapted mainly the emotion of sorrow (Karuna rasa).

**''अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्''**

The outstanding poet Bhavabhuti describes the greatness of Karuna rasa as follows : 'Even the stone mourns and the diamond - like heart melts.' ''एकोरसः करुण एव'' Thus he asserts the importance of Karuna rasa which means that sorrow only is the emotion.

**अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सन्निबन्धना।**
**शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा ॥**

... కాశికావృత్తిన్యాస గ్రంథాలను గూర్చి స్పష్టంగా ఉల్లేఖించబడింది. జయాదిత్యుని కాలం క్రీ.శ. 661 ... నిశ్చయించబడింది. శిశుపాలవధ కావ్యంలో కాశికావృత్తిని ఉల్లేఖించడం వల్ల మాఘుడు వామనజయాదిత్యుల తర్వాతి ... సుస్పష్టం. ఇలాంటి కారణాల వల్ల మాఘుని కాలం క్రీ.శ. 7వ శతాబ్ది చివరి భాగమని ఊహించవచ్చు.

మాఘుని రచన 'శిశుపాలవధ మహాకావ్యం' తప్ప వేరొకటి కన్పించడం లేదు. కాని సూక్తి సంగ్రహాలలో, ... మున్నగు గ్రంథాల్లో కొన్ని శ్లోకాలు మాఘునివిగా కన్పిస్తున్నాయి. దీనిబట్టి మాఘుని ఇతర రచనలేవైనా ఉన్నాయేమో అన్పిస్తుంది. కాని ఇప్పటి వరకు అవేవీ లభ్యం కానందున, ఈ మహాకవి కీర్తిచంద్రికల్ని ఈ భూమిపై ప్రసరింపజేయడానికి మహాకావ్యరత్నమొక్కటే నిలిచి ఉంది. మిగిలినవేవీ లేవని భావిస్తున్నారు.

మాఘకవిచే రచించబడిన ఈ మహాకావ్యం 'మాఘం' అని అతని పేరుతో కూడ ప్రసిద్ధి చెందింది. ఈ కావ్యమందలి ... మిక్కిలి ప్రౌఢమైంది. వర్ణన అలంకారపూర్ణమై భావ గాంభీర్యంతో కూడినది. ఇది 20 సర్గలతోను, 650 శ్లోకాలతో ... ఈ కథావస్తువు మహాభారతం నుండి స్వీకరించబడింది. ఈ కావ్యంలో కవి ఉత్ప్రేక్షాపాటవం, అనుప్రాసోల్లాసం, సంగీత - ... - వ్యాకరణాలంకార - రాజనీతి మొదలైన శాస్త్రాల నైపుణ్యం ప్రతి పదమందు స్ఫుటంగా వ్యక్తమవుతుంది. ఈ కవి ప్రశంస ... సుప్రసిద్ధమైన ఈ ఆదకం తప్పక స్మరించదగింది.

**उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।**
**दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः ॥**

కాళిదాసు ఉపమాలంకారానికి, భారవి అర్థగౌరవానికి, దండి పదలాలిత్యానికి సుప్రసిద్ధులు. మాఘకావ్యంలో ఈ మూడు లక్షణాలు ఉన్నాయి.

ఈ ప్రశస్తి ప్రశంసకుల అతిశయోక్తిని వ్యక్తీకరించినా, మాఘకవి సంస్కృతవాఙ్మయ మహోదధిలో అత్యంత ప్రకాశవంతమైన రత్నం అని సూచిస్తుంది.

## 6. भवभूतिः

**"काव्येषु नाटकम् रम्यम्"** the topmost grammarians say in unison that drama is entrancing in epics. Here drama is adapted as a synonym for metaphor. It is Bhavabhuti who is noted after the legendary poet Kalidasa among the best playwrights of the Sanskrit literature. In the Sanskrit literature, each one of the three playwrights wrote three plays and adorned Sanskrit Saraswati. Of them, the first one was Kalidasa, the greatest of poets, the second one was Bhavabhuti and the third one was Sriharshadeva or Sriharshavardhana.

According to the opinion of the critics of Sanskrit play, Bhavabhuti belonged to the 8th century A.D. He lived in Padmapura situated near Vidarbha for a long time. His parents were Jatukarni and Neelakantha. His teacher was Gnananidhi. He described himself as Srikantha - pada- lanchana. ('Srikantha' was title conferred on him on account of the presence of Sri, the goddess of speech in his throat. The word 'lanchana' in Sanskrit is used to denote a title.)

कविवाक्पति राजश्री भवभूत्यादि सेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्।

...ity was formerly known as academia. Magha also became a charitable person due to the influence of his father. He became penniless because of the unlimited charity.

An inscription belonging to Varmalatadeva, who patronized Supradeva, the grandfather of Magha, was found in the Vasantgarh area. It dates back to 625 AD. So Magha's period was determined to be 7th century A.D. A great source for determining the period of Magha is found from a verse in his poetry.

**अनुत्सूत्रपदन्यासा तद्वृत्तिः सन्निबन्धना।**
**शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा ॥**

Here it was evidently stated about Kashika vrittinyasa treatises. The period of Jayaditya is determined to be less than 650 A.D. It is obvious that Magha was the successor of Vamana and Jayaditya as Kashikavritta was stated in the epic 'Sisupala Vadha'. With these reasons, it can be imagined that Magha's period was the last part of the 7th century A.D.No other writings of Magha except Sisupala Vadha are not available. But in Suktisangrahas and treatises like Ouchitya Vichara Charcha, some verses are found as if they are of Magha. Since those works have not been available till now, this outstanding epic is the only one left to spread the fame of this great poet on this earth. The rest are expected to be non-existent.

This magnificent epic written by the poet Magha is also well known by his name 'Magham'. The style of description in this epic is quite mature. The description is rhetorical and emotionally graceful. It is rich with 20 cantos and 650 verses. This plot is adapted from the Mahabharata. In this epic, the poet's skill in using Utpreksha (a figure of speech), gaiety of Alliteration and the considerable expertise in music, dance, grammar and politics are explicitly expressed. The following verse, well known in praise of this poet, must be remembered.

**उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।**
**दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः ॥**

Kalidasa is famous for the similes while Bharavi for the depth of meaning and Dandi for wordplay. All these qualities are found in Magha.

Although this praise expresses the exaggeration of admirers, it indicates that the poet Magha is a brilliant gem in the ocean of Sanskrit literature.

**మాఘుడు :** శిశుపాలవధ మహాకావ్యాన్ని రచించిన మాఘకవి తాతగారైన సుప్రదేవుడు గుర్జరాధిపుడైన. వర్మలాతదేవుని మంత్రి. మాఘుని తండ్రి దత్తకుడు గొప్ప విద్వాంసుడు, దానప్రియుడు, మాఘుడు 'మీనమల్ల' అనే నగంలో జన్మించాడు. ఈ నగరం అంతకుముందు విద్యాక్షేత్రంగా సుప్రసిద్ధమైంది. తన తండ్రి ప్రభావం వల్ల మాఘుడు కూడ దాత అయ్యాడు. పరిమితి లేని దానాల వల్ల నిర్ధనుడయ్యాడు.

మాఘుని తాత సుప్రదేవునికి ఆశ్రయమిచ్చిన వర్మలాతదేవునికి చెందిన ఒక శిలాశాసనం వసంతగఢ్ ప్రాంతంలో దొరికింది. ఇది క్రీ.శ. 625కు చెందినది. కాబట్టి మాఘుని కాలం క్రీ.శ. 7వ శతాబ్దిగా నిర్ణయించబడింది. మాఘుని కాలం నిర్ణయించడానికి ఒక గొప్ప ఆధారం అతని కావ్యంలోని ఒక శ్లోకం ద్వారా లభిస్తుంది -

ism. That's why, his epic with its semantic respect was more peculiar than any other epic proving the secrets of politics. His descriptions are of the Ojo quality (contain longer expressions).

Though the language of the poet Bharavi is difficult at some places because of its interpretative profundity, it is pleasing as well as interesting. On the surface, it's hard, look like a coconut, but it enthralls us as its inside is full of beauty. Despite the fact that the plot is short, the story telling ingenuity, pleasing imagination, gracefulness of the scene and pictorial excellence render a prominent place to this epic.

**భారవి** : భారవి మహాకవి భారతదేశంలో ఏ ప్రాంతంలో ఉన్నవాడు? ఏ వంశానికి చెందినవాడు అనే అంశాలు స్థిరంగా నిర్ణయించలేకపోతున్నాయి. అయినప్పటికీ లోకంలో ప్రచారంలో ఉన్న కథలననుసరించి, భారవి కాలవిషయం నిర్ణయించడానికి కొన్ని ప్రమాణాలు దొరుకుతున్నాయి.

'అవంతిసుందరీకథా' గ్రంథాన్ని అనుసరించి కౌశికగోత్రోత్పన్నుడైన నారాయణస్వామి కుమారుడు భారవి. భారవి పూర్వులు ఉత్తర - పశ్చిమ (వాయువ్య) భారతమండలి ఆనందపురం అనే నగరంలో నివసించేవారు. తర్వాత వారు దక్షిణ భారతమండలానికి ప్రాంతానికి వచ్చారు. భారవి తీర్థాటన చేస్తూ ఒకసారి కాంచీనగర రాజైన సింహవిష్ణువుచే ఆహ్వానించబడినాడు. సింహవిష్ణువు కుమారుడైన మహేంద్రవిక్రమునితో కలిసి అక్కడే ఆనందంగా నివసించాడు. భారవి కుమారుడు మనోరథుడు. అతని మనుమడు దండి. భారవి శైవుడు. భారవి పేరు ఐహోల్ శిలాశాసనంలో కన్పిస్తుంది.

येनायोजि न वेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।

स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदास भारविः।

ఈ శాసనం రెండవ పులకేశికి సంబంధించినది. క్రీ.శ. 634 కాలానికి చెందినది. దీన్ననుసరించి భారవి క్రీ.శ. 634 కన్నా పూర్వుడని తెలుస్తుంది. ఈ విధంగా భారవి కాలం క్రీ.శ. 6వ శతాబ్దిగా భావించబడుతుంది.

ఈ కవికి సంబంధించి 'కిరాతార్జునీయం' అనే ఒకే ఒక్క కావ్యం లభిస్తుంది. సంస్కృత వాఙ్మయంలో సుప్రసిద్ధాలైన పంచమహాకావ్యాల్లో ఇది ఒకటి. ఈ కావ్యంలో 18 సర్గలున్నాయి. మహాకావ్య లక్షణాలన్నీ పరిపూర్ణంగా ఈ కావ్యంలో ఉన్నాయని విమర్శకులు భావిస్తున్నారు. భారవి మహాకవి ఆలంకారిక శాస్త్ర నిపుణుడు, నీతిశాస్త్రంలో మహాపండితుడు, గొప్ప వ్యాకరణవేత్త కావడం వల్లే ఇతని కావ్యం అర్థగౌరవదృష్టితో, రాజనీతి రహస్యాలను నిరూపించడంలో ఇతర కావ్యాల కన్నా విశిష్టమైందిగా నిలిచింది. ఇతని వర్ణనలు ఓజో గుణంతో ఉంటాయి (సుదీర్ఘ సమాసాలతో కూడి ఉంటాయి).

భారవి మహాకవి భాష అర్థగాంభీర్యం వలన కొన్ని చోట్ల క్లిష్టంగా ఉన్నప్పటికీ, రసవత్తరమవటం వలన మాధుర్యంగా ఉంటుంది. ఇది కొబ్బరికాయ లాగా చూడటానికి పైకి కఠినంగా ఉన్నా, లోపల రసపూర్ణమై, మధురమై ఆనందాన్ని కల్గిస్తుంది. ఈ కవితలో మనోహరాలైన సూక్తులున్నాయి. నిజానికి మూలకథ చిన్నదే అయినప్పటికీ, చరిత్ర చిత్రణ చమత్కారం, కల్పనాచమత్కృతి గంభీరభావాలతో కూడిన సన్నివేశ ఘటన, చిత్రకావ్య రచనానైపుణ్యం ఈ కావ్యాన్ని మహోన్నతమైన స్థానంలో నిల్పాయి.

## 5.माघः

The eminent epic 'Sisupala Vadha' was written by the poet Magha. His grandfather Supradeva was the minister of Gurjara king Varmalatadeva. Magha's father Dattaka was a great scholar and a philanthropist. Magha was born in the city called 'Meenamalla'. The

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् ।
विश्रान्तिजननं लोके नाट्यमेतत् यत्र भविष्यति ॥

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन्यत्र विद्यते ॥

## 4.भारविः

It is still undecided as to which part of India Bharavi was born in and which clan he belongs to. However, according to the popular stories in the world, there are some criteria for fixing Bharavi's time. According to the treatise 'Avantisundari Katha', Bharavi was the son of Narayanaswamy who belonged to the descendency of Kaushika. Bharavi's ancestors lived in a city called Anandapuram in north-western India. Later, they arrived at Nasik area of South India. Bharavi who was on a pilgrimage was once invited by the king Simhavishnu of Kanchinagar. Simhavishnu lived happily there itself with his son Mahendravikrama. Bharavi's son was Manoratha. His great grandson was Dandi.

Bharavi was a shaivite. Bharavi's name is found in Aihole inscription.

येनायोजि न वेश्म स्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदास भारविः।

This inscription belonged to second Pulakeshi. It belonged to 634 A.D. According to this, Bharavi dates back to 634 A.D. Thus Bharavi's time is considered to be sixth century A.D.

Only one epic called 'Kiratarjuneeyam' is available regarding this poet. This is one of the most famous five great epics in the Sanskrit literature. This epic consists of 18 contos. Critics believe that this epic has all the features of a great epic perfectly. The legendary poet Bharavi was an expert rhetorician, a great scholar of ethics and a prominent grammar-

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन्यन्न विद्यते ॥

Natyasastra is very ancient. Its author Bharata is a Rasa conservative. Bharata believes that nothing is meaningful without emotion. Bharata's theory is that the combination of Vibhava (determinants), Anubhava (consequents) and Vyabhichari bhava (transitory states) gives rise to rasa (emotion). He feels that rasa alone is the soul in poetry. Apart from it, eleven dance elements, the poetic philosophies such as semantic interpretability, features of poetry, figures of speech, ritis (norms), vrittis (a vritti is akin to the stylistic mode of expression) are well described in Natyasastra. So Natyasastra became the source of the Sanskrit poetry.

Bharatamuni was born in the region of Kashmir in 500 B.C. ago. His disciples also became famous with the word 'Bharata'. That is the reason why, many disciples are found with the name 'Bharata' such as Adima Bharata, Prathama (first) Bharata, Vriddha Bharata and the like. Of them, Prathama Bharata wrote Natyasastra. His father named him Bharata while others got the name traditionally.

Dance is mere imitation of present situation. The goal of Natyasastra is to keep this imitation ecstatic. Emotional bliss is the form of consciousness. Bharata's opinion is to evoke emotional sensation should be the aim of poetic dramas.

**భరతముని:** ప్రపంచ సాహిత్యాన్ని సునిశితంగా పరిశీలించుటకు భారతీయుల అలంకారశాస్త్రమే బాగా ఉపకరిస్తుంది. అలంకారశాస్త్రంలో మొట్టమొదటి గ్రంథరాజం నాట్యశాస్త్రమే. అభినయదృష్టిపరంగాను, సునిశిత విమర్శపరంగాను నాట్యశాస్త్రం నేటికీ ప్రామాణికంగా నిలుస్తుంది.

భరతముని క్రీ.పూ. 1000 - 500 మధ్యకాలంలో ఉన్నాడని చరిత్రకారులు నిర్ణయించారు. నాట్యశాస్త్రం మొదట చిన్నగ్రంథంగా ఉండి, తర్వాత అనేక రచనలు దీనిలో కలిసి పెద్ద గ్రంథంగా మారిందని విద్వాంసులు అభిప్రాయపడుతున్నారు. కావట్టే ఆ గ్రంథ విషయ విభాగంలోగాని, విషయ వివరణలోగాని ఒక క్రమపద్ధతి కనబడటం లేదు. ఇందులో కేవలం కావ్య విమర్శే కాదు, నాటక విమర్శ కూడ కన్పిస్తుంది. అందుకనే నాట్యశాస్త్రానికి ఆచార్యులు అనేకులు వ్యాఖ్యానాల్ని రచించారు. ఆ వ్యాఖ్యానాల్లో అభినవగుప్తుని 'అభినవ భారతి' వ్యాఖ్యానం ప్రముఖమైంది. కాని అది అసంపూర్ణమైంది. ఉద్భటుడు, లోల్లటుడు, శంకుకుడు, భట్టనాయకుడు, రాహులుడు, భట్టతౌతుడు, కీర్తిధరుడు, వామదేవుడు, మాతృగుప్తుడు మున్నగువారు భరతుని నాట్యశాస్త్రానికి వ్యాఖ్యానాల్ని వ్రాశారు.

భరతుని నాట్యశాస్త్రంలో 36 అధ్యాయాలు లభిస్తున్నాయి. ఒక్కొక్క అధ్యాయంలో ఒక్కో విషయం ప్రతిపాదించబడింది. భరతుడు కాశ్మీర శైవదర్శనావలంబకుడు. శైవదర్శనం ప్రకారం పరమాత్మ తత్త్వాలు 36 కాబట్టి అదే సంఖ్యలో అధ్యాయాల్ని రచించాడని విమర్శకులు భావిస్తున్నారు.

నాట్యశాస్త్రమందు ప్రతిపాదించబడిన విషయాలు భాషాసాహిత్యాల పర్యాలోచనకు ఉపకరిస్తున్నాయి. ఇతర అలంకార గ్రంథాలైన మమ్మటుని కావ్యప్రకాశిక, విద్యానాథుని ప్రతాపరుద్రయశోభూషణం మొదలైనవి భరతుని నాట్యశాస్త్రమాధారంగానే రచించబడ్డాయి. సాధారణంగా నాట్యశాస్త్రంలో 11 అంశాలు వర్ణించబడ్డాయి. అవి - 1) నవరసాలు, 2) 19 భావాలు, 3) నాలుగు అభినయాలు, 4) రెండు ధర్మాలు 5) నాల్గు వృత్తులు, 6) నాల్గు ప్రవృత్తులు, 7) రెండు సిద్ధులు, 8) సప్తస్వరాలు, 9) నాల్గు విధాలైన ఆతోద్యం, 10) ఐదు రకాలైన గానం, 11) త్రివిధ రంగాలు. శృంగారాది రస నిరూపణకు మూలగ్రంథం నాట్యశాస్త్రమే. ఈ గ్రంథ ముఖ్య ప్రయోజనం మానసిక విశ్రాంతి. ఇదే విషయాన్ని స్వయంగా భరతుడే చెప్పాడిలా -

[illegible] 'शास्त्रेण रक्षिते देशे शास्त्रचिन्ता प्रवर्तते [illegible]

## 3. भरतमुनिः

Indian rhetoric is very useful for a closer look at the world literature. Natyasastra (the science and study of dance) was the first book on rhetoric. Natyasastra is still authentic in terms of performance and critical criticism.

Historians believed that Bharatamuni lived between 1000 and 500 B.C. Scholars are of the opinion that Natyasastra was originally a minor treatise and later it became a major treatise when a number of works were compiled in it. It is the reason why there doesn't seem to be a systematic approach to the subject matter or description of the text. It contains not only poetic criticism but also theatrical criticism. It is therefore many a professor wrote commentaries on Natyasastra. Of them, the commentary called 'Abinava Bharati' of Abinava Gupta is well noted. But it is incomplete. Udbhata, Lollata, Sankuka, Bhattanayaka, Rahul, Bhattatauta, Keerthidhara, Varmadeva, Matrugupta and the like wrote commentaries to Bharata's Natyasastra.

Thirty six chapters are available in Bharata's Natyasastra. Certain topic is proposed in each chapter. Bharata was a follower of Kashmira Shaivism. Critics believe that he wrote the same number of chapters as the 36 divine philosophies according to Shaivism.

Subjects proposed in Natyasastra contribute to the study of linguistics. Other rhetorical works such as Mammata's Kavyaprakasika, Vidyanath's Prataparudra Yasobhushanam etc. were written based on Bharata's Natyasastra. Generally eleven topics are discussed in Natyasastra. They are - 1) Navarasas (nine emotions), 2)Nineteen bhavas (basic mental states), 3) Four types of acting, 4) Two dharmas (principles), 5) Four vrittis, 6) Four Pravrittis, 7) Two siddhas,8) Seven swaras (musical notes), 9) Four types of Atodyam, 10) Five types of singing and 11) Three types of theatres. Natyasastra is the source for the proof of Sringara-rasa (emotion of love), etc. The main advantage of the treatise is mental relaxation. The same thing is revealed by Bharata himself.

**दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् ।**
**विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतत् यन्न भविष्यति ॥**

Natyasastra relaxes the mourners, the workers, the victims and the ascetics.

Bharata's opinion is that all techniques, all arts, all knowledge, chatushashti kalas (64 kinds of skills), yoga etc. are in dance.

This elaborate treatise was written in the 3rd century B.C. on the basis of Kautilya's experience. Politics and the system of governance were particularly discussed in this. essence of Sukraneeti etc. was understood in the first chapter of the treartise 'Dandaneeti Nirupanam'. 'शस्त्रेण रक्षिते देशे शास्त्रचिन्ता प्रवर्तते' Kautilya gave a slogan that science writing and studying are possible only in a country protected by weapons. About his treatise, Kautilya said as follows : I wrote the treatise 'Artha Sastra' compiling all the treatises on Economics written by the ancestors for the attainment and the prosperous rule of the kingdom. Kautilya was a great scholar, ethicist and an Indian leader. His 'Artha Sastra' is incomparable and has always been phitanthropic.

**కౌటిల్యుడు :** సంస్కృత వాఙ్మయంలో పదునాల్గు విద్యలతోపాటు నాలుగు విద్యలు కలుపబడ్డాయి. ఆ పద్దెనిమిది విద్యలు నాల్గు వేదాలు, ఆరు వేదాంగాలు, మీమాంస, న్యాయం, పురాణం, ధర్మశాస్త్రం, ఆయుర్వేదం, ధనుర్వేదం, గాంధర్వం, అర్థశాస్త్రం అనేవి. ఈ విద్యలన్నింటిలో అర్థశాస్త్రం ఎంతో గొప్పది. ఈ అర్థశాస్త్రవేత్తలలో కౌటిల్యుడు ప్రముఖుడు. అతడు చాణక్యుడుగా సుప్రసిద్ధుడు. ఇతనికే విష్ణుగుప్తుడు, వాత్స్యాయనుడు అని కూడా నామాంతరాలున్నాయి. ఇతనిచే రచించబడిన అర్థశాస్త్రం ప్రపంచ సాహిత్యంలోనే సుప్రసిద్ధమైంది. అర్థశాస్త్రంలో రాజనీతి, కూటనీతి, శాసనవ్యవస్థలు చక్కగా నిరూపించబడ్డాయి.

అర్థశాస్త్ర ప్రవర్తకుడైన కౌటిల్యునిలో రీతి, నీతి, త్యాగం, తపస్సు, వీరత్వం, దూరదృష్టి, సంకల్పబలం, విద్వత్తుం మొదలైన విశిష్ట గుణాలెన్నో ఉన్నాయి. సువిశాలమైన ఆర్యావర్తం ముక్కలు ముక్కలుగా ఉన్నప్పుడు మహాపద్మనందుడు మగధ రాజ్యాన్ని పరిపాలిస్తున్నాడు. అజాతశత్రువైన బింబిసారుని వంశంలో పుట్టిన ఈ మహాపద్మనందుడు అనేక భోగాల్ని అనుభవిస్తూ కాలం గడిపేవాడు. అదే సమయంలో కౌటిల్యుడు జన్మించాడు.

అప్పుడే గ్రీకు రాజైన అలెగ్జాండర్ భారతదేశంలోని చిన్న చిన్న రాజ్యాల్ని ఆక్రమించసాగాడు. చిన్న చిన్న రాజ్యాల రాజుల మధ్య నెలకొని ఉన్న తగాదాలే అలెగ్జాండర్ ఆక్రమణలకు, విజయాలకు కారణమయ్యాయి. అప్పుడు కౌటిల్యుడు అర్థశాస్త్రాన్ని రచించి, అతికష్టం మీద చిన్న రాజ్యాలన్నింటిని సంఘటితపరచి, 'అఖండ భారతాన్ని' ఏర్పరచాడు. కౌటిల్యుని కాలంలో భారతదేశం పశ్చిమాన గాంధార దేశం వరకు, దక్షిణాన మైసూర్ వరకు ఒకే రాజ్యంగా వ్యాపించింది.

కౌటిల్యుని బాల్యమందే తల్లిదండ్రులు స్వర్గం చేరిరి. అయినప్పటికీ గురుకులంలో నివసిస్తూ చక్కగా శాస్త్రాధ్యయనం చేశాడు. ఇతడు తాను కుటీరాల్లో నివసిస్తూనే యువకుడైన చంద్రగుప్తుణ్ణి మహారాజుగా అభిషేకించాడు. ఇతడెన్నడూ పరిపాలకుడు కాలేదు. తన ప్రతిజ్ఞ ప్రకారం చక్కని శాసన వ్యవస్థను నెలకొల్పాడు. నందవంశీయులకు అత్యంత విశ్వసనీయుడైన రాక్షసమంత్రిని చంద్రగుప్తునికి మంత్రిగా నియోగించాడు. తర్వాత జ్ఞానార్జనకు తిరిగి పర్ణకుటీరాల్లో జీవించాడు. అఖండ సామ్రాజ్యం సుస్థిరంగా ఉండటానికి అలెగ్జాండర్ సేనాపతియైన సెల్యూకస్ కుమార్తె 'హెలిన్'తో చంద్రగుప్తుని వివాహం చేశాడు. అటువంటి దూరదృష్టి, అవ్యాజ దేశభక్తి గల చాణక్యుడు రాజ్య సుస్థిరత కోసం 'చాణక్యనీతి'ని, అర్థశాస్త్రాన్ని రచించాడు.

చాణక్య నీతిలో17 అధ్యాయాలు, 340 శ్లోకాలు ఉన్నాయి. దీనిలో ఆదర్శజీవనం గడపడానికి కావల్సిన అమూల్య సందేశాలున్నాయి.

**यस्मिन् देशे न सम्मानः न वृत्तिः न च बान्धवाः ।**
**न च विद्यागमोऽप्यसस्तित वासं तत्र न कारयेत् ॥**

ఏ ప్రాంతంలో గౌరవం, వృత్తి, బంధువులు, విద్య ఉండవో అక్కడ ఎప్పుడూ నివసించకూడదు.

**परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।**
**वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥**

సమ్ముఖంలో మధురంగా మాట్లాడుతూ, పరోక్షంలో పనుల్ని చెడగొట్టే మిత్రుడు అమృతం అంచులందుగల్గి విషంతో నింపబడిన కుండ వంటివాడు.

has great significance. Kautilya is one of the leading economists. He is well known as Chanakya. He is also known an Vishnugupta and Vatsyayana. Artha Sastra (Economics) written by him is very popular in the world literature. Politics, diplomacy and legislatures are well proven in Economics.

There are many distinguished qualities such as virtue, morality, sacrifice, penance, heroism, foresight, determination and erudition in Kautilya, the author of Artha Sastra Mahapadmananda was ruling the vast Aryavarta (the abode of Aryans) which was in fragments. Maha padmananda who was born into the dynasty of Bimbisara, an Ajatasatru (a person who has no enemies), would spend the time enjoying luxuries. At that very time, Kautilya was born.

It was then Alexander the Great, the Greek king, was invading the smaller kingdoms of India. Fighting between the kings of the smaller kingdoms led to Alexander's conquests and victories. Then Kautilya wrote Artha Sastra, made every effort in uniting the small kingdoms and formed 'United India'. During the time of Kautilya, India spread a sole kingdom to Gandhara in the west and Mysore in the south.

Kautilya's parents passed away when he was a child. However, he lived in gurukulam and continued his studies well. He made the young Chandragupta enthrone as a king while he was living in huts. He never became an administrator. He established a good legislative system according to his pledge. He appointed Amatya Rakshas who was very loyal to the Nanda dynasty the minister of Chandragupta. Later, he again lived in small houses for the acquisition of knowledge. He married Chandragupta off to Helin, the daughter of Alexander's general in order to stabilize the vast empire. Such a far-sighted and enormously patriotic Kautilya wrote Chanakyaneeti and Artha Sastra for the stability of the kingdom.

Chanakyaneeti consists of 17 chapters and 340 verses. It is equipped with invaluable massages (for a person) to lead an ideal life.

**यस्मिन् देशे न सम्मानः न वृत्तिः न च बान्धवाः ।**
**न च विद्यागमोऽप्यसद्दित वासं तत्र न कारयेत् ॥**

One should never live in a place where there is no respect, job/occupation, relatives and education

**परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।**
**वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥**

The friend who speaks sweatly in the presence and indirectly spoils the work is like a pot filled with poison that has nectar on the brims.

Thus there are many verses in the treatise 'Chanakyaneeti' that are useful for life. Kautilya's Artha Sastra was translated into almost all the languages in the world. It was written for the unification and sustainability of India after the coronation of Chandragupta.

పాణినికి ఆహికుడు, పీలోని, దాక్షీపుత్రుడు, శాలాతురీయుడు అనే నామాంతరాలున్నాయి. అతడు గాంధార దేశ శాలాతుర గ్రామంలో నివసించేవాడని హుయాన్‌త్సాంగ్ పేర్కొన్నాడు. ప్రాచీన ఆచార్యులు పాణిని అనితర ప్రజ్ఞాశాలి అని విధాలుగా కీర్తించారు. 'సూత్రకారుడు' అనేది అతని బిరుదు. పాణినికి పూర్వం కూడ వ్యాకరణ శాస్త్రాధ్యయన పరంపర ఉంది తెలుస్తుంది. ఆగ్రాయణుడు, ఔదుంబరాయణుడు, ఔపమన్యువు, ఇతిహాసకర్తలు, నిరుక్తకారులు, యాజ్ఞికులు, వ్యాకరణ పరి సంస్థలుండేవి. ఆ సంస్థల్లో వ్యాకరణవేత్తలు, శాకటాయనుడు మొదలగు వారినందరినీ యాస్క మహర్షి 'నిరుక్త గ్రం (ఉట్టంకించాడు.) పేర్కొన్నాడు. ఆపిశలి, కాశకృత్స్నుడు అనే ఇద్దరు సుప్రసిద్ధులైన వ్యాకరణవేత్తలున్నారు. ఈ ఇద్దరు పా పూర్వులే. ప్రాచ్యవైయాకరణులు, ఔదీచ్యవైయాకరణులు అని రెండు విధాలైన వ్యాకరణవేత్తలున్నారని పాణిని చెప్పాడు.

కాశ్యపుడు, గార్గ్యుడు, గాలవుడు, చక్రవర్మ, భరద్వాజుడు, శాకటాయనుడు, శాకల్యుడు, సేనకుడు, స్ఫోటాయను మున్నగు వ్యాకరణవేత్తల పేర్లన్ని పాణినికి సుపరిచితాలే. వీరందరూ పాణినికి పూర్వులే. పాణిని కాలంలో 'చరణ' అనే పేరు వ్యాకరణ పరిశోధనా సంస్థలుండేవి. ఆ సంస్థల్లో వ్యాకరణశాస్త్ర పరిశోధనలు జరుగుతుండేవి. ఆ పరిశోధనల్ని సూక్ష్మదృష్టితో పరిశీలించి ఆయా శాస్త్రపండితుల అభిప్రాయాల్ని తన గ్రంథమైన అష్టాధ్యాయిలో పేర్కొన్నాడు. పా పూర్వమున్న వ్యాకరణవేత్తల్లో కొందరు కేవలం వైదిక శబ్దాల్ని మాత్రమే పరిశీలించగా, కొందరు లౌకిక శబ్దాల్ని మా పరిశోధించారు. కాని పాణిని లౌకిక - వైదిక శబ్దాలు రెంటిని సమగ్రంగా పరిశీలించి సూత్రాల్ని రచించాడు.

పాణిని అష్టాధ్యాయి గ్రంథానికే అష్టమం, పాణినీయం, వృత్తిసూత్రం, అకాల కవ్యాకరణం, శాలాతురీయతంత్రం - అనేక నామాంతరాలున్నాయి. ఈ గ్రంథంలోని సూత్రాల సంఖ్య 3995. ఇది ఎనిమిది అధ్యాయాలుగా విభజించబడింది. ప్ర అధ్యాయానికి నాలుగు పాదాలున్నాయి.

అష్టాధ్యాయిలోని ప్రథమాధ్యాయంలో మొదటి రెండు పాదాల్లో - సామాన్య సంజ్ఞలు, పరిభాషలున్నాయి. మూడవ పాదం ఆత్మనేపద - పరస్మైపద ప్రక్రియలు చూపబడ్డాయి. నాల్గవపాదంలో విభక్తిసంజ్ఞా సూత్రాలు ఉన్నాయి. రెండవ అధ్యాయం మొదటి రెండు పాదాల్లో సమాససూత్రాలు, మూడవ పాదంలో కారకసూత్రాలు, నాల్గవ పాదంలో లుక్ ప్రక్రియకు చెం సూత్రాలు వర్ణించబడినాయి. మూడవ - నాల్గవ - ఐదవ అధ్యాయాల్లో ప్రత్యయాలు, వాటి అర్థాలు, కృత్ప్రత్యయా వివరించబడినాయి. ఆరవ అధ్యాయం మొదటి పాదంలో, ఎనిమిదవ అధ్యాయంలోని మూడు పాదాల్లో సంధి సూత్రాలు ఉన్నా ఈ విధంగా నిర్దుష్ట క్రమంలో, వైజ్ఞానిక దృష్టితో పాణిని అష్టాధ్యాయిని తయారుచేశాడు.

అల్పాక్షరాలతోనే అనల్పార్థాన్ని బోధించేలా సూత్రరచన చేసిన పాణిని ప్రతిభ ప్రశంసనీయమైంది. ప్రత్యాహార అనుబంధాలు, గణపాఠం - భ - ఘు మొదలైన సంజ్ఞలు కల్పించడం, అనువృత్తి ప్రక్రియ, అధికార సూత్రాలు మొదలై అనేకాంశాలు అద్భుతమైన తన ప్రతిభాసంపత్తితో పాణిని సాధించాడు.

పాణిని 'అష్టాధ్యాయి' సంస్కృత వ్యాకరణజ్ఞాన సముపార్జనకు బాగా ఉపకరిస్తుంది. పాణిని కాలంలో సంస్కృతం వ్యావహారిక భాషగా ఉండేది. చారిత్రకాంశాల్ని పరిశీలించడంలో, భాషాతత్వాన్ని బోధించడంలో, భాషాశాస్త్రాన్ని విమర్శించడంలో ఈ పాణిని వ్యాకరణం సాటి లేనిది. కాబట్టే పాణిని వ్యాకరణం పఠనపాఠనాల్లో ఉంది. భవిష్యత్తులో కూడ ఉండగలదు.

'జాంబవతీ పరిణయం' అనే గ్రంథాన్ని రచించిన పాణిని, అష్టాధ్యాయీ కర్త అయిన పాణిని విభిన్నులని విమర్శకు భావిస్తున్నారు.

## 2. कौटिल्य:

In Sanskrit literature, four techniques were added to the (existing) fourteen techniques. Those eighteen techniques are : four Vedas, six Vedangas (the limbs of the Vedas), Meemamsa (reflection or critical investigation), Jurisprudence, Myth, Theology, Ayurveda, Dhanurveda (science of archery), Gandharva Veda and Economics. Of all these disciplines, Economics

Panini's Ashtadhyayi is also called with different names like Ashtama, Panineeyam, Vrittisutra, Akala Vyakaranam and Salatureeya Tantra. This treatise consists of 3995 formulae. It is divided into eight chapters. Each chapter is subdivided into four sections.

In the first and second sections of the first chapter in Ashtadhaya, common nouns and definitions were described. Atmanepada (the form of verb which implies an action belonging or reresting to self), Parasmaipada (the transitive or active verb and its terminations) dhatus are explained in the third section.

There are noun and case rules in fourth section. In the first and second sections of the second chapter, compound word rules are described; in the third section, case rules and in fourth section Luk method (Luk is a technical term used by Panini to express the dropping or disappearance of affixes). In the third, fourth and fifth chapters, suffixes , their meaning and verbal suffixes are explained. Sandhi sutralu (rules regarding union of two sounds) are described in the first section of 6th chapter and in the three sections of 8th chapter. In this way, Panini composed Ashtadhyayi with a scientific view and in a specific order.

The talent of Panini who wrote the grammar rules using simple letters that render extensive meaning is commendable. With this extraordinary genius he explained many topics such as Pratyaharas, Appendices, Ganapatha (a list of groups of primitive nominal stems), Anuvritti technique, Adhikara sutras, etc. He explained the use of nouns, vowels and verbs and divided them into classes. He then went on to explain the construction of sentences and the use of compound nouns and tenses.

Panini's Ashtadhyayi is quite useful to gain Sanskrit grammar knowledge. During the time of Panini, Sanskrit was the colloquial language. This Panini grammar is incomparable in examining historical aspects, in teaching philosophy of language and in criticising linguistics. That's why, Panini's grammar is being learnt and taught. It will also be in future.

Critics are of the opinion that Panini who wrote the treatise called 'Jambavati Parinayam' and Panini, the author of Ashtadhyayi are different.

**పాణిని** : పాణిని సంస్కృత వ్యాకరణ కర్త. ఈయన 'అష్టాధ్యాయి' గ్రంథాన్ని రచించాడు. ఈ అష్టాధ్యాయి సమగ్ర పరిశోధనతో, సాంకేతిక పరిశుద్ధి గల్గి, సూత్రనిర్మాణ చాతుర్యంతో విరాజిల్లుతూ సార్వకాలికమూ, నిరుపమానమైన లోకప్రియ గ్రంథమై నిలిచింది.

పాణిని కాలవిషయంలో అనేకమైన అభిప్రాయ భేదాలున్నాయి. వీవర్, మాక్స్-ముల్లర్ మున్నగు పాశ్చాత్య పండితుల అభిప్రాయం ప్రకారం క్రీ.పూ. 350 పాణిని కాలం. గోలసక్కర్, భాండార్కర్ మొదలగు వారి అభిప్రాయం ప్రకారం క్రీ.పూ. 500 బేల్వాల్కర్ అభిప్రాయానుసారం క్రీ.పూ. 700 - 600. నామాశ్రయుడు మాత్రం పాణిని క్రీ.పూ. 2400 సం॥లో జీవించి ఉండెనని అభిప్రాయపడ్డాడు. వాసుదేవశరణ్ అగ్రవాల్ అభిమతానుసారం పాణిని క్రీ.పూ. 480 - 410 మధ్యకాలం వాడు. క్రీ.పూ. 440 - 430 మధ్యకాలంలో అష్టాధ్యాయి రచించి ఉంటాడు. అష్టాధ్యాయి రచనానంతరం మగధ రాజ్యానికి చెందిన పాటలీపుత్ర పురానికి చేరి ఉంటాడు.

# 6. महाकविशास्त्रकारः (మహాకవి విభాగం)

## (HISTORY OF SANSKRIT - LITERATURE)

### 1. पाणिनिः

Panini is a Sanskrit philologist, grammarian and renowned scholar in ancient India. He gave a comprehensive and scientific theory of phonetics, phonology and morphology. He wrote 'Ashtadhyayi', a sutra style treatise on Sanskrit grammar. Having been written by doing critical research, it is enriched with symbolic refinement. It is composed of rule formative dexterity. Hence, this eternal and incomparable treatise is popular all over the world.

There are diverse opinions about Paninis lifetime. According to the western scholars like Weaver, Max - Muller, his lifetime was 350 B.C. According to Golasakkar and Bhandarkar and the like, his lifetime was 500 B.C. As per Bewalkar's opinion, it was 700-600 B.C. Namasraya opined that Panini lived in 2400 B.C. As per Vasudevasaran Agarwal, Panini lived between 480 B.C and 410 B.C. He opined that Panini might have written Ashtadhyayi between the time of 440 - 430 BC. After the completion of writing Ashtadhayi, he might have reached Pataliputra that belonged to the Magadha Kingdom.

Panini has different names like Aahika, Seeloni, Daksheeputra and Salatureeya. Hieun Tsang mentioned that belonged to the kingdom of Gandhara and he lived at a village called Salatura. Ancient professors praised Panini in many ways that he was highly intellectual. He got the title 'Sutrakara'. It is known that there was a continuous study of grammar prior to Panini. There were grammar research organisations belonging to Agrayana Oudumbarayana, Oupamanyu, historians, etymologists and yagnikas (the persons versed in performing sacrifice). The sage Yaska mentioned about the grammarians like Sakatayana in the treatise 'Nirukta'. There were two very famous grammarians named Apasali and Kapakritsna. Both of them were predecessors of Panini. Panini states that there are two types of grammarians - prachya grammarians and oudeechya grammarians.

Panini was well acquainted with the grammarians Kashyapa, Gargya, Galava Chakravarma, Bharadwaja, Sakatayana, Sakalya, Senaka, Sphotayana and the like. All these grammarians were predecess of Panini. At the time of Panini there were grammar research organisations by the name 'Charana'. The grammar related researches used to take place in those organisations. Panini scrutinised all those researches and cited the opinions of those scholars in his treatise 'Ashtadhyayi'. Prior to Panini some of the grammarians researched about only Vedic words whereas some others researched about only worldly words. But Panini examined both the worldly and Vedic words comprehensively and wrote sutras (formulae).

= కల్పవృక్షంగా, शत्रुभिः = శత్రువుల చేత, कालः = యమునిగా, ऐक्षि = చూడబడ్డాడు.
ఇక్కడ ఉపమేయమైన రాజు, స్త్రీలు, యాచకులు, శత్రువులు అనే ముగ్గురి చేత మన్మధుడు, కల్పవృక్షం, యముడు అనే మూడు ఉపమానాలుగా చూడబడినందువలన ఉల్లేఖాలంకారము.

## 8. अर्थान्तरन्यासः

**उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः।**
**हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम् ॥**

**Property :** उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः

**Meaning :** Arthantaranyasa is a figure of speech in which a general proposition is adduced to support a particular instance or a particular instance to support a general proposition

**Example :** हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम्

**Explanation :** हनूमान् = Hanuman, अब्धिम् = the ocean, अतरत् = crossed.
Hanuman is an individual. The task of crossing the ocean is impossible. This is a particular instance. A general proposition is added to support it.
महात्मनाम् = for the great people, दुष्करम् = impossible one, किम् = what is there (it means nothing)

Here Hanuman is one of the great people so the particular instance, i.e, crossing the ocean is suppoted by a general proposition nothing is impossible. Hence, it is the figure of speech 'Arthantaranyasa'.

## 8. अर्थान्तरन्यासः

**उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः।**
**हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम् ॥**

**లక్షణం :** उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः

**అర్థం :** సామాన్యాన్ని విశేషం చేత గానీ, విశేషాన్ని సామాన్యం చేత గాని సమర్థించి తెలియజెప్పడం అర్థాంతర న్యాసాలంకారం. ఎక్కువ వస్తువులకు వర్తించే సమానమైన ధర్మం సామాన్యం. ఒక్కరిలో మాత్రమే ఉండే ధర్మం విశేషం.

**ఉదాహరణ :** हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम्

**వివరణ :** हनूमान् = హనుమంతుడు, अब्धिम् = సముద్రాన్ని, अतरत् = దాటాడు
హనుమంతుడు ఒక వ్యక్తి, సముద్రాన్ని దాటాడు అనే కార్యం అసాధ్యమైనది, ఇది విశేషం. దీన్ని సమర్థించడానికి సామాన్య వాక్యం చేర్చబడింది.
महात्मनाम् = గొప్పవారికి, दुष्करम् = సాధ్యం కానిది, किम् = ఏమి ఉన్నది (ఏమీ లేదని భావం)
ఇక్కడ మహాత్ములందరిలో హనుమంతుడు ఒకడు కనుక సాధ్యం కాని పని లేదు అనే సామాన్యంతో సముద్రం దాటడం అనే విశేషమైన పని సమర్థించబడింది కనుక అర్థాంతరన్యాసాలంకారం.

✪✪✪

## 6. दृष्टान्तः

**चेत् बिम्बप्रतिबिम्बत्वं दृष्टान्तस्तदलङ्कृतिः।**
**त्वमेव कीर्तिमान् राजन् विधुरेव हि कान्तिमान्॥**

ఈ శ్లోకంలో ఉపమేయార్థం 'దృష్టాంతం' అను అలంకారము యొక్క లక్షణం, లక్ష్యార్థం, ఉదాహరణ ఉన్నాయి

లక్షణం : चेत् बिम्बप्रतिबिम्बत्वं दृष्टान्तस्तदलङ्कृतिः

बिम्बप्रतिबिम्बत्वं चेत् = ఉపమాన వాక్యానికి ఉపమేయ వాక్యానికి బింబ ప్రతిబింబ భావం, చెప్పబడితే అ = అది, दृष्टान्तः = దృష్టాంతం అను పేరు గల, अलङ्कृतिः = అలంకారము.

అద్దంలో బింబంతో సమానంగా ప్రతిబింబం గోచరిస్తుంది. అది బింబప్రతిబింబ భావం. ఉపమాన - ఉపమేయ వాక్యం చెప్పినప్పుడు వాటి మధ్య బింబప్రతిబింబ భావం వర్ణించబడితే అది దృష్టాంతాలంకారం

ఉదాహరణ : त्वमेव कीर्तिमान् राजन् विधुरेव हि कान्तिमान्॥

राजन् = ఓ రాజా ! त्वम् एव = నీవే, कीर्तिमान् = కీర్తిమంతుడవు, विधुः एव हि = చంద్రుడే, कान्तिमान् = కాంతిమంతుడు

ఓ రాజా ! నువ్వే కీర్తిమంతుడవు. చంద్రుడే కాంతిమంతుడు.

వివరణ : ఇక్కడ 'నువ్వే కీర్తిమంతుడవు' అను వాక్యం ఉపమేయవాక్యం. 'చంద్రుడే కాంతిమంతుడు' అను వాక్యం ఉపమాన వాక్యం. రాజు చంద్రునితో, కీర్తి చంద్రకాంతితోను పోల్చబడుట వలన పోలిక. ఈ రెండు వాక్యాల బింబప్రతిబింబ భావం వర్ణింపబడి చమత్కారం కలుగుతోంది. కావున ఇది దృష్టాంతం అనే అలంకారం

## 7. उल्लेखः

**वहुभिर्वहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते।**
**स्त्रीभिः कामोर्थिभिरस्वद्रुः श्चन्द्रः कालः शत्रुभिरैक्षि सः ॥**

**Meaning :** If a compared person or thing is described by various people in different ways, it is said to be the figure of speech called 'Ullekha'.

**Example :** स्त्रीभिः, कामः अर्थिभिः, स्वर्द्रुः कालः शत्रुभिरैक्षिसः

**Explanation :** सः = he, स्त्रीभिः = by the women, कामः = as the god of love (cupid), अर्थिभिः = by the mendicants, स्वर्द्रुः = as the Kalpavriksha (wish fulfilling divine tree), शत्रुभिः = by the enemies कालः = as Yama (the god of death), ऐक्षि = considered

Here the person compared, i.e. the king is seen by various people in different ways. The king is considered as the god of Love (Cupid)by the women, the Kalperiktha (wish fulfilling divine tree) by the mendicants the moon by somebody and Yama the god of death by the enemies. Hence, it is the figure of speech "Ullekha".

## 7. उल्लेखः

లక్షణం : **वहुभिर्वहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते।**
**स्त्रीभिः कामोर्थिभिरस्वद्रुः श्चन्द्रः कालः शत्रुभिरैक्षि सः ॥**

అర్థం : ఒకే వస్తువును ఉపమేయమైన దానిని అనేకులు అనేక విధాలుగా వర్ణించినట్లయితే అదే ఉల్లేఖాలంకారం.

ఉదాహరణం - स्त्रीभिः, कामः अर्थिभिः, स्वर्द्रुः कालः शत्रुभिरैक्षिसः

వివరణ : सः = అతడు, स्त्रीभिः = స్త్రీల చేత, कामः = మన్మథునిగా, अर्थिभिः = యాచకుల చేత, स्वर्द्रुः

# 5.अप्रस्तुतप्रशंसा

**अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात्सा यत्र प्रस्तुताश्रया।**
**एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते॥**

లక్షణం : अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात् सा यत्र प्रस्तुतानुगा।

सा = అది (అప్రస్తుత వస్తువు యొక్క ప్రశంస), यत्र = ఎక్కడ, प्रस्तुत + अनुगा = ప్రస్తుతమును అనుసరించునది అవుతుందో, (అది), अप्रस्तुतप्रशंसा = అప్రస్తుత ప్రశంస, स्यात् = అగును

ప్రశంస అంటే వర్ణన. అప్రస్తుత ప్రశంస ప్రస్తుత విషయాన్ని సూచిస్తే అది చమత్కారం కలుగజేస్తుంది. అప్రస్తుత విషయం వాచ్యంగా (Direct meaning) ఉండి దాని ద్వారా ప్రస్తుత విషయం వ్యంగ్యంగా (Indirect meaning) వర్ణింపబడితే అది అప్రస్తుత ప్రశంస అను అలంకారం.

ఉదాహరణ : एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते।

शकुन्तेषु = పక్షులలో, यः = ఏది, शक्रात् = ఇంద్రుని కంటె, अन्यं = వేరొకనిని, न याचते = యాచించదో, (सः = అది), एकः = ఒక్కటే, कृती = ఉత్తమమైనది

పక్షుల్లో ఏది ఇంద్రుణ్ణి తప్ప వేరొకణ్ణి యాచించదో, ఆ పక్షి మాత్రమే ఉత్తమమైంది.

వివరణ : స్వాభిమానం కల ఒక యాచకుడు రాజు వద్దకు వచ్చి పలుకుతున్న మాటలివి - "ఇంద్రుడు కురిపించే వర్షపు చినుకులు తప్ప ఇంకేమీ కోరుకొనని చాతకపక్షి ఉత్తమమైంది" ఇక్కడ వాచ్యమైన చాతకపక్షి వృత్తాంతం అప్రస్తుతం. దీన్ని వర్ణించటం ద్వారా స్వాభిమానం కలిగిన యాచకుని వృత్తాంతం "ఓ రాజా ! నిన్ను తప్ప వేరొక దాతను ఆశ్రయించని యాచకుడే ఉత్తమమైనవాడు" అని వ్యంగ్యరీతిగా ప్రస్తుత విషయమై స్ఫురిస్తోంది. కావున ఇది అప్రస్తుత ప్రశంసాలంకారం.

# 6.दृष्टान्तः

**चेद् बिम्बप्रतिबिम्बत्वं दृष्टान्तस्तदलङ्कृतिः।**
**त्वमेव कीर्तिमान् राजन् विधुरेव हि कान्तिमान्॥**

In this verse, the first half is the property of the figure of speech. The latter half is the example sentence.

**Property :** चेत् बिम्बप्रतिबिम्बत्वं दृष्टान्तस्तदलङ्कृतिः

बिम्बप्रतिबिम्बत्वं चेत् = if the sense of image and reflection is existed between compared sentence and comparing sentence, तत् = that, दृष्टान्तः = called Drishtanta , अलङ्कृतिः = the figure of speech.

An image is seen as a reflection in a mirror. That is the sense of image and reflection. Even though the compared sentence and the comparing sentence are different, if the sense of image and reflection is described between them, it is the figure of speech Drishtanta.

Property : त्वमेव कीर्तिमान् राजन् विधुरेव हि कान्तिमान्॥

राजन् = O king ! त्वम् एव = only you, कीर्तिमान् = an illustrious one,, विधुः एव हि = the moon himself, कान्तिमान् = glorious one.

O king! Only you are the illustrious one. The moon himself is the glorious one.

**Explanation :** Here, the sentence, you are the illustrious one is the sentence which is compared. The sentence 'The moon himself is the glorious one' is the sentence which is comparing. The particularity in this is that the king is being compared to the moon and the fame is to the moonlight. The sense of image and reflection is described for these two sentences and causes amusement. Hence, this is the figure of speech called Dristhtanta.

**లక్షణం :** प्रस्तुताप्रस्तुतानां च तुल्यत्वे दीपकं मतम्।

ప్రస్తుతం అంటే వర్ణించదగ్గ విషయం. దానికి భిన్నమైంది అప్రస్తుతం. प्रस्तुत + अप्रस्तुतानां च = ప్రస్తుతములకు మరియు అప్రస్తుతములకు, तुल्यत्वे = సమానత్వం అంటే ఒక ధర్మం వర్ణింపబడినట్లైతే, दीपकं = దీపకం అనే అలంకారం, मतम् = ఇష్టమైనది

ప్రస్తుతములకు, అప్రస్తుతములకును ఒక్కటే ధర్మం వర్ణింపబడినట్లైతే అది దీపకం అనే అలంకారం.

**ఉదాహరణ :** मेधां बुधः सुधामिन्दुः बिभर्ति वसुधां भवान् ।

बुधः = పండితుడు, मेधां = బుద్ధికుశలతను, इन्दुः = చంద్రుడు, सुधां = అమృతమును, भवान् = నీవు, वसुधां = భూమిని, बिभर्ति = ధరించును,

ఓ రాజా! పండితుడు బుద్ధిని, చంద్రుడు అమృతాన్ని, నీవు భూమిని ధరించును.

**వివరణ :** ఈ ఉదాహరణ వాక్యంలో ప్రస్తుతం రాజు. పండితుడు, చంద్రుడు అప్రస్తుతాలు. వాక్యంలో 'బిభర్తి' అనే క్రియాపదం 'ధరించుట' అను ఒకే ధర్మాన్ని ప్రస్తుతమైన రాజుకు, అప్రస్తుతాలైన పండితునికి, చంద్రునికి అన్వయించేట్లు ప్రయోగింపబడింది. కావున ఇది దీపకాలంకారం.

## 5.अप्रस्तुतप्रशंसा

**अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात्सा यत्र प्रस्तुताश्रया।**
**एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते।।**

**Property :** अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात् सा यत्र प्रस्तुतानुगा।

सा =that (praise of irrelevant object), यत्र = ఎక్కడ, प्रस्तुत + अनुगा = that follows the relevant object, (that),, अप्रस्तुतप्रशंसा = irrelevant priasse, स्यात् = takes place.

Praise means description. If irrelevant praise indicates the relevant object, It causes amusement. When the irrelevant object is used in direct meaning and the relevant object is described in indirect meaning through it, is called the figure of speech called Aprastuta Prasamsa. (When the description of non-contextual thing leads to the comprehension of the contextual, the figure of speech called aprastuta prasamsa takes place.)

**Example :** एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते।

शकुन्तेषु = among birds, यः = which one, शक्रात् = except Indra, अन्यं = the other one, न याचते = (that) does not plead, (सः= that bird), एकः = only that bird, कृती = the best one.

The bird (Chataka), which doesn't plead others except Indra, is only the best one.

Explanation : A mendicant who had self - respect came to the king and said these words - "The bird Chataka, which desires noghting except the raindrops shouwered by Indra, is the best one". Here the account of the Bird Chataka is irrelevant. Through this, the account of the mendicant who had self-respect is revealed as the relevant thing in a sarcastical manner as follows : "O king! the mendicant who never depends on other charitable person except you is the best one". Hence, this is the figure of speech 'Aprastuta Prasamsa'.

ఓ ప్రియురాలా ! సున్నితమైన నీ పాదాలు నేలపై నడవటం వల్ల ఎర్రబడ్డాయి. అక్కడ నాయిక యొక్క పాదాలకు ఎర్రదనం సహజం. కాని కవి అవి నేలపై ఉంచటం వల్ల ఎర్రబడ్డాయి. అవి హేతువును సంభావన చేయటం వల్ల ఇది హేతూత్ప్రేక్ష.

ఈ అలంకారంలో గుర్తుంచుకోవలసిన అంశాలు

1. ఈ అలంకారంలో కవి కల్పితమైన ఊహకు ప్రాధాన్యం ఉంది.
2. मन्ये, शङ्के, ध्रुवम्, प्रायः, नूनम्, इव మొదలైన పదాలు ఉత్ప్రేక్షను సూచించేవిగా ప్రయోగింపబడతాయి.

## 4.दीपकम्

The figure of speech called Deepakam is quite significant दीपयति इति दीपकम् is this is the origination. It means 'Which brighters.' The lamp placed at the doorsill of a house illuminates the rooms of the house as well as outside the house. In the same way, the verb phrase in a sentence conveys the irrelevant thing apast from the relevant one. So this figure of speech is called 'Deepakam'.

**प्रस्तुताप्रस्तुतानां च तुल्यत्वे दीपकम् मतम्।**
**मेधांबुधः सुधामिन्दुः बिभर्ति वसुधां भवान् ॥**

**Property :** प्रस्तुताप्रस्तुतानां च तुल्यत्वे दीपकं मतम्।

Relevant thing means the topic to the described. The irrelevant thing is different from it. प्रस्तुत + अप्रस्तुतानां च =for the relevant and irrelevant things. तुल्यत्वे = if the same property is applied, दीपकं =the figure of speech called 'deepakam', मतम् = takes place.

If the same property is applied to the relevant and irrevant things, it is the figure of speech called 'Deepakam'.

Example : मेधां बुधः सुधामिन्दुः बिभर्ति वसुधां भवान् ।

बुधः = scholar, मेधां = intelligence, इन्दुः = the moon, सुधां = elixir,, भवान् = you, वसुधां = the earth, बिभर्ति = possess.

O king ! A scholar has intelligence, the moon possesses elixir and you, the earth.

**Explanation :** In this example sentence, the relevant object is the king. The scholar and the moon are the irrelevant ones. The verb बिभर्ति in the sentence is used in such a way that the property of possessing is applied the relevant object the king and the irrelevant ones the scholar and the moon. Hence, it is the figure of speech 'Deepakam".

## 4.दीपकम्

'దీపకమ్' అను అలంకారం విశిష్టమైంది.

दीपयति इति दीपकम् అని వ్యుత్పత్తి. దీపం వలె ప్రకాశింపజేసేది అని అర్థం. ఇంటి గడపపై పెట్టబడిన దీపం ఇంటిలోని గదుల్ని, దానితోపాటు బయట మార్గాన్ని ప్రకాశింపజేస్తుంది. దీనినే 'దేహలీదీపన్యాయం' అంటారు. ఆ విధంగానే వాక్యంలోని ఒక్కటే క్రియాపదం ప్రస్తుతంతోపాటు అప్రస్తుత విషయాన్ని కూడా తెలియజేస్తుంది. కాబట్టి ఈ అలంకారానికి 'దీపకం' అని పేరు.

**प्रस्तुताप्रस्तुतानां च तुल्यत्वे दीपकम् मतम्।**
**मेधांबुधः सुधामिन्दुः बिभर्ति वसुधां भवान् ॥**

But the poet imagined the cause that they became red as they (her feet) were placed on the ground. Hence, it is Hetutpreksha.

Points to be remembered regarding this figure of speech :

1. In this figure of speech, the poet's imagination plays a vital role.
2. The words मन्ये, शङ्के, ध्रुवम्, प्रायः, नूनम्, इव etc. are used indicating Utpreksha.

## 3.उत्प्रेक्षा

'ఉత్ప్రేక్ష' అంటే సంభావన లేక ఊహ అని అర్థం. 'ఉద్గతా ప్రేక్షా - ఉత్ప్రేక్షా' అని వ్యుత్పత్తి. పైకి చూచుట అని అర్థం, వాస్తవం కంటే భిన్నంగా ఆలోచించటమని భావం.

**उत्प्रेक्षोन्नीयते यत्र हेत्वादिर्निह्नुतिं विना ।**

**त्वन्मुखश्रीकृते नूनं पद्मैर्वैरायते शशी ॥**

ఇక్కడ పూర్వార్థం అలంకార లక్షణం వర్ణిస్తుంది. ఉత్తరార్థం ఉదాహరణను తెలియజేస్తుంది.

**లక్షణం :** उत्प्रेक्षोन्नीयते यत्र हेत्वादिर्निनुतिं विना ।

यत्र = ఎక్కడ, निह्नुतिं विना = కప్పిపుచ్చకుండగా (దాచకుండగా), हेत्वादिः = హేతువు మొదలైనవి (స్వరూపము, హేతువు, ఫలము), उन्नीयते = ఊహించబడునో (అది), उत्प्रेक्षा = ఉత్ప్రేక్ష అను అలంకారము

ఎక్కడ కవి ఉపమేయానికి సంబంధించిన స్వరూపం, హేతువు, ఫలం దాచకుండా స్పష్టంగా ఊహించి వర్ణిస్తాడో అది 'ఉత్ప్రేక్ష' అనే అలంకారం. ఈ అలంకారంలో కవి కల్పన ప్రాధాన్యం వహిస్తుంది.

**ఉదాహరణ :** त्वन्मुखश्रीकृते नूनं पद्मैर्वैरायते शशी ॥

ఒక నాయకుడు నాయిక యొక్క ముఖసౌందర్యం ఇలా వర్ణిస్తున్నాడు -

शशी = చంద్రుడు, नूनं = నిశ్చయంగా, त्वत् + मुखश्रीकृते = నీ ముఖకాంతి కొరకు, पद्मैः = తామరపూలతో, वैरायते = శత్రుత్వం వహిస్తున్నాడు

ఓ ప్రియురాల ! నీ ముఖసౌందర్యం పొందటం కోసం నిశ్చయంగా చంద్రుడు తామరపూలతో వైరం తెచ్చుకున్నాడు.

**వివరణ :** ఉదాహరణలో నాయిక యొక్క ముఖసౌందర్యం ఫలం. ఆమె ముఖకాంతి పద్మాలలోనే కన్పిస్తోంది. చంద్రునిలో కాదు. అందువల్ల ఆమె ముఖసౌందర్యం పద్మాల నుండి పొందుటకు వానితో వైరం పెట్టుకున్నాడని కవి సంభావన. చంద్రుడు ఉదయించే సమయంలో పద్మాలు ముడుచుకుంటాయన్న ప్రకృతి సహజ ధర్మాన్ని అనుసరించి కవి - ఆమె ముఖసౌందర్యం పొందదలచి చంద్రుడు పద్మాలతో వైరం పెట్టుకున్నాడని ఊహ చేశాడు. కావున ఇది ఫలోత్ప్రేక్ష అనే అలంకారం.

ఈ విధంగానే స్వరూపోత్ప్రేక్ష, హేతూత్ప్రేక్ష అనే భేదాల్ని కూడ తెలుసుకోవచ్చు.

**స్వరూపోత్ప్రేక్ష :** लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।

तमः = చీకటి, अङ्गानि = శరీరావయవాలను, लिम्पति इव = పూత పూస్తోందా అన్నట్లు, नभः = ఆకాశం, अञ्जनं = కాటుకను, वर्षति इव = వర్షిస్తున్నదా అన్నట్లు వ్యాపించింది).

దట్టంగా ఉండటం, వస్తువుల్ని కప్పివేయటం (ఆచ్ఛాదకత్వం) చీకటి స్వరూపం. ఆ స్వరూపం కాటుక కురుస్తున్నదా అన్నట్లు, లేపనం చేస్తోందా అన్నట్లు అని కవి ఊహచే చమత్కారం కల్గిస్తోంది. అందుకే ఇది స్వరూపోత్ప్రేక్ష.

**హేతూత్ప్రేక్ష :** रक्तौ तवाङ्घ्री मृदुलौ भुवि विक्षेपणात् ध्रुवम्।

तव = నీ యొక్క, मृदुलौ = సుకుమారములైన, अङ्घ्री = పాదములు, ध्रुवं = నిశ్చయంగా, भुवि = నేలపై, विक्षेपणात् = ఉంచుట వలన, रक्तौ = ఎర్రబడినవి.

Here the first half conveys the property of the figure of speech. The latter half provides an example.

Property : उत्प्रेक्षोऽन्नीयते यत्र हेत्वादिर्निह्नुतिं विना ।

यत्र = Where, निह्नुतिं विना = Without concealing (as it is), हेत्वादि: = Cause, etc (nature, cause, effect), उन्नीयते = Imaginable (that) , उत्प्रेक्षा = the figure of speech called 'Utpreksha'.

If the poet imagines and describes the nature, cause and effect of Upameya as it is vidly, it is the figure of speech 'Utpreksha'. In this figure of speech, the poet's magination plays a vital role.

Phalotpreksha : त्वन्मुखश्रीकृते नूनं पद्मैर्वैरायते शशी ॥

A male protagonist (hero) is describing the beauty of a female protagonist (heroine) as follows.

చంద్రుడు,నిశ్చయంగా,నీ ముఖకాంతి కొరకు, తామరపూలతో,శత్రుత్వం వహిస్తున్నాడు

शशी = the man, नूनं = certainly, त्वत् + मुखश्रीकृते = for your facial glow, पद्मै: = with lotus flowers, वैरायते = be hostile.

O dear one ! The moon is hostile towards lotus flowers in pursuit of gaining your facial glow.

**Explanation :** In the example, the effect is the female protagonist's (heroine's) facial beauty. Her facial glow is seen lotuses, not in the moon. So the poet says that the moon is hostile towards the lotuses in order to gain her facial beauty from them. It is the nature's property that lotuses close at the time of the moon's rise. Following this, the poet magined that the moon is hostile towards the lotuses in pursuit of her facial beauty. Hence, it is the figure of speech 'Phalotpreksha'.

In the same manner, we can different between Swaroopotpreksha and Hetutpreksha.

Swaroopotpreksha : लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।

तम: = Darkness, अङ्गानि = parts of the body, लिम्पति इव = as if it is smearing, नभ: = the sky, अञ्जनं = eye slave, वर्षति इव = spread as if it is raining

చీకటి, శరీరావయవాలను, పూత పూస్తోందా అన్నట్లు, ఆకాశం, కాటుకను, వర్షిస్తున్నదా అన్నట్లు వ్యాపించింది)

The nature of darkness is being dense and enwrapping the objects. That nature causes amusement by the poet's imagination as if the eyesalve is raining and smearing. That's why, it is Swaroopotpreksha.

Hetutpreksha : रक्तौ तवाङ्घ्री मृदुलौ भुवि विक्षेपणात् ध्रुवम्।

तव = your, मृदुलौ = tender, अङ्घ्री = feet, ध्रुवं = certainly, भुवि = on the ground, विक्षेपणात् = by placing, रक्तौ = became red

O dear one ! Your feet became red as you walked on the ground. Here the redness for the heroine's feet is natural.

Another Example : गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः।

रामरावणयोर्युध्दं रामरावणयोरिव॥

The sky is like the sky. The sea is like the sea. The war between Rama and Ravana is same as the war between Rama and Ravana. Here the sky, the sea and the war between Rama and Ravana three are Upameyas. These three are compared with those three only. Hence, it is the figure of speech 'Ananvaya'.

## 2.अनन्वयः

'అనన్వయం' అను అలంకారం విలక్షణమైంది.

**उपमानोपमेयत्वे यत्रैकस्यैव वस्तुनः ।**

**इन्दुरिन्दुरिव श्रीमान् इत्यादौ तदनन्वयः ॥**

ఈ శ్లోకంలో పూర్వార్థం అలంకార లక్షణాన్ని, ఉత్తరార్థం ఉదాహరణను వర్ణిస్తాయి.

**లక్షణం** : उपमानोपमेयत्वे यत्रैकस्यैव वस्तुनः।

यत्र = ఎక్కడ, एकस्य वस्तुनः एव = ఒక వస్తువునకే, उपमान + उपमेयत्वे = ఉపమానత్వం మరియు ఉపమేయత్వం (వర్ణింపబడునో), तत् = అది, अनन्वयः = అనన్వయం అను అలంకారం.

ఒకే వస్తువునకు ఉపమాన ధర్మం, ఉపమేయ ధర్మం రెండూ వర్ణింపబడితే అది అనన్వయాలంకారం. ఉపమానం, ఉపమేయం - రెండూ వేరు వేరు వస్తువులు. ఉపమేయ వస్తువుకు ఉపమానంతో సంబంధమే అన్వయం. ఈ అలంకారంలో ఉపమేయమే ఉపమానంగా కూడ వర్ణింపబడటం వల్ల అన్వయం ఉండదు. అందుకే ఇది 'అనన్వయం' అని ప్రసిద్ధికెక్కింది.

न अन्वयः उपमानान्तरेण सह सम्बन्धः यस्य, स अनन्वयः।

**ఉదాహరణ** : इन्दुरिन्दुरिव श्रीमान्।

इन्दुः = చంద్రుడు, इन्दुः इव = చంద్రుని వలె, श्रीमान् = కాంతి కలవాడు.

చంద్రుడు చంద్రుని వలెనే కాంతిమంతుడు.

**వివరణ** : ఈ ఉదాహరణలో చంద్రుడు ఉపమేయం. చంద్రుణ్ణి పోల్చుటకు వేరొక వస్తువు అంటే ఉపమానం లేకపోవటం వల్ల చంద్రునికే ఉపమేయ ధర్మం, ఉపమానధర్మం రెండూ వర్ణింపబడ్డాయి. అంటే చంద్రునకు సాటి చంద్రుడే అను భావం తెలియజేస్తుంది ఈ వాక్యం. అందుకే ఇది అనన్వయాలంకారం.

**వేరొక ఉదాహరణ** : गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः।

रामरावणयोर्युध्दं रामरावणयोरिव॥

**వివరణ** : ఆకాశం ఆకాశం వంటిది. సముద్రం సముద్రం వంటిది. రామరావణుల యుద్ధం రామరావణుల యుద్ధం వంటిదే. ఇక్కడ ఆకాశం, సముద్రం, రామరావణుల యుద్ధం మూడూ ఉపమేయములే. ఈ మూడింటినీ ఆ మూడింటితో పోల్చి వర్ణించటం జరిగింది. అందుకే ఇది అనన్వయాలంకారం.

## 3.उत्प्रेक्षा

'Utpreksha' means thinking or imagination **उत्प्रेक्षा प्रेक्षा - उत्प्रेक्षा** this is the origination. It means looking upwards. It also means thinking differently than reality.

**उत्प्रेक्षोन्नीयते यत्र हेत्वादिर्निह्नुतिं विना ।**

**त्वन्मुखश्रीकृते नूनं पद्मैर्वैरायते शशी ॥**

ఉదాహరణ : हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गङ्गामवगाहते।

कृष्ण = ఓ కృష్ణ, ते = నీ యొక్క, कीर्तिः = కీర్తి, हंसी इव = హంస వలె, स्वर्गङ्गाम् = ఆకాశగంగను, अवगाहते = ప్రవేశించును

ఓ కృష్ణ ! నీ కీర్తి హంస వలె స్వచ్ఛమై ఆకాశగంగలో మునకలు వేస్తోంది.

వివరణ : ఉపమాలంకారములో నాలుగు భాగాలు ఉంటాయి. 1. ఉపమానం, 2. ఉపమేయం, 3. సాధారణ ధర్మం 4. ఉపమావాచకం. ఇక్కడి ఉదాహరణలో - హంస ఉపమానం ; కృష్ణుని కీర్తి ఉపమేయం, స్వర్గంలో మునకలు వేయుట సాధారణ ధర్మం : 'इव' (వలె) అనే పదం ఉపమావాచకం. ఉదాహరణ వాక్యంలో ఈ నాలుగు భాగాలు ఉండుట వల్ల, కృష్ణుని కీర్తి హంస వలె స్వచ్ఛంగా ఉండి ఆకాశగంగ దాక వ్యాపించిందని చక్కని పోలికతో చమత్కారం కలిగించటం వల్లనూ ఇది ఉపమాలంకారం.

**ఉపమేయం :** పోల్చబడే వస్తువు / వ్యక్తి - ఉదా : కీర్తి

**ఉపమానం :** ఏ వస్తువుతో పోలుస్తామో అది - **ఉదా :** హంస

**ఉపమావాచకం :** 'వలె' అను అర్థాన్ని ఇచ్చే శబ్దాలు इव, वत्, यथा మొదలైనవి.

## 2.अनन्वयः

The figure of speech called 'Ananvaya' is peculiar.

**उपमानोपमेयत्वे यत्रैकस्यैव वस्तुनः ।**
**इन्दुरिन्दुरिव श्रीमान् इत्यादौ तदनन्वयः ॥**

In this verse, the first half describes the property of the figure of speech and the latter half, the example.

Property : उपमानोपमेयत्वे यत्रैकस्यैव वस्तुनः।

यत्र = Where, एकस्य वस्तुनः एव = to only one thing, उपमान + उपमेयत्वे = the property of Upamana and the property of Upameya are described तत् = that, अनन्वयः = The figure of speech called Ananvaya.

If the properties of both Upamana and Upameya are described to only one thing, it is the figure of speech called Ananvaya.

Upamana and Upameya are different. The relation and them is Anvaya (concordance or agreement). In this figure of speech), there is no concordance since the very Upameya is described as Upamana also. That's why, it is known as 'Ananvaya'.

न अन्वयः उपमानान्तरेण सह सम्बन्धः यस्य, स अनन्वयः।

**Ex :** इन्दुरिन्दुरिव श्रीमान्।

इन्दुः = The moon, इन्दुः इव = like the moon, श्रीमान् = brighter one.

The moon is brighter same as the moon.

In this example, the moon is Upameya. Since there is no other object, i.e., Upamana to compare the moon, both the properties of Upameya and Upamana are used for the very moon. This sentence conveys that the moon's peer is the moon himself. Tha why, it is the figure of speech 'Ananvaya'.

# 1.उपमा

The figure of speech 'Upama' (Simile) is like the mother of all figures of speech.

**उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः।**
**हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गङ्गामवगाहते ॥**

The first half of this verse describes the property of the figure of speech. The latter half furnishes an example sentence.

Property : उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीः उल्लसति द्वयोः।

यत्र = Where, द्वयोः = between the two (between Upamana – the object to which a thing is compared and Upama – an object which is to be compared), सादृश्य लक्ष्मीः =grace of equal glow, i.e. common law that causes amusemen, उल्लसति = that which glows उपमा = the figure of speech called Upama (Simile).

Example : हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गङ्गामवगाहते।

कृष्ण = Oh Krishna, ते = your कीर्तिः = fame, हंसी इव = like a female swan, स्वर्गङ्गाम् = Akashganga (the Galaxy or the Milky Way), अवगाहते = enters.

O Krishna ! Your fame is pure like a swan and is taking a dip in the Galaxy.

**Explanation :** There are four parts in the figure of speech 'Upama'. They are 1. Upamana 2. Upameya 3. Common law 4. Upamavachaka.

Here in this example, Upamana – swan; Upameya – Lord Krishna's fame; Common law – taking a dip in the Galaxy; Upamavachaka – the word 'like' (इव)

These four parts are there in the example sentence. Besides, it causes amusement by a nice comparison, i.e. The Lord Krishna's fame is pure like a swan and spreads till the Galaxy. Hence, it is the figure of speech called Upama.

**Upameya :** A thing/person which is to be compared. **Ex :** fame

**Upamana :** The object to which a thing is compared. **Ex :** swan

**Upamana :** The words which mean 'like'. Ex : **इव, वत, यथा** etc.

# 1.उपमा

'ఉపమ' అనే అలంకారం అర్థాలంకారాలకు అన్నింటికి తల్లి వంటిది.

**उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः।**
**हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गङ्गामवगाहते ॥**

ఈ శ్లోకం మొదటి సగం అలంకార లక్షణాన్ని వర్ణిస్తుంది. రెండవ సగం ఉదాహరణ వాక్యంగా నిలుస్తుంది.

**లక్షణం :** उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीः उल्लसति द्वयोः।

यत्र = ఎక్కడ, द्वयोः = రెంటి మధ్య – ఉపమాన ఉపమేయముల మధ్య, सादृश्य लक्ष्मीः = సమాన ధర్మము యొక్క శోభ అంటే చమత్కారం కలిగించే సమానధర్మం, उल्लसति = ప్రకాశించునో (అది), उपमा = 'ఉపమ' అను అలంకారం ఎక్కడ ఉపమాన – ఉపమేయముల మధ్య సమానధర్మం చమత్కారం కలిగించేటట్లు స్పష్టంగా వర్ణింపబడ్తుందో అ ఉపమాలంకారం.

चतुर्थविभागः (UNIT - IV) SEMESTER - III

# अलङ्कारः, महाकविशास्त्रकारः विभागः

## 5. अलङ्काराः అలంకారాలు (FIGURES OF SPEECH)

**'अलंक्रियते अंगी अनेन' इति अलंकारः** This is the etymology of the word 'Alankara' (Figure of Speech). The body is adorned by this so it is called Alankara. The work 'Alankara' conveys Sabdalankaras and Arthalankaras. In poetry, the figure of speech is embodied and nurtures the rasa, etc.

Poetry is a beautiful woman and semantics are her body, Rasa (the emotional state of mind) and sound are like soul. The ornaments like necklace, bracelet/anklet, etc. worn by a woman further enhance the beauty of the body and create a sense of self–elevation. Also in poetry, Yamakam, Anuprasa (Alliteration), Upama (Simile), Roopaka (Metapho), etc. add more charm to the poetic semantics and thereby enrich the rasas and the like which are the soul of the petry. Literary scholars say that only when these figures of speech are useful not only for the semantic intrigue but also for the completeness of rasathea, it has a significance.

Bharata Muni, one of the foremost Indian writers mentions only four figures of speech in his Natyasastra. In later times, their number increased manifold and now more than hundred figures of speech are giving wings to the poet's imagination power and beautifying the poetic world. Some of the most important of them are prescribed for the syllabus.

**'अलंक्रियते अंगी अनेन' इति अलंकारः** 'అలంక్రియతే అంగీ అనేన' ఇతి అలంకారః ఇది అలంకార శబ్ద వ్యుత్పత్తి. దీనిచే దేహి అలంకరింపబడును కాబట్టి అలంకారమని పేరు. అలంకార శబ్దం శబ్దాలంకారాలను, అర్థాలంకారాలను తెలియజేస్తుంది. కావ్యంలో అలంకారం అంగరూపంగా ఉండి అంగి అయిన రసాదుల్ని పోషిస్తుంది.

కావ్యం ఒక అందమైన కాంత అయితే శబ్దార్థాలు ఆమె శరీరం వంటివి. రసం, ధ్వని ఆత్మ వంటివి. స్త్రీ ధరించే హారం, నూపురం మొదలైన అలంకారాలు శరీర సౌందర్యాన్ని మరింత ఇనుమడింపజేస్తూ ఆత్మోత్కర్షను కలిగిస్తాయి. అలాగే కావ్యంలో కూడా యమకం, అనుప్రాసం, ఉపమా, రూపకం మొదలైనవి కావ్యశరీరమైన శబ్దార్థాలకు మరింత శోభను చేకూర్చి తద్వారా కావ్యాత్మ అయిన రసాదుల్ని పరిపుష్టం చేస్తాయి. ఈ అలంకారాలు శబ్దార్థ చమత్కారాన్ని కలిగించటంతోనే తృప్తిచెందక రసభావపుష్టికి ఉపకరించినప్పుడే సార్థకత కలుగుతుందని సాహిత్య శాస్త్రవేత్తలు పలికారు.

భారతీయ సాహిత్యశాస్త్రకర్తల్లో ప్రథముడైన భరత ముని తన నాట్యశాస్త్రంలో నాలుగు అలంకారాల్ని మాత్రమే పేర్కొన్నాడు. తర్వాతి కాలంలో శాఖోపశాఖలుగా వర్ధిల్లి నూటికి పైగా అలంకారాలు కావ్యజగత్తులో కవుల భావనా శక్తికి వన్నెలద్దుతున్నాయి. వానిలో ముఖ్యమైనవి కొన్ని పాఠ్యాంశంగా నిర్దేశించబడినవి.

శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు : ब्राह्मणः = పరబ్రహ్మ తత్వానికి, ओम् = ఓంకారమని, तत् = తత్ అనే శబ్దంతోనూ, सत् = సత్ అనే శబ్దంతోనూ కూడిన, त्रिविधः = మూడు విధాలైన, निर्देशः = సూచన, स्मृतः = చెప్పబడినది, तेन = ఆ కారణం చేత, ब्राह्मणाः = పండితులైన బ్రాహ్మణులు, वेदाः = వేదాలు, यज्ञाः = యజ్ఞాలు, पुरा = పూర్వకాలంలో, विहिताः = సృష్టించబడ్డారు.

భావం : ఓంకార స్వరూపమైన వేదాలు పరబ్రహ్మ నుంచి తెలియబడ్డాయి. బ్రాహ్మణులు, వేదాలు, యజ్ఞాలు తత్‌సత్ అనే శబ్దాలతో సృష్టించబడ్డాయి. కనుక ఈ మూడు శబ్దాలు పరబ్రహ్మ స్వరూపమైనవే.

## लघुसमाधानप्रश्नाः SHORT ANSWER QUESTIONS

**1. त्रिविधश्रद्धा का ?**

**स.** सात्त्विकी, राजसी, तामसी चेति त्रिविधा श्रद्धा।

సాత్వికీ, రాజసీ, తామసీ అనేవి మూడు రకాల శ్రద్ధలు.

**2. किं शरीरं तपः ?**

**स.** निराडंबरता, ब्रह्मचर्यमहिंसा शारीरं तपः उच्यते।

ఆడంబరం లేకపోవడం, బ్రహ్మచర్యం, అహింస అను వాటిని శారీరక తపములు అంటారు.

**3. सात्त्विक दानं किम् ?**

**स.** अनुपकारिणे, देशे, काले, पात्रे दातव्यमिति दीयमानं दानं सात्त्विकदानं भवति।

యోగ్యుడైన వ్యక్తికి, పవిత్ర ప్రదేశంలో, మంచి కాలంలో, ప్రతిఫలం కోరకుండా ఇచ్చే దానాన్ని సాత్విక దానం అంటారు.

**4. किं असत् उच्यते ?**

**स.** अश्रद्धया हुतं, दत्तं, तप्तं तपः इति सर्वं असत् उच्यते।

శ్రద్ధ లేకుండా చేసిన యాగం, దానం, తపము అసత్ (చెడ్డది) అని అంటారు.

अश्रद्धया कृतं तपः, होमः दानं इति सर्वं असत् भवति।

**5. त्रयः आहाराः के ?**

**स.** सात्त्विकाः, राजसाः, तामसाः चेति त्रयः आहाराः ।

సాత్వికములు, రాజసములు, తామసములు అనేవి మూడు రకాల ఆహారములు.

**6. वाङ्मयतपः किम् ?**

**स.** प्रियं हितं सत्यं अनुद्वेगकरं वाक्यं, स्वाध्यायाभ्यसनं इति वाङ्मयतपः उच्यते।

ఇతరులకు కష్టం కలిగించని సంతోషాన్ని కలిగించే సత్యమైన మాట, వేదాధ్యయనం అనేవి వాఙ్మయ తపస్సు

4. **देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।**
**ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥**

**శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు :** देव = దేవతలను, द्विज = బ్రాహ్మణులను, गुरु = గురువులను, प्राज्ञ = పండితులను, पूजनम् = పూజించడం, शौचम् = పరిశుభ్రత, आर्जवम् = కుటిల స్వభావం లేకపోవడం, ब्रह्मचर्यम् = బ్రహ్మచర్యం, अहिंसा = ప్రాణులను బాధించకపోవడం అనే గుణాలు, शारीरं = శరీరంతో చేసే, तपः = తపస్సు అని, उच्यते = చెప్పబడుతుంది.

**భావం :** దేవతలను, గురువులను, బ్రాహ్మణులను, పూజించడం పరిశుభ్రత, కుటిల స్వభావం లేకపోవడం, బ్రహ్మచర్యం, అహింస అనే గుణాలు శరీరంతో చేసే తపస్సు అవుతాయి.

5. **अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।**
**स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥**

**శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు :** अनुद्वेगकरम् = ఇతరులకు బాధ కలిగించని, सत्यम् = యథార్థమైన, प्रियहितम् = వినడానికి సంతోషం కలిగించేది, మేలు కలిగించేది, वाक्यम् = మాట, स्वाध्यायाभ्यसनम् = వేదాన్ని చదవడం, పారం చెప్పడం అనేవి, वाङ्मयं = నోటి మాట సాధనంగా చేసే, तपः = తపస్సు అని, उच्यते = చెప్పబడుచున్నది.

**భావం :** ఇతరులకు బాధ కలిగించని వినసొంపైన మేలు చేసే విధంగా మాట్లాడడం, వేద శాస్త్రాలను చదవడం, చదివించడం, వాక్కులతో చేసే తపస్సు.

6. **मनः प्रसादसौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।**
**भावसंशुद्धिरित्येतत् तपो मानसमुच्यते ॥**

**శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు :** मनः प्रसादः = విచారము, బాధ లేకుండా సంతోషమైన మనస్సు కలిగి ఉండడం, सौम्यत्वम् = అందరికీ మేలు జరగాలని కోరుకోవడం, मौनम् = మౌనంగా ఉండడం, आत्मविनिग्रहः = మనస్సును అదుపు చేసుకోవడం, भावसंशुद्धिः = ఇతరుల విషయంలో మోసం చేసే లక్షణం లేకపోవడం అనేవి, मानसम् = మనసుతో చేసే, तपः = తపస్సు అని, उच्यते = చెప్పబడుచున్నది.

**భావం :** దురాలోచన లేని ప్రశాంతమైన మనసు కలిగి ఉండడం, ఇతరుల మేలు కోరడం, మాట – మనస్సు అదుపులో ఉంచుకోవడం శుద్ధమైన భావం కలిగి ఉండడం ఇవి మనసుతో చేసే తపస్సు.

7. **दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।**
**देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥**

**శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు :** अनुपकारिणे = తనకు ఉపయోగపడతాడనే ఆలోచన చేయక, दातव्यम् इति = ఇవ్వాల్సిన అవసరం ఉన్నదని, यद्दानं = ఏ దానం, देशे = సరైన ప్రదేశంలో, काले = సరైన సమయంలో, पात्रे = యోగ్యుడైన వారికి చేసిన, तद्दानम् = ఆ దానమే, सात्त्विकं स्मृतम् = సత్త్వగుణం కలిగిన దానం అని చెప్పబడినది.

**భావం :** యోగ్యమైన తీర్థ స్థలాల్లో సంక్రాంతి వంటి పుణ్యకాలంలో యోగ్యులైన వారికి ప్రతిఫలం ఆశించకుండా ఇవ్వాలనే ఉద్దేశ్యంతో చేసిన దానం సాత్త్విక దానం అని చెప్పబడుతుంది.

8. **ओं तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।**
**ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥**

## శ్లోకాలు

1. **आयुः सत्त्वबलारोग्य सुखप्रीतिविवर्धनाः।**
**रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः**

కవి పరిచయం : ఈ శ్లోకం శ్రీ కృష్ణ భగవానుడు అర్జునుడికి చెప్పిన భగవద్గీతలోని 17వ అధ్యాయం అయిన శ్రద్ధాత్రయవిభాగయోగః లో సత్త్వగుణ ప్రధానమైన ఆహారం యొక్క గొప్పతనాన్ని చెప్పడానికి పేర్కొనబడినది. ఈ భగవద్గీతలోని వ్యాసుడు రచించిన మహాభారతంలోనిది.

ప్రతిపదార్థం : आयुः = జీవిత కాలాన్ని, सत्त्वं = నిలకడను, बलं = బలాన్ని, आरोग्यं = ఆరోగ్యాన్ని, सुखं = సుఖాన్ని, प्रीतिं = సంతోషాన్ని, विवर्धनाः = పెంపొందించేవి, रस्याः = రుచికరమైనవి (రసము కలిగినవి), स्निग्धाः = తేలికగా జీర్ణమయ్యేవి, स्थिराः = శరీరంలో సారంగా నిలిచేవి, हृद्याः = ఇష్టమైనవి అయిన, आहाराः = ఆహారములు, सात्त्विकप्रियाः = సత్త్వగుణం కలిగిన వారికి ఇష్టమౌతాయి.

**భావం :** సత్త్వగుణం కలిగినవారు తేలికగా జీర్ణమై బలాన్ని, ఆరోగ్యాన్ని పెంచే గుణం కలిగి సంతోషాన్ని కలిగించే రుచికరమైన ఆహారాన్ని ఇష్టపడతారు.

2. **कट्वाम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।**
**आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥**

శ్లోకంలోని మొదటి పాదంలో ఉన్న అతి అనే శబ్దం ఏడు పదాలకు అన్వయిస్తుంది.

**శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు :** अति कटु = మిక్కిలి కారమైనవి, अत्याम्ल = మిక్కిలి పులుపైనవి, अतिलवण = ఎక్కువ ఉప్పు కలిగినవి, अत्युष्ण = ఎక్కువ వేడి కలిగినవి, अति तीक्ष्ण = మిక్కిలి చేదైనవి (లేదా) గట్టివి, अतिरुक्ष = బాగా కఠినమైనవి (ఎండినవి), अतिविदाहिनः = బాగా వేడి కలిగినవి, आहाराः = ఆహారాలు, दुःख = దుఃఖాన్ని, शोक = శోకాన్ని, आमय = అజీర్ణాన్ని, प्रदाः = కలిగించేవి, राजस श्रेष्ठाः = రజోగుణ ప్రధానమైన వారికి ఇష్టమౌతాయి.

**గమనిక :** శ్లోకంలో దుఃఖ, శోక అనే రెండు పదాలు సమానార్థాలుగా కనిపిస్తాయి కానీ శరీరానికి కలిగిన బాధ దుఃఖం, తాత్కాలికము. శోకం మనసుకు కలిగిన బాధ ఎక్కువ కాలం ఉంటుంది.

**భావం :** ఏ రుచి అయినా ఎక్కువ మోతాదులో ఉన్నప్పుడు ఇష్టమైతే అది అజీర్ణానికి, అనారోగ్యానికి కారణమై బాధ కలిగిస్తుంది. కానీ తినేటప్పుడు తాత్కాలికమైన సంతోషం కలిగించే ఇలాంటి ఆహారాలు రజోగుణం కలవారికి ఇష్టమైనవి.

3. **यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।**
**उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥**

**శ్లోక ప్రతిపదార్థాలు :** यातयामं = వండిన తరువాత జాము గడిచినది (3 గంటలు), गतरसं = ఎండిపోయినది, पूति = పులిసినది, पर्युषितं = నిల్వ ఉన్నది, उच्छिष्टम् = ఎంగిలి అయినది, अमेध्यं = పవిత్రం కానిది (లేదా) పవిత్రం కాని ప్రదేశంలో వండినది, भोजनं = ఆహారం, तामसप्रियम् = తామసులకు ఇష్టమైనది.

**భావం :** తమో గుణం కలిగినవారు నిల్వ ఉన్న ఆహారాన్ని, పులిసిన పదార్థాలను, అపవిత్రమైన చోట పెరిగిన పుట్టగొడుగుల వంటి వాటిని ఇష్టంగా తింటారు.

5. **अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।**
**स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥**

**Meanings of the Words :** अनुद्वेगकरम् = that which doesn't hurt others, सत्यम् = truthful, प्रियहितम् = that which is pleasing to listen and beneficial, वाक्यम् = speech, स्वाध्यायाभ्यसनम् = recitation of the vedas, वाङ्मयं = done by the means of speech, तपः = austerity, उच्यते = (it is) said

**Meaning :** Truthful speech that doesn't disturb ( hurt) others, which is pleasing to listen and beneficial as well as the recitation of the Vedas...this is known as verbal austerity.

6. **मनः प्रसादसौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।**
**भावसंशुद्धिरित्येतत् तपो मानसमुच्यते ॥**

**Meanings of the Words :** मनः प्रसादः = having peace of mind sans sorrow and pain, सौम्यत्वम् = wishing others' well - being, मौनम् = silence, आत्मविनिग्रहः = self-control, भावसंशुद्धिः = lacking the nature of cheating others (gentleness), मानसम् = done by mind, तपः = austerity, उच्यते = (it is) said.

**Meaning :** The austerity of mind is said to be peace of mind, gentleness, silence, self-control and purity of heart.

7. **दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।**
**देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥**

**Meanings of the Words :** अनुपकारिणे = without any expectation of reward, दातव्यम् इति = that there is need to give, यद्दानं = the charity which (is done), देशे = at a proper place, काले = at an auspicious time, पात्रे = done to the eligible person, तद्दानम् = that very charity, सात्त्विकं स्मृतम् = (it is) said to be born of sattva.

**Meaning :** Charity that is given without any expectation of reward at proper holy places, at an auspicious time like Sankranthi, to a qualified recipient with the mentality that it should be given is said to be born of sattva.

8. **ओं तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।**
**ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥**

**Meanings of the Words :** ब्रह्मणः = to Supreme Brahmam, ओम् = Omkara, तत् = with the word 'tat', सत् = with the word' satt; त्रिविधः = three kinds of , निर्देशः = indication, स्मृतः = said, तेन = because of that reason, ब्राह्मणः = the erudite brahmanas, वेदाः = the Vedas, यज्ञाः = sacrifices, पुरा = in ancient time, विहिताः = (were) created

**Meaning :** The Vedas which are the embodiment of omkara emerged from the Supreme Brahman. In ancient times, the brahmanas, the Vedas and the sacrifices were manifested from the three words 'om', 'tat' and 'sat'. Therefore, 'om-tat-sat' is the three - fold symbol indicative of the Supreme Brahman.

**Meanings of the Words :** आयुः = longevity, सत्त्वं = energy, बलं = strength आरोग्यं = health, सुखं = comfort, प्रीति = delight, विवर्धनाः = that increase, रस्याः = delicious (succulent), स्निग्धाः = easily digested, स्थिराः = the ones that stand as essence in the body, हृद्याः = the ones that are dear, आहाराः = foods, सात्त्विकप्रियाः = are liked by those who have the quality of sattva

**Meaning :** Food that increase one's longevity, energy, strength, health, happiness and satisfaction, that is delicious, succulent, easily digested, wholesome and appealing is dear to those who have the quality of sattva.

2. **कट्वाम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।**
**आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥**

The word 'Ati' in the first line of the verse is applicable to seven words.

Note : The two words दुःख, शोक in the verse look like synonyms. Pain which is the discomfort caused to body is transient. Sorrow which is the discomfort caused to mind is perpetual.

**Meanings of the Words :** अति कटु = too pungent, अत्याम्ल = too sour, अतिलवण = too salty, अत्युष्ण = too hot, अति तीक्ष्णा = too bitter or pungent, अतिरुक्ष = too hard (dry), अतिविदाहिनः = that create a burning sensation, आहाराः = foods, दुःख = pain, शोक = sorrow, आमय = indigestion, प्रदाः = the ones that cause, राजस श्रेष्ठाः = are liked by those who have the quality of rajas,

**Meaning :** Food that is too bitter, too sour, too salty, too hot, too pungent, too dry and creates a burning sensation within, causes pain, sorrow and disease. Such food is dear to those who have the quality of rajas.

3. **यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।**
**उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥**

**Meanings of the Words :** यातयामं = (food) that is void of freshness, गतरसं = tasteless /dry, पूति = fermented, पर्युषितं =stale, उच्छिष्टम् = left by others , अमेध्यं = unholy (or cooked in an unholy place, भोजनं = food, तामसप्रियम् = favoured by those who have tamasa temparament.

**Meaning :** Food that is stale, tasteless, foul - smelling, rotten, left by others and unfit for sacrifice is dear to those who have tamasa temperament.

4. **देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।**
**ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥**

**Meanings of the Words :** देव = gods, द्विज = brahmanas, गुरु = preceptors, प्राज्ञ scholars, पूजनम् = to worship, शौचम् = purity, आर्जवम् = lacking crookedness (sincerity ब्रह्मचर्यम् = celibacy, अहिंसा = non-violence towards creatures in these qualities. शारी = done by the body, तपः = austerity, उच्यते = (it is) said.

**Meaning :** Proper Physical austerity consists of worshipping the gods, the brahmanas the spiritual masters and the scholars, as well as purity, sincerity, celibacy and non violence.

1) అర్జున విషాదయోగం, 2) సాంఖ్యయోగం, 3) కర్మయోగం, 4) జ్ఞానకర్మసన్యాసయోగం, 5) కర్మ సన్యాసయోగం, 6) ఆత్మ సంయమయోగం, 7) జ్ఞానవిజ్ఞానయోగం, 8) అక్షర పరబ్రహ్మ యోగం, 9) రాజ విద్యా రాజ గుహ్య యోగం, 10) విభూతియోగం, 11) విశ్వరూపసందర్శనయోగం, 12) భక్తి యోగం, 13) క్షేత్ర క్షేత్రజ్ఞ విభాగయోగం, 14) గుణత్రయ విభాగయోగం, 15) పురుషోత్తమ ప్రాప్తియోగం లేదా పురుషోత్తమయోగం, 16) దైవాసుర సంపద్విభాగయోగం, 17) శ్రద్ధాత్రయవిభాగయోగం, 18) మోక్షసన్యాసయోగం.

వీటిలో శ్రద్ధాత్రయవిభాగయోగం 17వ అధ్యాయం

శ్రద్ధాత్రయయోగ విభాగ సారం :

1. శ్రద్ధాత్రైవిధ్యం : అర్జునుడు భగవంతుణ్ణి ఇలా ప్రశ్నించాడు. శాస్త్రం ప్రకారం చేయకుండా ఎవరైనా శక్తి శ్రద్ధలు కలిగినవారై ఏదైనా యజ్ఞాలను గానీ, దేవపూజలను గానీ చేస్తే వారి శ్రద్ధ ఏ గుణానికి సంబంధించినది అవుతుంది ?

ఈ ప్రశ్న విని భగవంతుడు ఇలా చెప్పాడు -

1. శ్రద్ధాత్రైవిధ్యం : శ్రద్ధ మూడు విధాలుగా ఉంటుంది. 1. సాత్త్వికీ, 2. రాజసీ, 3. తామసీ.

సాత్త్వికులు దేవతలను, రాజసులు - యక్షులను, రాక్షసులను, తామసులు - ప్రేత, భూత, గణాలను పూజిస్తారు. ఎవరు శాస్త్రం పద్ధతిని ఆచరించక తపస్సు చేసి, హింసాదులను ఆశ్రయిస్తారో వారు రాక్షసులు అవుతారు. ఎవరికి సత్త్వగుణానికి ఆరోగ్యానికి అనుకూలమైన ఆహారాన్ని తింటారో వారి ఆహారం సత్త్వగుణానికి ప్రియమౌతుంది. ఉప్పు, కారం, ఎక్కువగా ఉండి, మిక్కిలి వేడి, మిక్కిలి చల్లనైన పదార్థాలను తింటారో వారి ఆహారం దుఃఖానికి రోగానికి కారణమై రజో గుణానికి ప్రియమైనది అవుతుంది. చల్లబడిపోయినది, ఎండినది, రుచి లేనిది, పాచి పోయినది అయిన ఆహారం తామసులకు ఇష్టమైనది అవుతుంది. ఆహారం లాగానే యజ్ఞ యాగాలు కూడా మూడు విధాలుగా ఉంటాయి. యజ్ఞం తప్పనిసరిగా చెయ్యాలని ఫలితం ఆశించక చేసిన యజ్ఞం సాత్త్విక యజ్ఞం. ఫలం కోరి చేసినది రాజస యజ్ఞం, శ్రద్ధ లేనిది తామస యజ్ఞం.

**2. మూడు రకాల తపస్సులు :** అలాగే తపస్సు కూడా మూడు విధాలుగా ఉంటుంది. నిరాడంబరంగా బ్రహ్మచర్యం, అహింసా పాటిస్తూ చేసేది శారీరక తపస్సు. ఇతరుల సంతోషాన్ని కలిగిస్తూ వారి మేలు కోరుతూ సత్యమే పలుకుతూ వేదాభ్యాసం, వేదపఠనం చేయడం వాఙ్మయమైన తపస్సు. నిర్మలమైన మనస్సు, సౌమ్య భావం, భావశుద్ధి కలిగి ఉండడం మానస తపస్సు. ఇలా చేసిన తపస్సులు మూడూ సాత్త్వికమౌతాయి. ఆడంబరం కోసం చేసేది రాజసం. మూర్ఖంగా చేసేది తామసమౌతుంది.

**3. మూడు రకాల దానాలు :** దానం కూడా మూడు విధాలుగా ఉంటుంది. తనకు ఉపకారం చేశాడు కనుక ఇవ్వాలి అనే ఉద్దేశ్యంతో కాకుండా ప్రతిఫలం ఆశించకుండా ఇచ్చే దానం సాత్త్వికం. ప్రతిఫలం కోరుకునే దానం రాజసం. ఎదుటి వారిని చులకనగా చూస్తూ అయోగ్యులకు ఇచ్చేదానం తామసం.

**4. పరమాత్మ త్రైవిధ్యం :** పరమాత్మ 1. ఓం 2. తత్ 3. సత్ అనే మూడు రూపాల్లో ఉంటుంది. ఆ పరమాత్మ స్వరూపమైన ఓంకారం బ్రాహ్మణులు, తత్ స్వరూపం వేదాలు, సత్ స్వరూపం యజ్ఞాలు. కనుకనే మొదట ఓం అనే ప్రణవాన్ని పలికి వేదాధ్యయనం యజ్ఞయాగాలు దానాలు చేయాలి. ఈ శ్రద్ధా త్రయ విభాగ యోగం తెలియడం వలన విద్యార్థులకు శ్రద్ధ పెరుగుతుంది. మద్యం, మాంసం మొదలైన వాటిని వదిలిపెట్టాలి. జ్ఞానం కలుగుతుంది. కనుక ఈ అధ్యాయం చదివి అందులో చెప్పిన ధర్మాలను ఆచరించాలి.

## श्लोकाः

1. **आयुः सत्त्वबलारोग्य सुखप्रीतिविवर्धनाः।**
   **रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः**

**Introduction :** This verse is extracted from 'Sraddhatraya Vibhaga Yoga', the seventeenth chapter of the Bhagavadgita. The significance of foods that are endowed with the quality of sattva is described in this verse.

like the food, sacrifice is also of three types. The sacrifice which is in accordance with the Vedic injunctions, (and is) performed by persons who do not hanker after results, is said to be done through sattva. The sacrifice which is performed having in view result is said to be done through rajas. The sacrifice which is said to be done through tamas if it is devoid of faith.

Similarly, austerity is also of three kinds. If it is done through celibacy without ostentation, followed by non-violence, it is said to be physical austerity. The one which makes others happy and wishes for their good and in which the truth alone is spoken and the practice of study of the scriptures is done, is said to be verbal austerity. Having tranquility of mind, gentleness, purity of heart is said to be mental austerity. The undertaken three fold austerity is said to be born of sattva. The austerity undertaken for ostentation is spoken of as born of rajas. The austerity undertaken with a foolish intent is said to be born of tamas.

Charity is also of three types. The charity that is given without any expectation of reward to a qualified recipient with the mentality that it should be given, is referred to be born of sattva. The charity that is given reluctantly, with the expectation of return with a selfish desire for results, is considered to be born of rajas. The charity that is given with disdain to an unworthy beneficiary, is said to be born of tamas.

The three words ***om tat sat*** are described by the Vedas to represent the Absolute Truth. The brahmanas, the Vedas and process of sacrifice were manifested from these three words. Therefore, those that seek the supreme always chant the syllable ***om*** when they commence sacrifices, give in charity, perform austerities and undertake other activities prescribed in the Vedas.

By studying this Sraddhatraya Vibhaga Yoga, students' concentration increases. They will have knowledge that liquor and meat should be forswom. Hence, one should read this chapter and follow the principles prescribed in it.

## निबन्धप्रश्नाः వ్యాసరూప ప్రశ్నలు

1. **श्रद्धात्रयविभागयोगस्य सारांशं लिखत।**
2. **भगवद्गीतायां सप्तदश अध्यायस्य सारं विशदयत ?**
3. **श्रद्धात्रयम् किं विशदयत ?**

स. **ఉపోద్ఘాతం :** అరణ్యవాసం తరువాత పాండవులు తమ రాజ్యభాగం ఇవ్వవలసినదిగా ధృతరాష్ట్రుని వద్దకు రాయబా పంపారు. మొదట ద్రుపదుని పురోహితుడు పాండవుల దూతగా వెళ్ళి రాజ్యభాగం కోరాడు. కౌరవుల త దూతగా వచ్చిన సంజయుడు ఫలితం చెప్పకుండానే అందరం కలసి ఉందాం రమ్మని మాత్రమే ధృతరాష్ట్ర సందేశంగా చెప్పారు. అప్పుడు కృష్ణుడు స్వయంగా పాండవుల దూతగా వెళ్ళి రాజ్యభాగం కోరినప్పటికీ దుర్యోధను సూది మొన మోపిన భూభాగం కూడా పంచి ఇవ్వనన్నాడు. యుద్ధం తప్పనిసరి అయ్యింది. పాండవుల పక్షా 7 అక్షౌహిణుల సేన, కౌరవుల పక్షంలో 11 అక్షౌహిణుల సేన యుద్ధానికి సిద్ధమయ్యాయి. యుద్ధ ప్రారం సమయంలో అర్జునుడు ఒక్కసారి భీష్మద్రోణాదులందరినీ చూచి వారిని చంపలేనని దైన్యంతో విల్లు వది యుద్ధం చేయనన్నాడు. అప్పుడు శ్రీకృష్ణుడు అర్జునుడికి కర్తవ్యమును ఉపదేశం చేయడానికి 18 అధ్యాయా భగవద్గీతను 700 శ్లోకాల్లో బోధించాడు.

ఒక్కొక్క విషయాన్ని గురించి అర్జునుడు వేసిన ప్రశ్నలకు భగవంతుడిచ్చిన సమాధానాలు 18 విభాగాలు ఉన్నందువలన జ్ఞానబోధకాలైన ఆ అధ్యాయాలకు యోగములు అని పేరు వచ్చింది. అలా భగవద్గీతను అధ్యాయాలుగా, 18 యోగాలుగా భగవంతుడు ఉపదేశించాడు.

# 4. भगवद्गीता - श्रद्धात्रयविभागयोगः

## निबन्धप्रश्नाः ESSAY QUESTIONS

1. **Write the summary of श्रद्धात्रय विभागयोगः।**
2. **Explain the essence of seventeenth chapter of Bhagavadgita.**
3. **What does श्रद्धात्रयम् explain ?**

A. **Introduction :** After the exile to forest (Vanavasa), the Pandavas sent embassy to Dhritarashtra for their share in the kingdom. At first, the priest of Drupada went as the ambassador of the Pandavas and asked for the share in the kingdom. Sanjaya who went as the ambassador from the side of the Kauravas did not announce the result. He said it was Dhritarashtra's message that all of them should live together. Then the Lord Srikrishna himself approached them as the peace embassy on behalf of the Pandavas and asked for the share in the kingdom. Yet Duryodhana denied to give even a bit of land to the Pandavas. The war became inevitable. The army of seven Akshauhinis on the Pandavas' side and the army of eleven Akshauhinis on the Kauravas' side were ready. At the outset of the war, Arjuna beheld once the venerable elders and his kinsmen Bhishma, Drona and the like, he dropped down his bow out of remorse and said that he would not fight the war. Then Srikrishna taught Arjuna the Bhagavadgita consisting of 18 chapters with 700 verses to elucidate him his duty.

As the answers given by the Lord to the questions asked by Arjuna on each topic are in 18 sections, those enlightening and didactic chapters are called Yogas. Thus the Lord taught the Bhagavadgita in 18 chapters and 18 Yogas.

1) Arjuna Vishada Yoga, 2) Sankhya Yoga, 3) Karma Yoga, 4) Gnana Karma Sanyasa Yoga, 5) Karma Sanyasa Yoga, 6) Atma Samyama Yoga, 7) Gnana Vignana Yoga, 8) Akshara Parabrahma Yoga, 9) Rajavidya Rajaguhya Yoga, 10) Vibhuti Yoga, 11) Viswarupa Sandarsana Yoga, 12) Bhakti Yoga, 13) Kshetra Kshetragna Yoga, 14) Gunatraya Vibhaga Yoga, 15) Purushottama Prapti Yoga or Viswarupa Yoga, 16) Daivasura Sampad vibhaga Yoga, 17) Sraddhatraya Vibhaga Yoga, 18) Moksha Sanyasa Yoga. Among them, the seventeenth chapter of the Bhagavadgita is Sraddhatraya Vibhaga Yoga.

**Essence of Sraddhatraya Vibhaga Yoga :**

**Arjuna said to the Lord :** What is the position of those that neglect the rules of the Vedas, yet worship with faith? Is such worship considered to be in the mode of goodness, passion or ignorance?

Listening to this question, the Lord replied : There are three divisions of faith - (1) sattva, (2) rajas and (3) tamas.

Those having the sattva quality worship the gods; those having the quality of rajas worship the demi-gods and ogres; and other people possessed of tamas worship ghosts and the hosts of spirits. Those who do not follow the procedure of the science and attract the ghosts etc by performing by penance will become demons. If someone eats food favourable to the sattva quality and health, their food will be endearing to the sattva quality. If someone eats food that are salty, very hot, pungent and very cold, their food causes pain and sorrow and will be endearing to the quality of rajas. Food which is remnant, dry, tasteless and stale is dear to one possessed of the quality of tamas. Just

4. **शिष्यानुशासनं कस्याम् उपनिषदि प्रोक्तम्?**

स. शिष्यानुशासनं कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयोपनिषदि प्रोक्तम्।

(శిష్యానుశాసనం కృష్ణ యజుర్వేదంలోని తైత్తిరీయోపనిషత్‌లో చెప్పబడింది.)

5. **काभ्यां न प्रमवितव्यम्?**

स. स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। (వేదమును చదువుట, చెప్పుటలో పొరపాటు కూడదు.)

6. **के दैवसमानाः ?**

स. मातृदेवो भव ! पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। (తల్లి, తండ్రి, గురువు దైవ సమానులు.)

## CORRECTION OF SENTENCES

III. **अधोनिर्दिष्टवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि प्रत्यभिजानीत।**

ఈ క్రింది వాక్యాలలో గుర్తించబడిన పదాలను సరైనవో కావో గుర్తించండి.

1. **वेदामनुच्याऽऽचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति।**

स. वेदमनूच्याऽऽचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति।

2. **सत्यान्न प्रमदितवत्यम्।**

स. सत्यान्न प्रमदितव्यम्।

3. **तानि सेवितानिव्यानि।**

स. तानि सेवितव्यानि।

4. **आचार्याय प्रियं धनं आहृत्य प्रजातन्तुं मां व्यवच्छेत्सीः।**

स. आचार्याय प्रियं धनं आहृत्य प्रजातन्तुं मां व्यवच्छेत्सीः।

✪✪✪

**3. स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।**

**కవి పరిచయము :** ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింపబడిన ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

**సందర్భము :** ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నాడు.

**భావము :** వేదమును చదువుటలోను, చెప్పుటలోను పొరపాటు పడకుము.

**4. स्वाध्यायान्माप्रमदः।**

**కవి పరిచయము :** ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింపబడిన ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

**సందర్భము :** ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నాడు.

**భావము :** స్వాధ్యాయమును నిర్లక్ష్యము చేయకు.

**5. श्रद्धया देयम्। आश्रद्धयाऽदेयम्।**

**కవి పరిచయము :** ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింపబడిన ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

**సందర్భము :** ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నాడు.

**భావము :** శ్రద్ధతో ఇమ్ము. అశ్రద్ధతో ఇవ్వద్దు.

**6. यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि।**

**కవి పరిచయము :** ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింపబడిన ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

**సందర్భము :** ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నాడు.

**భావము :** మేము ఏ కర్మల్ని బాగా ఆచరించామో, నీవు కూడ వానినే ఆచరించాలి.

**7. एष आदेशः। एष उपदेशः। ..... एतदनुशासनम्।**

**కవి పరిచయము :** ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింపబడిన ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

**సందర్భము :** ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నాడు.

**భావము :** ఇది ఆజ్ఞ. ఇది ఉపదేశం. ఇది శాసన వాక్యం.

## लघुसमाधानप्रश्नाः SHORT ANSWER QUESTIONS

**1. धर्ममूलं किम्?**

**स.** धर्ममूलं वेदः। (ధర్మ మూలం వేదం)

**2. 'उपनिषद्' इति शब्दस्य अर्थः कः ?**

**स.** उपनिषद् इति शब्दस्य अज्ञाननाशकः।

(ఉపనిషత్ అనే శబ్దానికి అజ్ఞాన నాశకుడు అని అర్థం) (లేదా) ఆత్మజ్ఞానప్రదాయక గ్రంథం అని అర్థం.

आत्मज्ञानप्रदायकः ग्रन्थः इत्यर्थः।

**3. प्रधानाः उपनिषदः कति सन्ति ?**

**स.** प्रधानाः उपनिषदः दश सन्ति। ప్రధానమైన ఉపనిషత్తులు పది కలవు.

4. **स्वाध्यायान्माप्रमदः।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson ''शिष्यानुवाकम्'' extracted from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commanding advising him the ethical way of life.

**Meaning :** Never neglect the self - study

5. **श्रद्धया देयम्। आश्रद्धयाऽदेयम्।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson ''शिष्यानुवाकम्'' extracte from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commanding advising him the ethical way of life.

**Meaning :** Give with respect. Do not give with disrespect. **(OR)** Gift should be given wi faith. It should never be given without faith.

6. **यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson ''शिष्यानुवाकम्'' extract from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commandin advising him the ethical way of life.

**Meaning :** Only those that are good acts to us should be performed by you, not oth

7. **एष आदेशः। एष उपदेशः। ..... एतदनुशासनम्।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson ''शिष्यानुवाकम्'' extrac from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commandin advising him the ethical way of life.

**Meaning :** This is the injunction. This is the teaching. This is the word of comman

## सन्दर्भवाक्यानि సందర్భవాక్యాలు

1. **सत्यं वद। धर्मं चर।**

కవి పరిచయము : ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింప ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

సందర్భము : ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నా

భావము : సత్యమును పలుకు. ధర్మమును ఆచరించు.

2. **मातृदेवो भव।**

కవి పరిచయము : ఈ వాక్యం తైత్తిరీయోపనిషత్తులోని శిక్షావల్లి ఏకాదశానువాకం నుండి గ్రహింప ''शिष्यानुशासनम्'' అను పాఠ్యభాగం నుండి స్వీకరింపబడింది.

సందర్భము : ఆచార్యుడు శిష్యునికి వేదమును బోధించిన తర్వాత ఈ విధంగా శాసనపూర్వకంగా ఉపదేశిస్తున్నా

భావము : తల్లియే దైవముగా కలవాడవగుము.

విద్య పూర్తి అయిన తర్వాత శిష్యుడు ఆచార్యునికి ఇష్టమైనది దక్షిణగా ఇచ్చి గృహస్థుడై సంతానం పొంది వంశక్రమం రక్షించాలి. సత్యం పలకటంలో గాని, ధర్మాచరణలో గాని, ఆత్మరక్షణలో గాని, శ్రేయస్సు కలిగించే కార్యాల్ని చేయటంలో గాని, దేవ - పితృకార్యాలలో గాని పొరపాటు పడకు. నిర్లక్ష్యం చేయకు. తల్లిని, తండ్రిని, గురువును, అతిథిని దైవంగా భావించి వారిని సేవించు.

**मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।**

నిందించదగ్గ పనులు విడిచిపెట్టి నిందించ వీలు లేని మంచి పనులనే చేయాలి. మేము చేసిన పనులలో ఏవి మంచివో గ్రహించి వానినే ఆచరించు. మేము పొరపాటున తప్పులు చేస్తే వానిని మాత్రం చేయకు. శ్రేష్ఠులైనవారు నీ ఇంటికి వస్తే ఆసనమిచ్చి సేవించి వారి శ్రమను పోగొట్టు. ఇతరులకేదైనా సరే శ్రద్ధతో ఇమ్ము. శక్తి కొలది ఇమ్ము. భయభక్తులతో ఇమ్ము. అతడెటువంటివాడో తెలుసుకొని ఇమ్ము.

**श्रद्धया देयम्। संविदा देयम्।**

ఇక నీకు ఎప్పుడైనా కర్మల ఆచరణ విషయంలోను, దోషులుగా పరిగణింపబడుతున్న వారి పట్ల ప్రవర్తించే విషయంలోను సందేహం కలిగితే, నీకు అందుబాటులో ఉన్న వివేకవంతులు, అనుభవజ్ఞులు, స్వతంత్రులు, దయాశీలురు, ధర్మపరాయణులు ఎట్లా ఆచరిస్తున్నారో పరిశీలించి నీవు కూడ ఆ విధంగా ఆచరించు.

ఇది ఆదేశం, ఇది ఉపదేశం, ఇది వేదసారం. ఈ విధంగానే నీవు ఆచరించాలి.

**एवं चैतदुपास्यम्।**

**ఉపసంహారం :** ఈ విధంగా ఉపనిషత్తు ద్వారా ఉపయోగకరమైన ఉపదేశంగా, తప్పకుండా ఆచరించదగ్గ ఆదేశంగా చెప్పబడిన విషయాలన్ని దైనందిన జీవితాన్ని ఆదర్శవంతంగా తీర్చిదిద్దేవి. దానివల్ల సమాజం శాంతిభరితమై విలసిల్లుతుంది.

## सन्दर्भवाक्यानि / ANNOTATIONS

**1. सत्यं वद। धर्मं चर।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson "शिष्यानुवाकम्" extracted from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commandingly advising him the ethical way of life.

**Meaning :** Speak the truth. Do your duty (righteousness).

**2. मातृदेवो भव।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson "शिष्यानुवाकम्" extracted from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commandingly advising him the ethical way of life.

**Meaning :** May the mother be thy God.

**3. स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson "शिष्यानुवाकम्" extracted from the eleventh anuvaka of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad.

**Context :** After preaching the Veda to the disciple, the preceptor is commandingly advising him the ethical way of life.

**Meaning :** Never swerve from the study and the teachings of the Veda.

be done, not others. If we commit wrongs by mistake, they should not be done by you. You should remove the fatigue of the superior persons when they visit your home by serving them with seats, etc. Gift should be given with faith. It should be given in plenty with modesty, with reverence and with sympathy. Having known what kind of person he is, you should give.

**श्रद्धया देयम्। संविदा देयम्।**

Now, if you have doubt regarding any action or conduct and the persons accused of sin, you should observe how the wise, experience, independent, magnanimous and righteous people who are within your reach act in those matters; you too should act accordingly.

This is the injunction. This is the teaching. This is the essence of the Vedas. Only this should be observed by you.

**एवं चैतदुपास्यम्।**

**Conclusion :** In this way, all the matters, revealed by the Upanishad as a useful preaching and an injunction to be certainly followed, paved the way for an ideal day-to-day life. By this the society will be peaceful and glorious.

## निबन्धप्रश्नाः వ్యాసరూప ప్రశ్నలు

1. **शिक्षावल्याः एकादशानुवाकस्य प्रयोजनं लिखत।**
   (శిక్షావల్లి యొక్క పదకొండవ అనువాకం యొక్క ప్రయోజనాలు వ్రాయుము.)
2. **गुरुः शिष्यान् किम् अनुशास्ति ?** (గురువు శిష్యుల్ని ఏమని అనుశాసించును?)
3. **शिष्यानुशासनम् इति पाठ्यांशस्य उपादेयताम् उपवर्णयत।**
   (శిష్యానుశాసనమ్ అనే పాఠ్యాంశంలోని గ్రహించదగ్గ విషయాల్ని వర్ణించండి.)

**स.** **పరిచయం :** భారతీయ తత్త్వశాస్త్రానికి తలమానికమైనవి 'ఉపనిషత్తులు'. ప్రధానములైన పది ఉపనిషత్తుల ఒకటైన తైత్తిరీయోపనిషత్తునందలి శిక్షావల్లియందున్న ఏకాదశానువాకం నుండి స్వీకరింపబడిన 'शिष्यानुशासन' అను పాఠ్యాంశం ఎంతో ప్రాధాన్యం కలది.

**పాఠ్యాంశ విశిష్టత-ప్రయోజనం :** వేదవిద్యనంతయూ చక్కగా బోధించి వివరించిన తర్వాత ఆచార్యుడు శిష్యు భవిష్యత్తులో పాటింపవలసిన నియమాల్ని, కర్తవ్యాల్ని, ఉదాత్తమైన ప్రవర్తనా విధానాన్ని శాసనపూర్వకం బోధిస్తాడు. అందుకే దీన్ని "అనుశాసన – అనువాకం" అంటారు.

బ్రహ్మచర్యాశ్రమంలో శిష్యుడు ఆచార్యుని వద్ద విద్యలన్నీ పూర్తి చేస్తాడు. అటుపై గృహస్థాశ్రమం అడుగుపెట్టబోతున్న దశలో విద్యార్థి ఎన్నో లౌకిక విషయాల్ని తెలుసుకోవలసి ఉంది. అట్టి సందర్భంలో ఆచార్యు బోధించవలసిన, దైనందిన జీవితానికి కావలసిన విలువైన విషయాల్ని ఉపనిషద్భాగమైన ఈ పాఠ్యాంశ విద్యార్థులకు అందిస్తుంది.

**ఆచార్యుని ఉపదేశం :** సత్యమును పలుకు. ధర్మాన్నే ఆచరించు. అధ్యయన విషయంలో పొరపాటు పడకు.

**सत्यं वद। धर्मं चर।**

# शिष्यानुशासनम्

## निबन्धप्रश्नाः ESSAY QUESTIONS

1. **Write the advantages of eleventh anuvaka of Shiksha Valli.**
2. **What does the preceptor teach the disciples?**
3. **Describe the topics that can be perceived from the lesson named 'Sishyanusasanam'.**
4. **Introduction :** Upanishads are the most excellent ones of Indian philosophy. This lesson named 'Sishyanuvakam', extracted from the eleventh anuvaka (a sub division of the vedas, a section or chapter) of Shiksha Valli in Taittiriya Upanishad which is one of the ten essetial Upanishads, is very significant.

**Significance and Advantage of the Lesson :** Having taught the Vedas, the preceptor exhorts the disciple commandingly regarding the principles, duties, genuine behavioral guidelines to be followed in future. That's why, this is called 'Anusasana Anuvakam'.

The disciples completes learning the education from the teacher during Brahmacharyasrama (celibacy). Later, the student has to know many worldly things at the stage when he enters Grihasthasrama (the position or phase of the householder). This lesson, a part of Upanishad, imparts the students invaluable pieces of advice which are to be taught by the teacher in that context and necessary for the day-to-day life.

**Teaching of the Preceptor :** Speak the truth. Do your duty (righteousness). Never swerve from the study of the Vedas.

**सत्यं वद। धर्मं चर।**

After completion of the studies, you should give the preception the fee he desires, get married and be blessed with offspring and protect the lineage. Never swerve from truth. Never swerve from duty. Never neglect your welfare. Never neglect your prosperity. Never swerve from duties to the gods and to men. May the mother be thy God. May the father be thy God. May the preceptor be thy God. May the guest be thy God.

**मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।**

Let only those actions that are free from blemish be done, not others. Only the good acts should be done by you, not others. What are good works of ours, they should

**Meaning :** Prajapathi taught the letter 'da' to each of them. They three understood it in their own way. Gods understood the letter dakara in the meaning of damyata, humans understood it in the meaning of datta while demons perceived it in the meaning of dayadhvam.

2. **दमं दानं दयामिति।**

**स.** **Introduction of the Author :** This sentence is extracted from the lesson **"उपनिषद् दकार कथा"**. Dakaratraya Katha is found to be the second story in the 3rd Brahmanam of 1st chapter of 5th Aranyaka (The Aranyakas are the part of the ancient Indian Vedas concerned with the meaning of ritual sacrifice). This sentence is found in that story.

**Context :** Gods, humans and demons quarrelled themselves and met Prajapathi as his disciples in order to attain peace. At that time, Prajapathi said these words to them.

**Meaning :** It means' 'Have damam (continence of senses), charity (generosity towards the poor) and mercy (kindly nature)'.

## सन्दर्भवाक्यानि సందర్భవాక్యాలు

1. **द द द - दाम्यत, दत्त, दयध्वमिति।**

**स.** కవి పరిచయం :ఈ వాక్యం **"उपनिषदादेशः"** అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. **बृहदारण्यक** ఉపనిషత్‌లో ఐదవ ఆరణ్యకాలంలోని 1వ అధ్యాయంలోని 3వ బ్రాహ్మణంలో 2వ కథగా దకార త్రయ క ఉన్నది. ఆ కథలోనిది ఈ వాక్యం.

**సందర్భము** – తమలో తాము కలహించుకొని శాంతి కొరకు తన వద్దకు శిష్యులుగా వచ్చిన దేవ, మనుష్య రాక్షసులతో ప్రజాపతి ఈ విధంగా పలికెను.

**భావం :** ప్రతి ఒక్కరికి విధిగా దా అనే అక్షరాన్ని మాత్రమే ప్రజాపతి ఉపదేశించారు. ఆ దకారాన్ని దేవతలు ఒ విధంగా దామ్యతా అని మనుషులు దత్త అని, రాక్షసులు దయధ్వం అని అర్థం చేసుకున్నారని భావం.

2. **दमं दानं दयामिति।**

**स.** కవి పరిచయం :ఈ వాక్యం **"उपनिषदादेशः"** అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. **बृहदारण्यक** ఉపనిషత్‌లో ఐదవ ఆరణ్యకాలంలోని 1వ అధ్యాయంలోని 3వ బ్రాహ్మణంలో 2వ కథగా దకార త్రయ క ఉన్నది. ఆ కథలోనిది ఈ వాక్యం.

**సందర్భము** – తమలో తాము కలహించుకొని శాంతి కొరకు తన వద్దకు శిష్యులుగా వచ్చిన దేవ, మనుష్య రాక్షసులతో ప్రజాపతి ఈ విధంగా పలికెను.

**భావం :** దమం (ఇంద్రియ నిగ్రహం), దానం (దాతృత్వం) దయా (దయాగుణం) కలిగి ఉండండి అని భావం

## लघुसमाधानप्रश्नाः SHORT ANSWER QUESTIONS

1. **प्रजापतेः कति पुत्राः सन्ति?**

**स.** प्रजापतेः **त्रयः** पुत्राः सन्ति। ప్రజాపతికి ముగ్గురు కుమారులు కలరు.

2. **प्रजापति देवान् उद्दिश्य किं उपदिदेश ?**

**स.** प्रजापति देवान् उद्दिश्य **दाम्यता** इत्युपदिदेश।

ప్రజాపతి దేవతలను ఉద్దేశించి దమాన్ని కలిగి ఉండండి అని ఉపదేశించాడు.

గంధాలు వీటి గుణాలు. ఇవి మనసు అధీనంలో ఉండి పనిచేస్తాయి గనుక పదకొండు ఇంద్రియాలను అదుపు చేయడమే దమం. మనసును అదుపు చేయడాన్ని శమం అంటారు. ఇలా ఇంద్రియ నిగ్రహాన్ని పాటించి దేవతలు జ్ఞాన సంపన్నులై శాంతిని పొందారు. ఇది మొదటి దకారం.

**2. రెండవ దకారార్థం :** తరువాత ప్రజాపతి శిష్యులైన మనుష్యులు ప్రజాపతిని ముఖ్యంగా ఆచరించవలసిన కర్తవ్యాన్ని బోధించమన్నారు. ప్రజాపతి వారికి కూడా 'దా' అని చెప్పి అర్థం చేసుకోమన్నారు. మనుషులకు భోగాల మీద, ధనం మీద ఆశ ఎక్కువ గనుక తన దగ్గర ఉన్న ధనాన్ని ఇతరులకు కూడా ఇచ్చి వారిని ఆదుకోవాలని మనుషులు అర్థం చేసుకున్నారు. కనుక రెండవ దకారానికి దత్త అనే అర్థాన్ని మనుషులు గ్రహించారు. ఈ పదానికి ఇవ్వండి అని అర్థం.

डु - दाञ् - दाने అనే ధాతువు మీద విధిని సూచించే లోట్ లకారంలో మధ్యమ పురుష బహువచనం దత్త (देहि, दत्तात् - दत्तं - दत्त) ఇలా మనుషులు తమకు ఉన్నంతలో సహాయం చేసి తృప్తిని, శాంతిని పొందారు. ఇది రెండవ దకారం.

దేవతలు సత్త్వగుణం ప్రధానంగా కలవారు కనుక వారికి జ్ఞానాన్ని పొందడానికి అనుకూలంగా మొదటి దకారం దమమని అర్థమైనది. మనుషులకు రజోగుణం ఎక్కువ గనుక వారికి దానమని అర్థమైనది.

**3. మూడవ దకారార్థం :** ఇక మూడవ వారైన రాక్షసులు కూడా ప్రజాపతి దగ్గరకు వెళ్ళి ఉపదేశం చేయమని కోరారు. వారికి కూడా ప్రజాపతి "దా" అనే అక్షరాన్ని ఉపదేశించి అర్థం చేసుకోమన్నాడు.

రాక్షసులు దయ లేని వారు గనుక ప్రజాపతి తమకు దయాగుణం అలవాటు చేసుకోమని ఉపదేశించాడని అర్థం చేసుకున్నారు. కనుక వారికి దకారం దయధ్వం అనే అర్థంలో చెప్పినట్లు తోచింది. దయతలచండి అని అర్థం. వారు ఆ ఉపదేశం ప్రకారం దయా గుణాన్ని అలవాటు చేసుకొని మనఃశాంతిని పొందారు. ఇది మూడవ దకారం.

**4. ఉపనిషత్ తాత్పర్యం :**

1. దమం కలిగి ఉండండి అంటే కోరికలను అదుపులో ఉంచుకోండి.
2. దానం చేయండి కష్టాల్లో ఉన్నవారిని ఆదుకోండని మానవులకు ఉపదేశము.
3. దయ కలిగి ఉండడం ఆత్మ గుణాల్లో ముఖ్య లక్షణం కనుక దయగలవారు అందరిని సమదృష్టితో చూడగలరు. అప్పుడు భేదభావం నశిస్తుందని ఉపనిషత్ తాత్పర్యం.

**5. ఉపసంహారం :** ప్రజాపతి తన పుత్రులైన దేవతలకు, మనుషులకు, రాక్షసులకు విడివిడిగా మూడు ధర్మాలను ఉపదేశించినా నిత్య జీవితంలో ఇప్పుడు మనఃశాంతి చాలామందికి కరువైనది. ధనానికి మునుపటి కంటే ప్రాధాన్యం వచ్చింది. డబ్బే ముఖ్యమని భావించడం వలన చాలా మందిలో దయాగుణం లోపిస్తుంది. కనుక దమంతో కోర్కెలను, ఖర్చును తగ్గించుకొని మిగిలిన దాన్ని దానం చేసి కష్టంలో ఉన్నవారిని ఆదుకుని దయాగుణంతో సంఘానికి ఉపయోగపడాలనే మూడు దకారాల తాత్పర్యం చెప్పిన ఉపనిషత్ సమాజానికి ఎంతో ఉపయోగిస్తుంది.

## सन्दर्भवाक्यानि ANNOTATIONS

**1. द द द - दाम्यत, दत्त, दयध्वमिति।**

**स.** **Introduction of the Author :** This sentence is extracted from the lesson **''उपनिषत् - दकार कथा''**. Dakaratraya Katha is found to be the second story in the 3rd Brahmanam of 1st chapter of 5th Aranyaka (The Aranyakas are the part of the ancient Indian Vedas concerned with the meaning of ritual sacrifice). This sentence is found in that story.

**Context :** Gods, humans and demons quarrelled themselves and met Prajapathi as his disciples in order to attain peace. At that time, Prajapathi said these words to them.

As the gods have the nature of sattva (having the qualities of purity and wisdom) they realised that the first dakara's meaning is damam (continence of senses) which is favourable to get knowledge. Humans have the nature of rajas (having the qualities of dynamism, vigour, impetuousness etc., lacking wisdom) so they understood that it was charity (giving). Next, the demons who were the third kind of sons of Prajapathi went to him and wanted him to give instructions. Prajapathi taught them too the letter of da and wanted them to perceive its meaning.

The demons are ruthless so they understood that Prajapathi had taught them to get used to have the nature of mercy. That's why they felt that dakara was said in the meaning of dayadhvam (being compassionate). Its meaning is 'Show mercy'. According to that instruction, they got used to have the nature of mercy and attained mental peace. This is the third dakara.

1. Have damam means 'Keep the desires in control'.
2. Be charitable. It is the instruction for humans to help the people who are in troubles.
3. Being kind is a prime quality in the qualities of soul so the kind people can treat everyone with equal regard, then the discrimination will be rooted out ..... that is the gist of the Upanishad.

Even though Prajapathi taught his sons - gods, human beings and demons three precepts separately, now many people are lacking mental peace in their day-to-day life. Many people are devoid of kindly nature as they feel that money alone is essential. So keep the desires in limit, reduce the expense and give the rest generously to the people who are in troubles. Thus the Upanishad which gives the meaning of three dakaras intended for the good of the people is immensely useful for the society.

## निबन्धप्रश्न: వ్యాసరూప ప్రశ్న

**1. प्रजापतिः देव - मनुष्य - असुरान् किमुपादिशत्? तस्य प्राधान्यं किम् ? विवृणुत।**

**स.** సృష్టి అంతా బ్రహ్మదేవుని సంతానమైన సృష్టిని కొనసాగించడానికి బ్రహ్మ ప్రజాపతులనే తన ప్రతినిధులను నియమించాడు. ప్రస్తుతం సృష్టిలో ఉన్న ప్రాణులన్నీ కశ్యప ప్రజాపతికి అనేక మంది భార్యల వలన కలిగి సంతానమని పురాణాల్లో పేర్కొనబడినది. ప్రజా సంతానం వారిని రక్షించేవాడు ప్రజాపతి అని ప్రజాపతి శబ్దార్థం. ప్రజాపతి సంతానం ప్రాజాపత్యులు. ప్రజాపతికి దేవతలు, రాక్షసులు, మనుష్యులనే మూడు విధాలైన పుత్రులు ఉన్నారు. వీరు చాలా కాలం తమలో తాము కలహించుకుని వివేకాన్ని పూర్తిగా పోగొట్టుకున్నారు. అప్పుడు ఒక్కొక్కరుగా ప్రజాపతి దగ్గరకు వెళ్ళి తమకు మంచి మార్గాన్ని ఉపదేశించాలని కోరారు.

**1. మొదటి దకారార్థం :** మొదట తన శిష్యులైన దేవతలకు "దా" అనే అక్షరాన్ని ఉపదేశించి దీని అర్థం తెలుసుకోమన్నాడు. వారు కూడా తెలుసుకుంటామని చెప్పి ఆ దకారాన్ని "దామ్యత" అనే క్రియాపదరూపమైన ఉపదేశంగా అర్థం చేసుకున్నారు. దమం అంటే ఇంద్రియ నిగ్రహం. ఎంత వారినైనా ఇంద్రియాల వలన కలిగే కోరికలు లోబరుచుకొని వారి జ్ఞానాన్ని నశింపజేస్తాయి. కనుక వాటిని అదుపులో ఉంచుకోవాలని ప్రజాపతి ఉపదేశంగా దేవతలు భావించారు. నోరు, కాళ్ళు, చేతులు, జననేంద్రియాలు అనేవి కర్మేంద్రియాలు (वाक् पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) చర్మము, ముక్కు, కన్ను, చెవి, నాలుక అనేవి జ్ఞానేంద్రియాలు. శబ్ద స్పర్శరూప ర

# उपनिषत् विभागः, भगवद्गीता

## 3. उपनिषत् - दकार कथा

### निबन्धप्रश्नः ESSAY QUESTION

**1. What did Prajapathi preach gods, human beings and demons? What is its importance? Explain.**

A. Lord Brahma appointed all over the universe the representatives called Prajapathis to continue the creation which is the progeny of Lord Brahma. It was mentioned in myths that the living beings in the present creation are the offspring of Kashyapa Prajapathi with his numerous wives. The meaning of Prajapathi is : Praja : progeny, the one who protects them is Prajapathi. The progeny of Prajapathi are Prajapatyas. Prajapati has three kinds of sons, namely, gods, demons and human beings. They quarrelled among themselves for long and lost their wisdom. Then, they went to Prajapathi one after another and requested him to instruct them a good path.

Initially, Prajapathi preached the gods the letter da (द) and wanted them to know its meaning. They said yes and understood that dakara (दकार) as the instruction in the form of verbal word 'damyata' (दाम्यता) (exercising control). Damam (दमम्) means the continence of senses. The desires born out of senses tempt even great persons and destroy their knowledge so one should keep the desires in one's control. The gods felt that it was the advice of Prajapathi Mouth, legs, arms and genital organs are the organs of karma (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ). Skin, nose, eye, ear and tongue are the organs of perception. Their characteristics are listening, touching, seeing, smelling and tasting. As these organs function under the control of mind, mere controlling the eleven senses is damam (दमम्). Controlling the mind is called samam (शमम्). Thus the gods followed the continence of senses, acquired the copious knowledge and attained peace. This is the initial dakara (दकार).

Later, the human beings who are the disciples of Prajapathi wanted him to teach them the essential duty to follow. Prajapathi said 'da' (द) to them too and wanted them to understand it. As humans are much interested in luxuries and money, they understood that one who has money should help the needy. So they realized that dakara's meaning is datta (दत्त). Its meaning is 'to give'.

In लोट लकार indicating the rule on the root डु - दात्र् - दाने, second person plural is datta (देहि, दत्तात् - दत्रं - दत्त). Thus the humans helped to the extent they had got and derived satisfaction and peace. This is the second dakara.

[illegible]

''मद्य: वीर् नामकं मद्यं सेवनीयमनया''

[illegible]

सञ्जाता । तदेव बलम् । सङ्कल्पबलम्। तदेव बलं सर्वोत्तम आदर्शभूतमित्याहं भावयामि।

ఇదే సంకల్పబలం.

## लघुसमाधानप्रश्ना: SHORT ANSWER QUESTIONS

1. **गान्धिमहाशयस्य आत्मकथाया: नाम किम् ?**

स. गान्धिमहाशयस्य आत्मकथाया: **सत्यशोधनम्।**

గాంధీ మహాత్ముని ఆత్మకథ పేరు సత్యశోధనమ్।

2. **सङ्कल्पबलमिति लघुरूपकं केन विरचितम् ?**

स. सङ्कल्पबलमिति लघुरूपकं **श्रीगुल्लपल्लि श्रीरामकृष्णमूर्तिना** विरचितम्।

సంకల్ప బలం అనే లఘురూపకం శ్రీ గుళ్ళపల్లి శ్రీరామకృష్ణమూర్తిచే రచించబడింది.

3. **श्रुतिवचनं किम्?**

स. ''**धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा**'' इति श्रुतिवचनम्।

"ధర్మం వలనే ప్రపంచం నిలబడుతున్నది" ఇదే శృతి వచనం.

4. **मांसभक्षणे किं मलिनं भवति?**

स. मांसभक्षणे शरीरं मलिनं भवति।

మాంసం తినడం వలన శరీరం మలినం అవుతుంది.

5. **गान्धिमहाशयस्य सङ्कल्पबलं किम् ?**

स. मद्यं, मांसं कदापि न सेवनीयम् इति गान्धिमहाशयस्य संकल्पबलम्।

మద్యం, మాంసం ఎప్పుడు కూడా ఉపయోగించకూడదని గాంధీ సంకల్పము.

(లేదా)

मद्यमांसयो: सेवनेन विना अपि गान्धिन: संकल्पबलं कस्तुरिबा स्वस्था अभूत्।

ఎప్పుడూ మద్యమాంసాలు సేవించకూడదనే గాంధి సంకల్పబలం వలనే కస్తూరిబాయి ఆరోగ్యం పొందింది.

6. **हिंसां नाशयितुं का क्षमा ?**

स. अहिंसैव हिंसां नाशयितुं क्षमा । (అహింస మాత్రమే హింసను నాశనం చేయగలదు.)

ooo

గురజాడ అప్పారావు రచించిన కన్యాశుల్కనాటకాన్ని సంస్కృతంలోకి అనువదించారు. నవరూపకం, [illegible] చరితం, [illegible], జానకీ మహాకావ్యం, సంకల్పబలం మొ॥ కావ్యాలను కూడా రచించారు. ప్రయాగ హిందీసాహిత్యసమ్మేళనం వీరిని మహామహోపాధ్యాయ బిరుదుతో సత్కరించింది. ప్రస్తుతం వీరు తిరుపతిలోని రాష్ట్రీయ సంస్కృత విశ్వ విద్యాలయంలో ఆచార్యులుగా ఉన్నారు.

ఉపోద్ఘాతం : మహాత్మాగాంధీ జన్మదిన సందర్భంగా ఈ లఘురూపకం రచించబడినది. 2020 – 2021 సం॥లో ప్రచురించబడి, ముద్రించబడినది. మహాత్మాగాంధీ ఆత్మకథ నుంచి దక్షిణాఫ్రికాలో జరిగిన ఒక ఘటన ఆధారంగా ఈ రూపకం రచించబడినది.

ఆదర్శ గుణాలు :

గాంధీజీ సిద్ధాంతాలలో ఎప్పుడూ మనిషి ధర్మం తప్పకూడదు. నీతిని తప్పకూడదు అనేవి ముఖ్యమైనవి. ''धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'' అనే వేద వాక్యాన్ని గాంధీజీ విశ్వసించేవారు. ప్రపంచం నిలిచి ఉండడానికి కారణమే ధర్మమని ఆ వాక్యానికి అర్థం. నీతిగా జీవితం గడపడం ధర్మానికి ప్రాణాధారమైన సోపానం. నీతి కలిగినవాడే సత్యమూర్తి అయిన పరమేశ్వరునికి భక్తుడు కాగలడు. అతడే సత్యస్వరూపుడు. సత్యాన్ని సాధించడం కొరకు నా శరీరాన్ని అయినా ఆహుతి చేయడానికి నేను వెనుకాడను. ఇది నా శ్రద్ధ అని గాంధీ సత్యం, ధర్మం, నీతి అనే వాటినే ఆదర్శాలుగా స్వీకరించారు.

సత్యాగ్రహ మార్గంలో ఈ మూడింటి ప్రయోగమే మూలంగా స్వీకరించారు. ఈ ధర్మాన్నే గాంధీ భార్య కస్తూరిబాయి కూడా పాటించింది. ముఖ్యంగా ప్రాణాలు నిలుపుకోడానికైన మద్యం, మాంసం స్వీకరించకూడదని, మత్తు పదార్థాలనే కాక అవి కలిసి ఉన్న మందులను కూడా వాడకూడదని గాంధీజీ గట్టిగా నమ్మారు.

సంకల్పబలం అనే పాఠ్యభాగంలో మద్యమాంసాన్ని స్వీకరించకపోవడమే జీవిత ఆదర్శంగా గ్రహించిన వ్రతం వర్ణించబడింది. జీవితంలో ఎప్పుడూ ఏ అవసరం కొరకు కూడా మద్యాన్నిగానీ, మాంసాన్నిగానీ ఉపయోగించ కూడదని బ్రతికి ఉన్నంతకాలం దీనిని వ్రతంగా పాటించాలని మహాత్మాగాంధీ సంకల్పం చేసుకున్నారు. తన సంకల్పాన్ని సిద్ధాంతంగా కూడా ఆయన ప్రచారం చేశారు.

మహాత్మాగాంధీ దక్షిణాఫ్రికాలో దర్బన్ నగరంలో ఉన్నప్పుడు ఆయన భార్య కస్తూరిబాయికి తీవ్రమైన అనారోగ్యం కలిగింది. గాంధీ ఆమెను చేయి పట్టి నడిపించుకుంటూ నెమ్మదిగా వైద్యశాలకు తీసుకుని వచ్చారు. నా భార్య అనారోగ్యం పాలైంది. ఆమెకు చికిత్స చేయమని వైద్యున్ని అడిగాడు. దక్షిణాఫ్రికాకు వచ్చిన దగ్గర నుంచి మూడు సార్లు అనారోగ్యం పాలైందని మూడుసార్లు కూడా ఇంటిలో దొరికే వస్తువులతోనే చికిత్స చేస్తే కోలుకున్నదని గాంధి వైద్యుడికి చెప్పాడు.

**गान्धी - भिषग्वर ! इयम् अत्रागमनान्तरं त्रिवारमस्वस्था जाता,**
**त्रिवारमपि सा गृहौषधैरेव स्वस्था अभवत्।**

మొదటిసారి సత్యాగ్రహం చేస్తున్నప్పుడు ఈమెకు అనారోగ్యం కలిగితే నా కుమారుడు మణిలాల్ ఆమె దగ్గర ఉండి సేవ చేశాడు. ఇంట్లో ఉండే అల్లం, మిరియాలు మొ॥న ఘాటు వస్తువులతో రోగం నుంచి విముక్తురాలు అయ్యింది. ఆధునిక వైద్యాన్ని అనుసరించి మందు బిళ్ళలు వేసుకోలేదా ? అని వైద్యుడు ప్రశ్నించాడు. వాటిలో మత్తు కలిగించే పదార్థం ఉంటుందని ఆమెకు తెలుసు కనుక వాడలేదని గాంధీ చెప్పారు. అంతేగాక ఆమె మద్యమాంసాలు ఎప్పుడూ సేవించలేదని కుమారుడు చెప్పాడు.

ఔషధంగా కూడా మద్యం తీసుకోరా ? అని వైద్యుడు ప్రశ్నించాడు. మద్యమే కాదు 'టీ' తాగడం కూడా మత్తు కలిగిస్తుంది కనుక ప్రాణం పోయినా ఆమె టీ తాగదని మణిలాల్ చెప్పాడు. ఇంతలో రెండవ కుమారుడైన రామదాసు వచ్చి 'శారిబాద్యాసవాన్ని'' (medicine) పాత్రలో పోసి తల్లికి ఇచ్చాడు. వైద్యుడు కస్తూరిబాయిని పరీక్షించి శరీరంలో రక్తమాంసాలు అసలు లేవని మద్యమాంసాలు వాడితే తప్ప ఆమె కోలుకోదని చెప్పాడు.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

**गान्धी - भिषग्वर ! इयम् अत्रागमनान्तरं त्रिवारमस्वस्था जाता,**
**त्रिवारमपि सा गृहौषधैरेव स्वस्था अभवत्।**

మణిలాల్ వైద్యుల సంభాషణ : మొదటిసారి సత్యాగ్రహం చేస్తున్నప్పుడు ఈమెకు అనారోగ్యం కలిగితే నా కుమారుడు మణిలాల్ ఆమె దగ్గర ఉండి సేవ చేశాడు. ఇంట్లో ఉండే అల్లం, మిరియాలు మొదలైన ఘాటు వస్తువులతో రోగ్య మంటే విముక్తురాలు అయ్యింది. ఆధునిక వైద్యాన్ని అనుసరించి మందు బిళ్ళలు వేసుకోలేదా ? అని వైద్యుడు ప్రశ్నించాడు. వాటిలో మత్తు కలిగించే పదార్థం ఉంటుందని ఆమెకు తెలుసు కనుక వాడలేదని గాంధీ చెప్పారు. అంతేగాక ఆమె మద్యమాంసాలు ఎప్పుడూ సేవించలేదని కుమారుడు చెప్పాడు.

ఔషధంగా కూడా మద్యం తీసుకోరా ? అని వైద్యుడు ప్రశ్నించాడు. మద్యమే కాదు 'టీ' తాగడం కూడా మత్తు కలిగిస్తుంది కనుక ప్రాణం పోయినా ఆమె టీ తాగదని మణిలాల్ చెప్పాడు. ఇంతలో రెండవ కుమారుడైన రామదాసు వచ్చి 'శారిబాద్యాసవాన్ని" (Medicine) పాత్రలో పోసి తల్లికి ఇచ్చాడు. వైద్యుడు కస్తూరిబాయిని పరీక్షించి శరీరంలో రక్తమాంసాలు అసలు లేవని మద్యమాంసాలు వాడితే తప్ప ఆమె కోలుకోదని చెప్పాడు. దానికి నేను అంగీకరించను. కానీ కస్తూరిబా ఇష్టపడితే తనకు అభ్యంతరం లేదన్నాడు (గాంధీ). ఆ తరువాత గాంధీ దక్షిణాఫ్రికా దేశ స్వాతంత్ర్య ఉద్యమంలో పాల్గొనడానికి జోహన్స్ బర్గ్ నగరం వెళ్ళారు.

గాంధీ వెళ్ళిన తరువాత కస్తూరిబాయికి వైద్యం చేస్తున్న వైద్యుని భార్య కస్తూరిబాయికి రక్త ప్రవాహం ఆగడానికి బీరు (Beer) త్రాగించమన్నది.

**''सद्यः बीर् नामकं मद्यं सेवनीयमनया''**

ఇంతలో దక్షిణాఫ్రికా నుండి వచ్చిన గాంధీ తాగించవద్దన్నాడు. వైద్యంలో రోగి అనుమతి గానీ, రోగి బంధువుల అనుమతి గానీ అవసరం లేదని వైద్యుడు అంటే, కస్తూరిబాయి ప్రాణం పోయినా సమ్మతమేగాని మద్యం తాగించవద్దని కోరాడు. కస్తూరిబాయికి సమ్మతమైతే తాగించమన్నాడు. తమ తల్లి అందుకు అంగీకరించదని గాంధీ కుమారులు డాక్టర్‌కి చెప్పి ఆమెను ఆసుపత్రి నుండి ఇంటికి తీసుకువెళ్ళారు.

పాలు, వేడి నీటితోనే చికిత్స చేసి కస్తూరిబాయికి తిరిగి పూర్తి ఆరోగ్యాన్ని గాంధీ స్వయంగా చేకూర్చారు.

**'सञाता । तदेव बलम् । सङ्कल्पबलम्। तदेव बलं सर्वोत्तम आदर्शभूतमित्याहं भावयामि।**

ఇదే సంకల్పబలం.

**3. गान्धिमहाशयस्य आदर्शगुणान् पाठ्यभागानुसारं विशदयत।**

**स.** కవి పరిచయం : "సంకల్పబలం" అనే పాఠ్యభాగం సంస్కృత మహాకవి ఆచార్య గుళ్ళపల్లి శ్రీరామకృష్ణమూర్తి రచించిన సంకల్పబలం అనే రూపకం నుంచి గ్రహించబడినది. శ్రీరామకృష్ణమూర్తి 1958 సం॥ ఆంధ్రదేశంలోని పశ్చిమ గోదావరి జిల్లాలో ఇరగవరం గ్రామంలో జన్మించారు. గురుకుల పద్ధతిలో సంస్కృత సాహిత్యాన్ని వ్యాకరణశాస్త్రాన్ని అధ్యసించి ఆధునిక రీతిలో ఆంధ్రవిశ్వవిద్యాలయం నుండి ఎం.ఏ. పరీక్షలో ఉత్తీర్ణులు అయ్యారు. రాష్ట్రీయ సంస్కృత సంస్థానం నుండి డాక్టరేట్ పట్టం పొందారు. చిన్నతనం నుండి కావ్యరచనలో ఆసక్తి ఉన్న

Won't she have liquor even as a medicine? the doctor asked. Manilal replied that even at the cost of her life she does't have not only liquor but also tea as it causes intoxication. Meanwhile, Gandhi's second son Ramadas arrived their and gave his Saribadyasavam (medicine) in a bowl. The doctor examined Kasturba and said that she had hardly any blood and flesh in her body. He also said that unless she consumed liquor and meat, she wouldn't recover from the illness. Gandhi refused to do so but he told the doctor if Kasturba consented to take it, then he had no objection. Later, Gandhi left for Johannesberg city to participate in the freedom movement of South Africa.

After Gandhi left for Johannesberg the doctor's wife advised the doctor to give Kasturba beer to stop the haemorrhage.

**''सद्यः बीर् नामकं मद्यं सेवनीयमनया''**

In the meantime, Gandhi arrived and wanted the doctor not to give liquor. 'As a part of treatment, we need not take permission from either the patient or the patient's relatives,' the doctor said. Then Gandhi persisted that it would be ok for him even if Kasturba lost her life and wanted him not to give her liquor. He also said that the doctor could give Kasturba liquor if she consented to it. Then Gandhi's sons told the doctor that their mother wouldn't agree to it and they to ok her home from the hospital.

At home, Gandhi gave his own treatment with milk and warm water. As a result, Kasturba totally recovered from her illness and became healthy.

**'सञ्जाता । तदेव बलम् । सङ्कल्पबलम्। तदेव बलं सर्वोत्तम आदर्शभूतमित्याहं भावयामि।**

This is nothing but will power.

## निबन्धप्रश्नाः వ్యాసరూప ప్రశ్నలు

1. **सङ्कल्पबलम् रूपकस्य कथासारं लिखत।**
2. **गान्धिमहाशयस्य सङ्कल्पबलं विशदयत।**

1. **కవి పరిచయం :** "సంకల్పబలం" అనే పాఠ్యభాగం సంస్కృత మహాకవి ఆచార్య గుళ్ళపల్లి శ్రీరామకృష్ణమూర్తి రచించిన సంకల్పబలం అనే రూపకం నుంచి గ్రహించబడినది. శ్రీరామకృష్ణమూర్తి 1958 సం॥ ఆంధ్రదేశంలోని పశ్చిమ గోదావరి జిల్లాలో ఇరగవరం గ్రామంలో జన్మించారు. గురుకుల పద్ధతిలో సంస్కృత సాహిత్యాన్ని, వ్యాకరణశాస్త్రాన్ని అధ్యయించి ఆధునిక రీతిలో ఆంధ్రవిశ్వవిద్యాలయం నుండి ఎం.ఏ. పరీక్షలో ఉత్తీర్ణులు అయ్యారు. రాష్ట్రీయ సంస్కృత సంస్థానం నుండి డాక్టరేట్ పట్టం పొందారు. చిన్నతనం నుండి కావ్యరచనలో ఆసక్తి ఉన్న ఈయన గురజాడ అప్పారావు రచించిన కన్యాశుల్కనాటకాన్ని సంస్కృతంలోకి అనువదించారు. నవరూపకం, సువర్ణాశ్వచలితం, తౌ యక్షౌ పునరాయాతౌ, వానకీ మహాకావ్యం, సంకల్పబలం మొ॥ కావ్యాలను కూడా రచించారు. ప్రయాగ హిందీసాహిత్యసమ్మేళనం వీరిని **మహామహోపాధ్యాయ** బిరుదుతో సత్కరించింది. ప్రస్తుతం వీరు తిరుపతిలోని రాష్ట్రీయ సంస్కృత విశ్వ విద్యాలయంలో ఆచార్యులుగా ఉన్నారు.

**ఉపోద్ఘాతం :** మహాత్మాగాంధీ జన్మదిన సందర్భంగా ఈ లఘురూపకం రచించబడినది. 2020 - 2021 సం॥లో ప్రదర్శించబడి, ముద్రించబడినది. మహాత్మాగాంధీ ఆత్మకథ నుంచి దక్షిణాఫ్రికాలో జరిగిన ఒక ఘటన ఆధారంగా ఈ రూపకం రచించబడినది.

**Introduction :** This mini-play was written on the eve of Mahatma Gandhiji's birthday. It was exhibited and published in 2020 - 2021. This play was written basing on an incident held in South Africa. The plot was extracted from Mahatma Gandhi's Autobiography.

**Ideal Qulities of Gandhiji :** Among Gandhiji's principles, a man should not keep off virtue and he should not keep off morals are important.

''धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'' Gandhiji believed in the sentence of the Veda. That sentence's meaning is that the reason for the world's survival is dharma (truth or law that affects the whole universe) alone. Leading life with morals is the life-giving medicine to dharma. The person who is morally good alone can be a devotee of the Lord Parameshwara, the embodiment of truth. He alone is said to be assumed the form of the turth. 'I will never hesitate to even sacrifice my body to achieve the truth. This is my perseverance,' said Gandhi. He followed the ideals namely truth, law and morality.

He took up the experiment of these three as the base in this path of Satyagraha. Gandhi's wife Kasturba too followed this principle. He strongly believed that he should not consume liquor and meat even at the cost of his life and should not use either intoxicating substances or drugs in which they are mixed.

Gandhiji's vrat (religious vow) taken up as his life's ideal is that he should never consume either liquor or meat. This is what is described in the lesson 'Will power'.

**Summary :** Mahatma Gandhi made a resolution that he should never consume either liquor or meat on any occasion in the life and he sould follow it as a vrat (as a religious vow) till his last breath. He also propagated his resolution as a principle.

When Mahatma Gandhi was staying at Durban in South Africa, his wife Kasturba fell seriously ill. Gandhi held her hand and slowly led her away to a hospital. Their son Manilal accompanied them. Gandhi told the doctor that his wife became ill and wanted the doctor to give treatment to her. He informed the doctor that since she arrived in South Africa, she fell ill three times and she recovered all those three times when she was given treatment with the things available at home.

**गान्धी - भिषग्वर ! इयम् अत्रगमनान्तरं त्रिवारमस्वस्था जाता, त्रिवारमपि सा गृहौषधैरेव स्वस्था अभवत्।**

'When I was on Satyagraha first time, my wife fell ill. At that time my elder son Manilal attended to her and nursed her. She was convalesced with the spices such as ginger, black pepper, etc available at home.' Gandhi said. 'She consumed tablets as per the allopathy, didn't she? the doctor said. Gandhi told him that she hadn't consumed them as she was aware that they have intoxicating substance. Then Gandhi's son Manilal said that she never consumed liquor and meat.

When I was on Satyagraha first time, my wife fell ill. At that time my elder son Manilal attended to her and nursed her. She was convalesced with the spices such as ginger, black pepper, etc available at home.' Gandhi said. 'She consumed tablets as per the allopathy, didn't she? the doctor said. Gandhi told him that she hadn't consumed them as she was aware that they have intoxicating substance. Then Gandhi's son Manilal said that she never consumed liquor and meat.

'Won't she have liquor even as a medicine? the doctor asked. Manilal replied that even at the cost of her life she does't have not only liquor but also tea as it causes intoxication. Meanwhile, Gandhi's second son Ramadas arrived their and gave his Saribadyasavam (medicine) in a bowl. The doctor examined Kasturba and said that she had hardly any blood and flesh in her body. He also said that unless she consumed liquor and meat, she wouldn't recover from the illness. Gandhi refused to do so but he told the doctor if Kasturba consented to take it, then he had no objection. Later, Gandhi left for Johannesberg city to participate in the freedom movement of South Africa.

After Gandhi left for Johannesberg the doctor's wife advised the doctor to give Kasturba beer to stop the haemorrhage.

**"सद्यः बीर् नामकं मद्यं सेवनीयमनया"**

In the meantime, Gandhi arrived and wanted the doctor not to give liquor. 'As a part of treatment, we need not take permission from either the patient or the patient's relatives,' the doctor said. Then Gandhi persisted that it would be ok for him even if Kasturba lost her life and wanted him not to give her liquor. He also said that the doctor could give Kasturba liquor if she consented to it. Then Gandhi's sons told the doctor that their mother wouldn't agree to it and they to ok her home from the hospital.

At home, Gandhi gave his own treatment with milk and warm water. As a result, Kasturba totally recovered from her illness and became healthy.

**'सञ्जाता । तदेव बलम् । सङ्कल्पबलम्। तदेव बलं सर्वोत्तम आदर्शभूतमित्याहं भावयामि।**

This is nothing but will power.

**3. Explain the ideal qualities of Mahatma Gandhi according to the lesson.**

**A. Introduction of the Author :** The lesson 'Sankalpabalam' is taken from a drama named 'Sankalpabalam' written by the popular Sanskrit poet Acharya Gullapalli Sriramakrishna Murthy. Sriramakrishna Murthy was born in 1958 at Iragavaram in West Godavari district of Andhra Pradesh. He studied up-to-date Sanskrit literature and grammar in gurukul system and passed M.A from Andhra University. He received Ph.D. degree from Central Sanskrit University. He who was interested in writing poetry since his childhood translated 'Kanyasulka' drama written by Gurajada Apparao into Sanskrit. He also wrote epics like Navarupakam, Suvarnaswachalitam, Tau Yakshau Punarayatau Vanaki Mahakavyam, Sankalpabalam, etc.

# आधुनिकरूपक विभागः

## 2. सङ्कल्पबलम् - आचार्य जि. यस्. आर्. कृष्णमूर्तिः

### निबन्धप्रश्नाः ESSAY QUESTIONS

1. **Write the summary of the play 'Sankalpabalam.'**
2. **Explain the will power of Gandhiji.**

**A. Introduction of the Author :** The lesson 'Sankalpabalam' is taken from a drama named 'Sankalpabalam' written by the popular Sanskrit poet Acharya Gullapalli Sriramakrishna Murthy. Sriramakrishna Murthy was born in 1958 at Iragavaram in West Godavari district of Andhra Pradesh. He studied up-to-date Sanskrit literature and grammar in gurukul system and passed M.A from Andhra University. He received Ph.D. degree from Central Sanskrit University. He who was interested in writing poetry since his childhood translated 'Kanyasulka' drama written by Gurajada Apparao into Sanskrit. He also wrote epics like Navarupakam, Suvarnaswachalitam, Tau Yakshau Punarayatau Vanaki Mahakavyam, Sankalpabalam, etc.

Prayaga Hindi Sahitya Sammelan felicitated him with the title 'Mahamahopadhyaya'. At present he is working as a professor at National Sanskrit University in Tirupati.

**Introduction :** This mini-play was written on the eve of Mahatma Gandhiji's birthday. It was exhibited and published in 2020 - 2021. This play was written basing on an incident held in South Africa. The plot was extracted from Mahatma Gandhi's Autobiography.

**Summary :** Mahatma Gandhi made a resolution that he should never consume either liquor or meat on any occasion in the life and he sould follow it as a vrat (as a religious vow) till his last breath. He also propagated his resolution as a principle.

When Mahatma Gandhi was staying at Durban in South Africa, his wife Kasturba fell seriously ill. Gandhi held her hand and slowly led her away to a hospital. Their son Manilal accompanied them. Gandhi told the doctor that his wife became ill and wanted the doctor to give treatment to her. He informed the doctor that since she arrived in South Africa, she fell ill three times and she recovered all those three times when she was given treatment with the things available at home.

**गान्धी - भिषग्वर ! इयम् अत्रगमनान्तरं त्रिवारमस्वस्था जाता,**
**त्रिवारमपि सा गृहौषधैरेव स्वस्था अभवत्।**

**అర్థాలు** : पतिव्रतेति नाम = పతివ్రత అంటే, पतिमात्रधर्मिणी = భర్త ఒక్కడే అన్ని విధాలైన ధర్మ స్వరూపం కలిగినది.

**భావం** : భర్తను రక్షించడమే పతివ్రత ధర్మం అని భావం.

6. **ज्येष्ठः श्रेष्ठः कुले लोके पितॄणां च सुसंप्रियः**

**స. కవి పరిచయం** : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన **"మధ్యమవ్యాయోగం"** అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. **ग्रन्थः** – మధ్యమవ్యాయోగః

**సందర్భం** : కేశవదాసు పెద్దకుమారుడు ఘటోత్కచునితో వెళ్ళడానికి సిద్ధపడినప్పుడు రెండవ కుమారుడు అతన్ని వారిస్తూ ఈ విధంగా పలికెను (లేదా) కేశవదాసు రెండవ కుమారుడు పెద్దకుమారుని(అన్నతో)తో ఈ వాక్యం పలికెను.

**అర్థాలు** : कुले = వంశంలో, ज्येष्ठः = పెద్ద కుమారుడు, श्रेष्ठ = అందరి కంటే ఉత్తమమైనవాడు, लोके = లోకంలో, पितॄणाम् = తల్లిదండ్రులకు, सुसंप्रियः = చాలా ఇష్టమైనవాడు

**భావం** : పెద్ద కుమారుడు శ్రేష్ఠుడు, తల్లిదండ్రులకు ఇష్టమైన వాడు కనుక నువ్వు వెళ్ళవద్దు, నేనే వెళ్తాను అని భావం.

7. **माता किल मनुष्याणां देवतानां च दैवतम् ।**

**స. కవి పరిచయం** : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన **"మధ్యమవ్యాయోగం"** అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. **ग्रन्थः** – మధ్యమవ్యాయోగః

**సందర్భం** : భీమసేనుడు కేశవదాసు కుటుంబాన్ని వదిలిపెట్టమన్నప్పుడు ఘటోత్కచుడు భీమునితో ఇలా అన్నాడు. నేను తల్లి ఆజ్ఞ పాటించడానికి వీరిని పట్టుకున్నాను. నా తండ్రి చెప్పినా వీరిని వదలను అన్నాడు. అప్పుడు భీముడు తన మనసులో ఈ వాక్యం అనుకున్నాడు.(లేదా) భీముడు తనలో తాను ఈ విధంగా అనుకొనెను.

**అర్థాలు** : मनुष्याणां = మనుషులకు, देवतानां = దేవతలకు కూడా, माता = తల్లి, दैवतं किल = దేవత అవుతుంది

**భావం** : ఎవరికైనా తల్లి దైవం కనుక ఆమె ఆజ్ఞ పాటించాలని భావం. (లేదా) మనుషులకైనా, దేవతలకైనా తల్లే దైవంతో సమానమని భావం.

8. **जात्या राक्षसी, न समुदाचारेण।**

**స. కవి పరిచయం** : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన **"మధ్యమవ్యాయోగం"** అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. **ग्रन्थः** – మధ్యమవ్యాయోగః

**సందర్భం** : ఘటోత్కచునితో హిడింబ దగ్గరకు వెళ్ళిన భీముడు ఆమెను గుర్తించి ఘటోత్కచుడు ఎందుకిలా చేశాడు? అని అంటే ఆమె రహస్యంగా భీమునికి ఏదో చెప్పింది. అప్పుడు హిడింబను గూర్చి భీముడు మనస్సులో ఈ వాక్యం అనుకున్నాడు. (లేదా) భీముడు తనలో తాను ఈ విధంగా అనుకొనెను.

**అర్థాలు** : जात्या = పుట్టుకతో, राक्षसी = రాక్షసీ, समुदाचारेण = ప్రవర్తనలో, न राक्षसी = రాక్షసత్వం లేదు

**భావం** : పుట్టుకకు రాక్షసే కానీ ప్రవర్తనలో రాక్షసత్వం లేదని భావం.

✪✪✪

2. वनं निवासाभिमतं मनस्विनाम्

स. కవి పరిచయం : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన "మధ్యమవ్యాయోగం" అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. ग्रन्थ: - మధ్యమవ్యాయోగః

సందర్భం : [illegible] కేశవదాసు పెద్ద కుమారుడు [illegible] ఈ వాక్యం పలికాడు. (లేదా) కేశవదాసు పెద్ద కుమారుడు [illegible] విధంగా పలికెను.

అర్థాలు : मनस्विनाम् = [illegible] వారికి (మనసు కలిగిన వారికి), वनम् = అడవి, निवासाभिमतम् = నివాస స్థానంగా కోరదగినది

భావం : అవమానాలు భరించలేని అభిమానవంతులు అడవులలో ఉండడానికి ఇష్టపడతారు అని భావం.

3. दण्डं यथार्हमिह धारयितुं समर्थाः।

స. కవి పరిచయం : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన "మధ్యమవ్యాయోగం" అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. ग्रन्थ: - మధ్యమవ్యాయోగః

సందర్భం : అభిమానం కలవారికి అడవి ఇష్టమైన నివాస స్థానం అని పెద్ద కుమారుడు చెప్పిన మాటను వి[illegible] పాండవులు ఈ ప్రాంతంలోనే నివాసమున్నారని గుర్తు తెచ్చుకుంటూ కేశవదాసు ఈ వాక్యం పలికెను. (లేదా) కేశవదాసు తన పెద్దకుమారునితో ఈ వాక్యం పలికెను.

అర్థాలు : इह = ఇక్కడ (ఘటోత్కచుని వంటి వారి విషయంలో), यथार्हम् = తగినటువంటి, दण्डम् = శిక్షను, धारयितुं = విధించడానికి, समर्थाः = సమర్థులు

భావం : శరణాగతులు అంటే ప్రేమ చూపే పాండవులు. ఘటోత్కచుని వంటి దుష్టులను తగిన విధంగా శిక్షించడానికి సమర్థులు.

4. आश्रमपरिपालनार्थमिह स्थापितः किल मध्यमः !

స. కవి పరిచయం : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన "మధ్యమవ్యాయోగం" అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. ग्रन्थ: - మధ్యమవ్యాయోగః

సందర్భం : పాండవులు సమీపంలో నివసిస్తున్నారని చెప్పిన తండ్రి మాట విని కేశవదాసు పెద్దకొడుకు పాండువులందరూ ధౌమ్యుడు చేసే యజ్ఞానికి వెళ్ళారు భీముడు ఒక్కడే ఇక్కడ ఉన్నాడని ఈ వాక్యం తండ్రితో అన్నాడు. (లేదా) కేశవదాసు పెద్ద కుమారుడు కేశవదాసుతో ఈ విధంగా పలికెను.

అర్థాలు : इह = ఈ అడవిలో, आश्रम परिपालनार्थं = ఆశ్రమాన్ని రక్షించడానికి, मध्यमः = భీముడు ఒక్కడే, स्थापितः = ఉంచబడ్డాడు

భావం : ఈ అడవిలో ఆశ్రమ రక్షణ కొరకు భీముడు ఒక్కడే ఉన్నాడని భావం.

5. पतिमात्र धर्मिणी पतिव्रतेतिनाम।

స. కవి పరిచయం : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన "మధ్యమవ్యాయోగం" అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. ग्रन्थ: - మధ్యమవ్యాయోగః

సందర్భం : అడవిలో ఘటోత్కచుడు కేశవదాసుతో ఎవరైనా మీలో ఒక్కరు మా తల్లికి ఆహారంగా వస్తే సరిపోతుంది అన్నప్పుడు తానే అందుకు వెళ్తానని కేశవదాసు భార్య తన భర్తతో ఈ వాక్యం పలికింది.

7. **माता किल मनुष्यानां देवतानां देवतानां च दैवतम् ।**

स. **Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** Bhimasena wanted Ghatotkacha to spare the family of Kesavadas. Ghatotkacha said to Bhima, " I captured this family to obey my mother's bidding. I don't spare them even my father tells me to do so." Then Bhima said these words to himself.

**Meanings of the words :** मनुष्याणां = to human beings, देवतानां = to even gods, माता = mother, दैवतं किल = (will be) goddess.

**Meaning :** Its meaning is : Mother is the deity to anybody. (OR) Mother alone is equal to the deity to either human beings or gods.

8. **जात्या राक्षसी, न समुदाचारेण।**

स. **Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** Bhima went to Hidimba along with Ghatotkacha. He identified her and asked her why Ghatotkacha had done like that. Then she whispered something to him secret. In that context, Bhima said those words to himself.

**Meanings of the Words :** जात्या = by birth, राक्षसी = demoness, समुदाचारेण = in behaviour /disposition, न राक्षसी = not demoniac.

**Meaning :** She (Hidimba) is a demon by birth but she is not demoniac in behaviour.

## सन्दर्भवाक्यानि సందర్భవాక్యాలు

1. **द्विजोत्तमाः पूज्यतमा - पृथिव्याम्।**

स. కవి పరిచయం : ఈ వాక్యం భాస మహాకవి రచించిన **"మధ్యమవ్యాయోగం"** అనే పాఠ్యభాగం నుండి గ్రహించబడినది. ग्रन्थः - మధ్యమవ్యాయోగః

సందర్భం : కేశవదాసును తల్లికి ఆహారంగా తీసుకువెళ్ళాలని భావించిన ఘటోత్కచుడు "అది తగినది కాకపోయినా తల్లి ఆజ్ఞ కనుక తప్పక చేయాలని బాధపడుతూ" తనలో ఈ మాటను అనుకున్నాడు. (లేదా) ఘటోత్కచుడు తన మనస్సులో ఈ విధంగా భావిస్తున్న సందర్భంలోనిదీ ఈ వాక్యం.

అర్థాలు : पृथिव्याम् = భూలోకంలో, द्विजोत्तमाः = బ్రాహ్మణులు, पूज्यतमाः = పూజింపదగినవారు

భావం : భూలోకంలో బ్రాహ్మణులు పూజింపదగినవారు అని భావం.

**Meaning :** The Pandavas who are affectionate to the refugees are capable persons to punish the wicked persons like Ghatotkacha.

**4. आश्रमपरिपालनार्थमिह स्थापितः किल मध्यमः !**

**स.** **Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** Kesavadas said that the Pandavas were living at a place nearby. Listening to his father's words, the elder son of Kesavadas told his father that all the Pandavas had gone to the sacrifice performed by Dhaumya and only Bhima was staying there. (OR) Kesavadas's elder son said these words to his father.

**Meanings of the words :** इह = In this forest. आश्रम परिपालनार्थं = to protect the hermitage. मध्यमः = only Bhima. स्थापितः = (is) placed

**Meaning :** It means that only Bhima is staying in this forest for the protection of the hermitage.

**5. पतिमात्र धर्मिणी पतिव्रतेतिनाम।**

**स.** **Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** When Ghatotkacha said to Kesavadas in the forest that it would be ok if any one of them could go with him for his mother's meal. Kesavadas's wife said these words to her husband that she would herself go for it.

**Meanings of the words :** पतिव्रतेति नाम = chaste woman means. पतिमात्रधर्मिणी = one who believes that husband is the form of all kinds of dharma.

**Meaning :** It means that the duty of a chaste woman is to merely save her husband.

**6. ज्येष्ठः श्रेष्ठः कुले लोके पितृणां च सुसंप्रिय।**

**स.** **Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** When Kesavadas's elder son got ready to go with Ghatotkacha. the second son prevented him from going and said these words to his elder brother.

**Meanings of the words :** कुले = in the race. ज्येष्ठः = the elder son. श्रेष्ठ = the best among all others. लोके = in the world. पितृणाम् = to the parents. सुसंप्रियः = very affectionate / dear.

## सन्दर्भवाक्यानि ANNOTATIONS

**1. द्विजोत्तमाः पूज्यतमा - पृथिव्याम्।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** Ghatotkacha wanted to take Kesavadas with him for his mother as a meal. He felt that it was not proper to do but he had to do it on his mother's bidding. In that situation he felt sorry for the brahmin and said these words to himself. **(OR)** This sentence is taken from the situation when Ghatotkacha said these words to himself.

**Meanings of the words :** पृथिव्याम् = On this earth, द्विजोत्तमाः = the brahmins, पूज्यतमाः = worthy of worship (adorable).

**Meaning :** It means that the brahmins are worth worshipping on the earth.

**2. वनं निवासाभिमतं मनस्विनाम्।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** Kesavadas's wife said that they would call somebody loudly for help to save themselves from Ghatotkacha. Then Kesavadas's elder son said these words to his mother. **(OR)** Kesavadas's elder son said these words to his mother.

**Meanings of the words :** मनस्विनाम् = to those who are kind-hearted, वनम् = forest. निवासाभिमतम् = said to be abode.

**Meaning :** It means the person who has self - respect and is unable to bear insults. likes to live in forests.

**3. दण्डं यथार्थमिह धारयितुं समर्थाः।**

**स. Introduction of the Poet :** This sentence is taken from the lesson 'Madhyama Vyayoga' written by the legendary poet Bhasa. The lesson is extracted from the treatise titled 'Madhyama Vyayoga'.

**Context :** The elder son of Kesavadas said that the forest is the abode to those who have self - respect. On listening to those words, recollecting that the Pandavas were living in that location, Kesavadas said these words. (OR) Kesavadas said these words to his elder son.

**Meanings of the words :** इह = Here (in the case of persons like Ghatotkacha), यथार्हम् = proper / appropriate, दण्डम् = punishment, धारयितुं = to impose, समर्थाः = capable persons.

## लघुसमाधानप्रश्नाः SHORT ANSWER QUESTIONS

1. **मध्यमव्यायोगस्य कर्ता कः?**

स. मध्यमव्यायोग कर्ता भासः।

మధ్యమ వ్యాయోగం రచయిత భాసుడు.

2. **भासमहाकविना कति रूपकाणि विरचितानि ?**

स. भासमहाकविना त्रयोदशरूपकाणि विरचितानि।

భాసమహాకవిచే 13 నాటకాలు రచించబడ్డాయి.

3. **मध्यमव्यायोगे मध्यमौ कौ?**

स. मध्यमव्यायोगे केशवदासस्य द्वितीयः पुत्रः, भीमः च मध्यमौ।

మధ్యమవ్యాయోగంలో కేశవదాసు రెండవ కుమారుడు, భీముడు మధ్యములు.

4. **पाण्डवाः कीदृशाः?**

स. पाण्डवाः शरणागतवत्सलाः प्रियसंग्रामाः च।

పాండవులు శరణాగతులు అంటే ప్రేమ కలవారు, యుద్ధమంటే ఇష్టం కలవారు.

5. **माता कीदृशी?**

स. माता समाप्त उपवासदीक्षा, आहारार्थिनी च।

తల్లి ఉపవాసం విరమించినది, ఆహారం కోరుచున్నది.

**(अथवा)**

माता हिडिम्बा पाण्डवेन महात्मना सनाथा।

ఘటోత్కచుని తల్లి హిడింబ పాండవుల్లో ఒకడైన భీముని భార్య.

6. **ज्येष्ठभ्राता पितृसमः - इति कैः प्रोक्तम्?**

स. ज्येष्ठभ्राता पितृसमः - इति ब्रह्मवादिभिः कथितः।

అన్న తండ్రి వంటి వాడని వేదవేత్తలైన బ్రాహ్మణులు చెప్పుచున్నారు.

7. **पितृ हृदयानि कीदृशानि?**

स. पितृ हृदयानि पुत्रापेक्षीणि।

తండ్రి మనస్సు కొడుకులపై ప్రేమ చూపునవి.

8. **द्विजसत्तमः किमर्थं मोचनीयः?**

स. ब्राह्मणाः पूज्यतमाः इति हेतोः द्विजसत्तमः मोचनीयः।

బ్రాహ్మణులు అందరికీ పూజింపదగినవాడు కనుక బ్రాహ్మణుడు విడిపించదగినవాడు (లేదా) రక్షించదగినవాడు.

**ఘటోత్కచుని మధ్యశీల వర్ణనం** : కేశవదాసు మమ్ములను విడిచిపెట్టే అవకాశం ఏదైనా ఉన్నదా? అని అడిగితే అప్పుడు ఘటోత్కచుడు "నాకు అందరూ అవసరం లేదు. మీలో ఒకరు చాలు అది కూడా నా తల్లికి ఆహారంగా వస్తే చాలన్నాడు".

**अस्ति मे तत्रभवती जननी। तयाऽहमाज्ञप्तः - पुत्र !**
**ममोपवासनिसर्गार्थमस्मिन् वनदेशे कश्चिन्मानुषः**
**परिगृह्यानेतव्य इति। ततो मयाऽसादितो भवान् -**
**पत्न्या चारित्रशालिन्या द्विपुत्रो मोक्षमिच्छसि।**

అలాగే ఆపదలో ఉన్న బ్రాహ్మణుడు కూడా ఘటోత్కచుడు పిలిచిన పద్ధతి చూచి వివేకం ఉన్నవాడు అని భావించాడు. ''सविमर्शा हि अस्य वाणी'' భీముడు కూడా అతడు తన పుత్రుడైన ఘటోత్కచుడని తెలిసి తనకు తగిన కుమారుడు అనుకున్నాడు.

**सदृशो ह्यस्य गर्वः ।**
**रूपं सत्त्वं बलं चैव पितृभिः सदृशं बहु।**
**प्रजासु वीतकारुण्यं मनश्चैवास्य कीदृशम् ॥**

**ఘటోత్కచుని రూప సౌందర్యం** : ఆకారం, బలం, నిలకడైన మాట ఇవన్నీ తండ్రికి తగినట్లుగా ఉన్నాడు. అనడం చేత భీముని లక్షణాలే ఘటోత్కచునికి కూడా అన్వయిస్తాయి. ఘటోత్కచుని ఆకారాన్ని వర్ణించిన చాలా శ్లోకాలు మధ్యమ వ్యాయోగంలో ఉన్నాయి.

**सिंहास्यः सिंहदंष्ट्र मधुनिभनयनः स्निग्धगम्भीरकण्ठो**
**बभ्रु भ्रूः श्येननासो द्विरदपतिहनुदीप्त विश्लिष्टकेशः।**
**व्यूढोरा वज्रमध्यो गजवृषभगतिर्लम्बपीनांसबाहुः**
**सुव्यक्तं राक्षसीजो विपुलबलयुतो लोकवीरस्य पुत्रः ॥**
**सजलजदागात्रः पद्मपत्रायताक्षो -**
**मृगपतिगतिलीलो राक्षसः प्रोग्रदंष्ट्रः ।**
**जगति विगतशङ्कस्त्वद्विधानां समक्षं**
**ससुतपरिजनं भो ! हन्तुकामोऽभ्युपैति।**

ఏనుగు దంతాల వంటి కోరలు, నాగేటి చాలు వంటి ముక్కు, ఏనుగు తొండం వంటి చేతులు, నల్లని మేఘం వంటి రంగు కలిగి అగ్ని లాగా ప్రకాశిస్తూ త్రిపురాసుర సంహారకాలం నాటి శివుని వలే ఉన్నాడనే ఒక్క వర్ణన ఘటోత్కచుని రూపాన్ని పరాక్రమాన్ని సూచిస్తుంది. రాక్షసాకారం ధరించిన మృత్యువని బ్రాహ్మణ కుమారుడు వర్ణిస్తాడు.

**''मृत्युः पुरुषविग्रहः''**

**ఘటోత్కచుని పితృభక్తి** : ఘటోత్కచునికి తన తండ్రి ఎవరో తెలియకపోయినా తల్లి వలన ఆయన బలపరాక్రమాలు తెలిసినవాడు కనుక తండ్రి అంటే చాలా గౌరవ భావం కలిగి ఉన్నాడు. భీముడు ఘటోత్కచునితో యుద్ధానికి సిద్ధపడినప్పుడు నా కుడి చేయి నాకు సహజమైన ఆయుధం అన్నాడు. ఇలా "కుడిచేయి ఆయుధం" అనే మాట నా తండ్రి అయిన భీమసేనునికి మాత్రమే చెల్లుతుందని తండ్రి పైన ఉన్న గౌరవాన్ని సూచిస్తుంది.

ఈ విధంగా భీమ ఘటోత్కచ పాత్రల స్వభావాన్ని, శీలాన్ని కవి ఉదాత్తంగా సందర్భోచితంగా మధ్యమ వ్యాయోగంలో వర్ణించాడు.

**భీముని శీలవర్ణనము :** నాయకుని యొక్క శీలమును వర్ణించునప్పుడు కవులకు అతని శరీర సౌష్ఠవము, గుణములను కూడా వర్ణించుట సహజ లక్షణంగా మహాకావ్యంలో కనిపిస్తుంది. పాండవులందరికీ సహజమైన లక్షణం శరణు కోరిన వారిని రక్షించడం. ఆ లక్షణం భీమునిలో కూడా కవి వర్ణించాడు.

**భీముని శరణాగత వత్సలత్వం :** అడవిలో నడుస్తున్న బ్రాహ్మణునికి బయలుదేరేటప్పుడు జలక్రీస్నుడు అనే ముని దారిని గూర్చి చెప్పిన మాట గుర్తుకు వచ్చి "ఈ దారిలో రాక్షసులున్నారని ముని చెప్పాడు. కనుక భయంగా ఉన్నదని" భార్యతో అన్నాడు. ఆమె కూడా భయపడింది. కానీ బ్రాహ్మణుడు ఆమెకు ధైర్యం చెప్తూ ఇది పాండవాశ్రమానికి సమీప ప్రదేశం కనుక మునులు భయం లేకుండా ఉన్నారు అని పాండవుల స్వభావాన్ని ఇలా వర్ణించాడు.

**युद्धप्रियाश्च शरणागतवत्सलाश्च**
**दीनेषु पक्षपतिताः कृतसाहसाश्च ।**
**एवंविधप्रतिभयाकृत चेष्टितानां**
**दण्डं यथार्हमिह धारयितुं समर्थाः॥**

పాండవులు యుద్ధమంటే ఇష్టపడతారు. శరణు కోరిన వారిని రక్షిస్తారు. శరణు కోరిన వారిపై ప్రేమ కలిగి ఉంటారు. దీనులపై పక్షపాతం చూపిస్తారు. సాహసం వారికి ఇష్టం. ఘటోత్కచుని లాగా ఇతరులను బాధపెట్టే పనులు చేసే వారిని దండించడానికి కూడా వారే సమర్థులు అని పాండవుల అందరి లక్షణం చెప్పడం వలన ఆ లక్షణాలన్నీ భీమునిలో కూడా ఉన్నట్లు స్పష్టమౌతుంది.

తరువాత కేశవదాసు పెద్ద కుమారుడు భీముడు ఒక్కడే ఆశ్రమంలో ఉన్నాడని తెలిసింది. మిగిలినవారు ఇక్కడ లేరని అన్నాడు. అప్పుడు బ్రాహ్మణుడు ఆ ఒక్కడు ఉంటే పాండవులు అందరూ ఉన్నట్లే అనడం భీముని గొప్పదనాన్ని సూచిస్తుంది.

**"यद्येवं सन्निहिताः सर्वे एव पाण्डवाः ।"**

**భీముని రూప సౌందర్యం :** ఘటోత్కచుడు నీరు త్రాగడానికి వెళ్ళిన మధ్యమున్ని పిలిచినప్పుడు పాండవ మధ్యముడైన భీముడు తనను పిలిచినట్లు భావించి అక్కడకు వచ్చాడు. అప్పుడు ఘటోత్కచుడు భీముని రూపాన్ని ఇలా వర్ణించాడు.

**सिंहाकृतिः कनकतालसमानबाहु -**
**र्मध्येतनुर्गरुडपक्षविलिप्तपक्षः**
**विष्णु र्भवेद्विकसिताम्बुजपत्रनेत्रो -**
**नेत्रे ममाहरति बन्धुरिवागतोऽयम् ॥**

సింహం వంటి ఆకారం కలిగి బంగారు తీగల వంటి చేతులు కలవాడు. గరుడుని వంటి భుజబలం కలిగి విష్ణువు వలే విశాలమైన కన్నులు కలిగిన ఇతను నా ఆత్మబంధువు వలే ఉన్నాడు. తరువాత భీముడు తన పరిచయం ఘటోత్కచునికి చెప్తూ ఇలా అన్నాడు.

**భీముని మధ్యమత్వ సార్థకత :**

**मध्यमः पञ्चभूतानां पार्थिवानां च मध्यमः।**
**भवे च मध्यमो लोके सर्वकार्येषु मध्यमः॥**

నేను పంచభూతాల్లో మధ్యముడైన వాయుపుత్రుడను, రాజులలో కూడా మధ్యజాతికి చెందినవాన్ని మూడు లోకాల్లో మధ్యదైన భూలోకంలో ఉండేవాడను, అన్ని పనులు పక్షపాతం లేకుండా మధ్యవర్తి లాగా నిర్వహిస్తాను. ఇలా భీముని గుణాలను కవి వర్ణించాడు.

ఘటోత్కచుని గుణాలను స్వభావమును కూడా కవి ఉదారంగానే వర్ణించాడు.

రెండవ కొడుకు మూడవ కొడుకు కూడా నేను వెళ్తాను అంటే నేను వెళ్తాను అని తండ్రితో అన్నారు కానీ పెద్దవాడిని పంపడానికి తండ్రి అంగీకరించలేదు. చిన్నవాడిని పంపడానికి తల్లి ఇష్టపడలేదు. రెండవ కుమారున్ని పంపడానికి తల్లిదండ్రులు ఇద్దరూ ఇష్టపడ్డారు. తరువాత రెండవ కుమారుడు దగ్గరలో జలాశయం ఉంటే నీరు త్రాగి వస్తానని రాక్షస అంగీకారంతో నీటి కోసం వెళ్ళాడు. అతడు తిరిగి రావడానికి కొంత ఆలస్యమైనది రెండవ వాడి పేరు మధ్యముడు. ఘటోత్కచుడు మధ్యమున్ని పేరు పెట్టి గట్టిగా పిలవడం మొదలు పెట్టాడు.

**भो मध्यम ! शीघ्रमागच्छ।**

**భీముని ఆగమనం :** ఆ పిలుపును పాండవ మధ్యముడైన భీముడు వ్యాయామం చేస్తూ విని ఘటోత్కచుని దగ్గరకు వచ్చాడు. ఇదిగో మధ్యమున్ని వచ్చానన్నాడు. నువ్వు కూడా మధ్యముడివేనా ? అని ఘటోత్కచుడు అంటే మరొక మధ్యముడు లేడు.

1. ఎవరికీ చంపడానికి సాధ్యం కాని వారిలో నేను మధ్యముడిని (బకుడు, హిడింబుడు, భీముడు, కీచకుడు, దుర్యోధనుడు అనే ఐదుగురు ఇతరుల చేతిలో చావరు. వారిలో ఎవరు ముందుగా ఒకరిని చంపుతారో అతనే మిగిలిన వారిని కూడా చంపుతాడని కథ ప్రసిద్ధం.)
2. అంతేగాక నేను బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, వైశ్యుల్లో మధ్యమున్ని.
3. పంచభూతములల్లో పృథివి, అప్, వాయువు, తేజస్సు, ఆకాశాలలో మధ్యమున్ని.
4. పాండవుల్లో (కుంతీ పుత్రుల్లో) (ధర్మరాజు, భీముడు, అర్జునుడు) మధ్యముడను. కనుక నేను తప్ప రెండవ మధ్యముడు లేడన్నాడు.

**मध्यमोऽहमवध्यानामुत्सिक्तानां च मध्यमः।**
**मध्यमोऽहं क्षितौ भद्र ! भ्रातॄणामपि मध्यमः ॥**
**मध्यमः पञ्चभूतानां पार्थिवानां च मध्यमः।**
**भवे च मध्यमो लोके सर्वकार्येषु मध्यमः॥**

**కేశవదాసుకు భీముని అభయం :** బ్రాహ్మణుడు భీమసేనుణ్ణి శరణు కోరాడు. భీమసేనుడు అతనికి అభయమిచ్చి ఘటోత్కచుడి వెంట వస్తానన్నాడు. భీమసేనుడు ఘటోత్కచుని పరిచయం అడిగాడు. ఆ తరువాత శక్తి ఉంటే నన్ను తీసుకు వెళ్ళు అని ఘటోత్కచునితో అన్నాడు. ఆ తరువాత ఘటోత్కచుడు తన తండ్రి శక్తి గురించి వర్ణించాడు. భీమునితో కలసి తల్లి దగ్గరకు వెళ్ళిన ఘటోత్కచుడు భీముడే తన తండ్రి అని భీమున్ని క్షమాపణ కోరాడు. ఘటోత్కచుడు కూడా భీముని మాటపై బ్రాహ్మణ కుటుంబాన్ని క్షేమంగా వదిలిపెట్టాడు.

**2. भीमघटोत्कचयोः शीलं लिखत।**

**స. కవి పరిచయం :** నాటక సాహిత్యాన్ని చదివితేనే సాహిత్యం పూర్తిగా చదివినట్లు అవుతుంది. కావ్యాలలో నాటకం రమ్యమైనదని పెద్దల అభిప్రాయం. రంగస్థలం మీద అభినయించే కావ్యాన్ని దృశ్యకావ్యం అంటారు. ఈ దృశ్యకావ్యం పది భేదాలను కలిగి ఉంటుంది. సంస్కృత సాహిత్యంలో అనేక విధాలైన నాటకాలు ఉన్నాయి. వాటిలో **"మధ్యమ వ్యాయోగానికి"** ఒక విశిష్టమైన స్థానం ఉన్నది.

మధ్యమ వ్యాయోగాన్ని రచించిన భాసుడు సంస్కృత సాహిత్యంలోనే గాక, నాటక సాహిత్యానికి కూడా మొదటి కవి. భాసుడు, కాళిదాసు, అష్టాధ్యాయి వ్రాసిన పాణినీ, నాట్యశాస్త్రం వ్రాసిన భరతుని కంటే ప్రాచీనుడని చరిత్రకారులు ప్రామాణికంగా చెప్పారు. ఈయన క్రీ.శ. మొదటి శతాబ్దం కంటే ముందు వాడని పండితుల అభిప్రాయం.

పని భేదాలను కలిగి ఉంటుంది. సంస్కృత సాహిత్యంలో అనేక విధాలైన నాటకాలు ఉన్నాయి. వాటిలో "మధ్యమ వ్యాయోగానికి" ఒక విశిష్టమైన స్థానం ఉన్నది.

మధ్యమవ్యాయోగాన్ని రచించిన భాసుడు సంస్కృత సాహిత్యంలోనే గాక, నాటక సాహిత్యానికి కూడా మొదటి కవి. భాసుడు, కాళిదాసు, అష్టాధ్యాయి వ్రాసిన పాణినీ, నాట్యశాస్త్రం వ్రాసిన భరతుని కంటే ప్రాచీనుడని చరిత్రకారులు ప్రామాణికంగా చెప్పారు. ఈయన క్రీ.శ. మొదటి శతాబ్దం కంటే ముందు వాడని పండితుల అభిప్రాయం. భాసుడు 13 సంస్కృత రూపకాలను రచించాడు. వాటిలో ''मध्यमव्यायोगः'' ఒకటి.

## निबन्धप्रश्ना: వ్యాసరూప ప్రశ్నలు

1. **मध्यमव्यायोग रूपकस्य कथासारं लिखत।**
3. **केशवदासस्य कुटुम्बः कथं भीमेन अभिरक्षितः ।**

**స.** **కథావతారిక** : పాండవులు అరణ్యవాసం చేస్తున్న కాలంలో ఈ కథ జరిగినట్లు కవి వర్ణించారు.

**కథాసారం** : కేశవదాసు అనే బ్రాహ్మణుడు భార్య, ముగ్గురు కుమారులతో కలసి తన మేనమామ అయిన యజ్ఞబంధు యొక్క కుమారుని ఉపనయనానికి వెళ్తూ అడవిలో ప్రయాణిస్తున్నాడు. ఆ సమయంలోనే భీమసేనుని భార్య రాక్షసి అయిన హిడింబ ఉపవాసం చేసి ఉపవాస విరమణకు ఒక మానవున్ని ఆహారంగా తీసుకు రమ్మని కుమారుడ్ని ఆజ్ఞాపించింది.

హిడింబ కుమారుడు ఘటోత్కచుడు మానవుల కొరకు వెతకుతూ వచ్చి కేశవదాసు కుటుంబాన్ని చూశాడు. ఘటోత్కచున్ని చూసి కుటుంబంలోని అందరూ భయపడ్డారు. మృత్యుదేవత స్వయంగా పురుషుని రూపంలో వచ్చిందని భావించారు.

**''मृगेन्द्रोमृगसङ्घानां मृत्युः पुरुषविग्रहः''**

ఘటోత్కచుడు భయపడవలసిన పని లేదని వారిని హెచ్చరిస్తూనే వెంబడించాడు. అతని మాట తీరు చూసి బ్రాహ్మణుడు కూడా ఇతడు ఎవరో స్పష్టంగానే మాట్లాడుతున్నాడని విషయం తెలుసుకుందామని భార్యతో అన్నాడు. అంతేకాక జలక్లిన్నుడు (जलक्लिन्नः) అనే ముని ఈ అడవిలో రాక్షసులు ఉన్నారని చెప్పాడు కదా. కనుక ఇతను రాక్షసుడై ఉండవచ్చని అన్నాడు. మనం గట్టిగా అరిస్తే ఎవరైనా రావచ్చునని బ్రాహ్మణుని భార్య అన్నది.

పాండవులు ఈ అడవిలోనే ఉన్నారని విన్నాను. కనుక వారు రక్షించడానికి రావచ్చునని బ్రాహ్మణుడు అన్నాడు. బ్రాహ్మణుని పెద్ద కుమారుడు అప్పుడు ఇలా అన్నాడు. ధౌమ్యుడు శతకుంభమనే యజ్ఞం చేస్తున్నాడు. పాండవులు అక్కడికి వెళ్ళారని విన్నాను అని చెప్తూనే ఆశ్రమ రక్షణ కోసం భీముడు ఒక్కడే ఇక్కడ ఉన్నాడని కూడా తెలిసిందని చెప్పాడు.

**यद्येवं सन्निहिताः सर्वे एव पाण्डवाः ।**

**కేశవదాసుకు ఘటోత్కచుడు విమోచన మార్గం చెప్పుట** : భీముడు కూడా దగ్గరిలో లేదని తెలిసింది అని పెద్ద కుమారుడు చెబితే అందరూ ఆశ వదులుకున్నారు. కానీ ఎలాగైనా మేము విడుదలయ్యే ఉపాయం ఉన్నదా అని ఘటోత్కచుడినే అడిగాడు. అప్పుడు ఘటోత్కచుడు "మా అమ్మగారి ఉపవాసం విరమణకు ఒక మనిషిని తెమ్మని ఆజ్ఞాపించారు. కనుక నాకు ఒక్కడు చాలు నీ కొడుకుల్లో ఒక్కరిని ఇచ్చి భార్య, ఇద్దరు పిల్లలు క్షేమంగా వెళ్ళవచ్చు" అని అన్నాడు.

**''बलाबलं परिज्ञाय पुत्रमेकं विसर्जय''**

బ్రాహ్మణుడు తానే ఆహారంగా వస్తానని అన్నాడు. కానీ పతివ్రత అయిన ఆయన భార్య నేనే ఆహారంగా వెళ్తాను అని అన్నది. స్త్రీని తీసుకువెళ్ళడం మా అమ్మకు ఇష్టం లేదు. కనుక ఘటోత్కచుడు ఆమెను వద్దన్నాడు. పెద్దకొడుకు

Likewise, on noticing the Ghatotkacha's calling manner, the brahmin who was in trouble felt that Ghatotkacha was sagacious. ''स्वविमर्शा हि अस्य वाणी'' When Bhima too realised that Ghatotkacha was his son, he felt that Ghatotkacha was fit to be his son.

सदृशो ह्यस्य गर्वः ।
रूपं सत्त्वं बलं चैव पितृभिः सदृशं बहु।
प्रजासु वीतकारुण्यं मनश्चैवास्य कीदृशम् ॥
(प्रकाशम्) भोः पुरुष! मुच्यताम्।

Ghatotkacha is a perfect match with his father in appearance, strength and stable word. By this description, the very qualities of Bhima can be attributed to Ghatotkacha too. Many verses in which Ghatotkacha's appearance is described are there in Madhyama Vyayoga.

सिंहास्यः सिंहदंष्ट्र मधुनिभनयनः स्निग्धगम्भीरकण्ठो
बभ्रु भ्रूः श्येननासो द्विरदपतिहनुदीप्त विश्लिष्टकेशः।
व्यूढोरा वज्रमध्यो गजवृषभगतिर्लम्बपीनांसबाहुः
सुव्यक्तं राक्षसीजो विपुलबलयुतो लोकवीरस्य पुत्रः
सजलजदागात्रः पद्मपत्रायताक्षो -
मृगपतिगतिलीलो राक्षसः प्रोग्रदंष्ट्रः ।
जगति विगतशङ्कस्त्वद्विधानां समक्षं
ससुतपरिजनं भो ! हन्तुकामोऽभ्युपैति।

Having fangs like elephant's tusks, nose like a line formed when ploughed, arms like elephant's trunk, colour like black cloud, he shines like fire and he is like the Lord Shiva of the time when he killed the demon Tripura. Ghatotkacha's appearance and valour are evident by this description. The brahmin's son describes him as the Death who assumed the demon's form.

''मृत्युः पुरुषविग्रहः''

Though Ghatotkacha was unaware of his father, he had deep reverence for his father as he had heard of his strength and valour from his mother. Getting ready for fight with Ghatotkacha, Bhima said, "My right arm is a natural weapon to me." Then Ghatotkacha responded as follows. "This word 'right arm is weapon' is appropriate to my father alone." It conveys Ghatotkacha's reverence for his father.

In this way, the poet described the character and nature of Bhima and Ghatotkacha excellently and contextually.

కవి పరిచయం : నాటక సాహిత్యాన్ని చదివితేనే సాహిత్యం పూర్తిగా చదివినట్లు అవుతుంది. కావ్యాలలో నాటకం రమ్యమైనదని పెద్దల అభిప్రాయం. రంగస్థలం మీద అభినయించే కావ్యాన్ని దృశ్యకావ్యం అంటారు. [illegible] శ్రవ్యకావ్యం

The Pandavas are fond of war. They protect those who take rafuge in them. They have affection towards those who take refuge. They are partial towards the destitute. They like to take risks. They are capable of punishing those who commit troubling deeds like Ghatotkacha. The nature of all the Pandavas was narrated as above. From this it is evident that Bhima too has all these qualities.

Later the elder son of Kesavadas said, " I came to know that only Bhima is staying at the hermitage and the rest of the Pandavas are not here. " Then the brahmin said, " If that one person stays, it means all the Pandavas stay there." The brahmin's words indicate the eminent of Bhima.

''यद्येवं सन्निहिताः पाण्डवाः''

When Ghatotkacha called the middle son of the brahmin who had gone to quench his thirst, Bhima, the middle one of the Pandavas felt as if he was called and went there. Then Ghatotkacha described Bhima's appearance as follows.

सिंहाकृतिः कनकतालसमानबाहु -
र्मध्येतनुर्गरुडपक्षविलिप्तपक्षः
विष्णु र्भवेद्विकसिताम्बुजपत्रनेत्रो -
नेत्रे ममाहरति बन्धुरिवागतोऽयम् ॥

Bhima is like a lion in appearance, has arms like golden strings. He has robust shoulders like Garuda and wide eyes like the Lord Vishnu. He seems as if he is my close relative. Later Bhima introduced himself to Ghatotkacha in the following manner.

मध्यमः पञ्चभूतानां पार्थिवानां च मध्यमः।
भवे च मध्यमो लोके सर्वकार्येषु मध्यमः॥

I am the middle one of the five elements, i.e.the son of Vayu. The middle one of even the race of kings. I live on the Earth, the middle one of the worlds. I perform all the deeds like a mediator without partiality.

Thus the poet described the characteristics of Bhima. The poet also described the characteristics and nature of Ghatotkacha in an appropriate way.

**Description of Ghatotkacha's Character :** When Kesavadas asked Ghatotkacha if there was any chance to spare them, Ghatotkacha said to him, " I don't need all of you. If any one of you come with me as my mother's meal, that will do."

अस्ति में तत्रभवती जननी। तयाऽहमाज्ञप्तः - पुत्र !
ममोपवासनिसर्गार्थमस्मिन् वनदेशे कश्चिन्मानुषः
परिगृानेतव्य इति। ततो मयाऽसादितो भवान् -
पत्न्या चारित्रशालिन्या द्विपुत्रो मोक्षमिच्छसि।

मध्यमोऽहमवध्यानामुत्सिक्तानां च मध्यमः।
मध्यमोऽहं क्षितौ भद्र ! भ्रातॄणामपि मध्यमः ॥
मध्यमः पञ्चभूतानां पार्थिवानां च मध्यमः।
भवे च मध्यमो लोके सर्वकार्येषु मध्यमः॥

The brahmin took refuge in Bhima. Bhima said that he would surely protect him. He also said that he would go with the brahmin. Bhimasena wanted Ghatotkacha to take him with him if he had power. Later Ghatotkacha went to his mother accompanied by Bhima. He realised that Bhima was none other than his father and requested Bhima to forgive him. Persuaded by Bhima, Ghatotkacha left the family of the brahmin safely.

**2. Write the characters of Bhima and Ghatotkacha.**

**A. Introduction of the Poet :** Only if one reads drama literature, it is said that the literature is read completely. Elders are of the opinion that drama is the best in epics. The epic played on the stage is called Drama (Drusyakavya). This drama is of ten types. There are many kinds of dramas in Sanskrit literature. Of those, 'Madhyama Vyayoga' has a significant place.

Bhasa who wrote Madhyama Vyayoga was the first poet not only in Sanskrit literature but also in drama literature. Historians authentically said that Bhasa was more ancient than Kalidasa, Panini who wrote Ashtadhyayi and Bharata who wrote Natya Sastra. Scholars of the opinion that he belonged to the first century ago.

Bhasa wrote 13 Sanskrit dramas. ''मध्यमव्यायोगः' is one of them.

**Description of Bhima's Character :** In a great epic, it is a natural trait for the poets to describe the hero's physique as well as qualities when they describe his character. The Pandavas' natural trait was to peotect those who sought refuge in them. The poet describes that Bhima too had that quality.

When the brahmin was walking through the forest, he recollected the sage named Jalaklinna's words about the path at the outset. The brahmin said to his wife, "The sage told me that there are many demons on the way. So I am afraid." She too got frightened. The brahmin wanted his wife to be brave. He told her that the sages were free from fear as it was the place closer to the Pandavas' hermitage. Then he described the Pandavas' nature as follows.

युद्धप्रियाश्च शरणागतवत्सलाश्च
दीनेषु पक्षपतिताः कृतसाहसाश्च ।
एवंविधप्रतिभयाकृत चेष्टितानां
दण्डं यथार्हमिह धारयितुं समर्थाः॥

are demons in this forest so this person must be a demon." The brahmin's wife replied that anybody could come to their help if they shouted loudly.

The brahmin told her that he had heard that the Pandavas were staying in that very forest and he hoped that they would come to rescuce them. The brahmin's elder son said to them. "Dhaumya is performing a sacrifice named Satakumbha. I heard that the Pandavas had gone there. I came to know that Bhima only stayed here for the protection of hermitage."

**यद्येवं सन्निहिताः सर्वे एव पाण्डवाः ।**

When the elder son told them that he had come to know that Bhima too was not in the proximity, they all lost hopes. The brahmin asked Ghatotkacha if there was any wayout to escape from that situation. Then Ghatotkacha said to the brahmin, "At the end of my mother's fast, she bade me to get her a human as a meal. So I need only one person. Give me one of your sons and you can go safely with your wife and two sons."

**"बलाबलं परिज्ञाय पुत्रमेकं विसर्जयः"**

The brahmin said that he would himself go as a meal. But his chaste wife said that she would herself go as a meal. Ghatotkacha refused to take a woman with him as his mother wouldn't like it. Each of the three sons told their father that they would go with Ghatotkacha in order to save the rest of the family. But the father didn't agree to send the elder son. The mother wasn't willing to send the younger son. But the parents gave their assent to send their son. Before facing his fate, the middle son asked the demon's permission to first quench his thirst at a nearby lake.

It was a bit late for him to return. The second son's name is Madhyama. Ghatotkacha started calling Madhyama by his name.

**भो मध्यम ! शीघ्रमागच्छ।**

At that time Bhima, the middle one of the Pandavas, was doing physical exercises. On listening to that call, Bhima felt that it was he that was being called and arrived there, He said, "Lo! Here came the middle one." Ghatotkacha said, "Are you too the middle one?" Bhima said, "There is no other middle one."

1. I am the middle one impossible to be killed by others. (Baka, Hidimba, Bhima, Keechaka and Duryodhana.. these five persons are not killed by others. The person who kills one of the four others will also kill the rest of them. Thus says a popular story.)
2. Besides, I am the middle one among Brahmins, Kshatriyas and Vaisyas.
3. Among the five elements, Earth, Water, Air, Fire and Space, I am the middle one.
4. Among the Pandavas (among the sons of Kunti) - Dharmaraja, Bhima and Arjuna), I am the middle one. So there is no other middle one except me."

प्रथमविभागः

UNIT - I

SEMESTER - III

# प्राचीनरूपक विभागः

## 1. मध्यमव्यायोगः – महाकवि भासः

**Introduction of the Poet :** Only if one reads drama literature, it is said that the literature is read completely. Elders are of the opinion that drama is the best in epics. The epic played on the stage is called Drama (Drusyakavya). This drama is of ten types. There are many kinds of dramas in Sanskrit literature. Of those, 'Madhyama Vyayoga' has a significant place.

Bhasa who wrote Madhyama Vyayoga was the first poet not only in Sanskrit literature but also in drama literature. Historians authentically said that Bhasa was more ancient than Kalidasa, Panini who wrote Ashtadhyayi and Bharata who wrote Natya Sastra. Opinion of the scholars that he belonged to the first century ago.

Bhasa wrote 13 Sanskrit dramas. ''मध्यमव्यायोगः'' is one of them.

### निबन्धप्रश्नाः ESSAY QUESTIONS

1. **Write the summary of the story Madhyama Vyayoga'.**
3. **How did Bhima save the family of Kesavadas ?**

स. **Introduction of the story :** The poet describes that this story is said to be taken place at the time when the Pandavas were in exile.

**Summary :** A brahmin named Kesavadas was travelling through a forest along with his wife and three sons to take part in Upanayana (the thread ceremony) of the son of his maternal uncle Yagnabandhu. At the very time the demoness Hidimba, the wife of the socond Pandava prince Bhimasena was on a fast. After the end of fast, Hidimba wanted her son Ghatotkacha to find some human for her to have as a meal.

While searching for humans Ghatotkacha saw the family of Kesavadas. On seeing Ghatotkacha, all the members of Kesavadas family were frightened. They thought that the God of Death had come himself in the form of a male.

**''मृगेन्द्रामृगसङ्घानां मृत्युः पुरुषविग्रहः''**

Ghatotkacha pursued them even while cautioning them that they had nothing to fear from him. On noticing his manner of speech the brahmin felt that he was speaking distinctly and suggested to his wife, "The sage named Jalaklinna informed us that there

MEGA BRILLIANT SERIES

2023
SEMESTER-III

ANDHRA PRADESH
AP

DEGREE - SECOND YEAR

B.A., B.Com. & B.Sc.

# SANSKRIT

BOTH MEDIA

2022 SEM-III Exam Papers of
ALL UNIVERSITIES Included

## STUDY MATERIAL

Semester-wise Syllabus Under CBCS w.e.f 2020-21
Common for ALL UNIVERSITIES in A.P